अंक - 23

ऋतम्भरा

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ०प्र०)
(सम्बद्ध - चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
(NAAC ACCREDITED COLLEGE WITH CGPA 2.71)

www.dpbspgcollege.in
mails_principaldpbs@rediffmail.com
05734-275450

सत्र
2019-20

डी.पी.बी.एस.(पी.जी.) कालेज अनूपशहर
स्थापित वर्ष 1965
सम्बद्ध - चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ
गंगा अवतरण-नाटक

॥ वन्दना ॥

हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल-मति दे॥
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे॥
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
लव-कुश ध्रुव प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर घर भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥

सम्पादक मण्डल

डॉ. यू. के. झा
(प्राचार्य/संरक्षक)

डॉ. वी. के. गोयल
(प्रधान सम्पादक)

डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
(सम्पादक)

श्री सचिन अग्रवाल
(सम्पादक)

डॉ. भुवनेश कुमार
(सम्पादक)

डॉ. एस. के. सिंह
(सम्पादक)

मानसी गर्ग
(बी.एड. द्वितीय वर्ष)

रिचा राय
(बी.ए. तृतीय वर्ष)

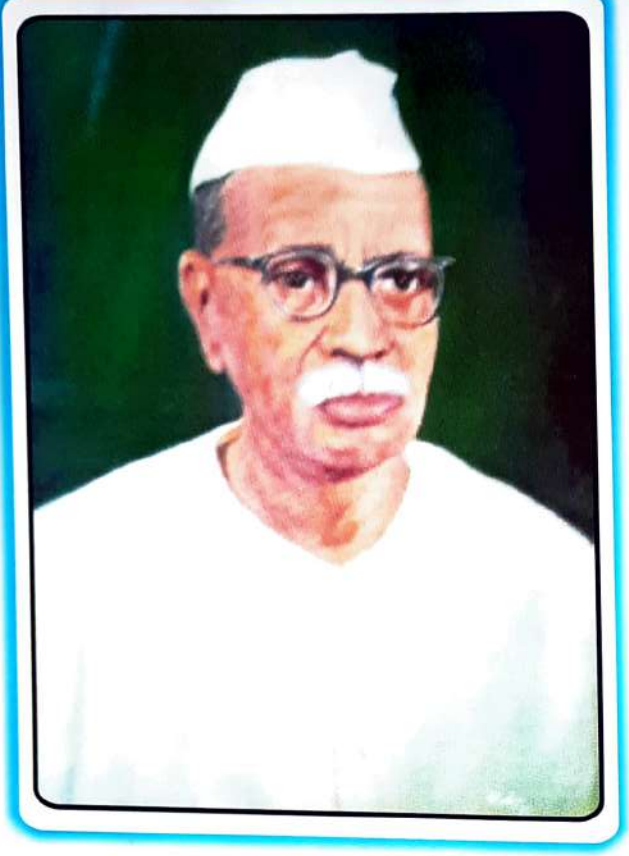

श्रद्धेय स्व० श्री दुर्गा प्रसाद जी

श्रद्धेय स्व० श्री बलजीत सिंह जी

श्रद्धेय स्व० भगवती प्रसाद गर्ग

हे कर्मनिष्ठ, हे धर्मनिष्ठ,
तुम शासन प्रिय हे सेनानी,
तुम सदा कर्म में लीन रहे,
सबके हित के तुम कल्याणी।
तुम मरकर भी हो अमर सदा,
जन-मन के हे तुम महाप्राण,
हम हैं श्रद्धांजलि अर्पित करते,
शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम।

A source of Eternal Inspiration
Shri Jaiprakash Gaur Ji,
Founder Chairman, Jaypee Group
Managing Trustee, Jaiprakash Sewa Sansthan
President, Anglo Vedic Educational Association

On the path of progress, education is the medium that can allow our country to not only conserve its culture but also ignites the minds of our young countrymen and and empowering them to be at par with the citizens of other developed countries. Science & Technology in the 21st Century will unleash a revaluation of progress that is beyond our imagination today and which will transcend the limits of planet Earth to enable human beings to begin their tryst with the infinite universe.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of modern India.

These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge, utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards so that our teachers and students can stride forward and see the transformation of their country into an advanced nation within their lifetime.

Jai Prakash Gaur

Jaiprakash Gaur

महाविद्यालय प्रबन्ध कार्यकारिणी

श्री अजय गर्ग
(अध्यक्ष)

डॉ. सुधीर कुमार
(उपाध्यक्ष)

डॉ. के.पी. सिंह
(सचिव)

श्री गिरीश चन्द्रा
(संयुक्त सचिव)

श्री के.पी. सिंह
(कोषाध्यक्ष)

श्री सुनील गुप्ता
(आन्तरिक लेखा परीक्षक)

श्री एस.पी.एस. तौमर
(सदस्य)

कमा. एस.जे. सिंह
(सदस्य)

कु0 मनिका गौड़
(सदस्य)

डॉ. यू.के. झा
प्राचार्य (पदेन)

डॉ. आर.के. अग्रवाल
(प्राध्यापक प्रतिनिधि)

श्री पंकज शर्मा
(तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि)

Sunil Sharma
Executive Vice Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

MESSAGE

It gives me great pleasure to know that Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College, Anoopshahr, is going to publish the 23rd edition of its annual magazine "Ritambhara" shortly. I am sure, yet another impressive edition of the annual magazine is on the anvil, giving your students an opportunity to showcase their multi-faceted writing and extracurricular skills.

Considering response from the talented students, it may not be an easy task for the editorial team to shortlist from so many creative expressions of the students, be it poetry, drawing, story/feature writing etc. and include all such contributions in the magazine. Nevertheless such a situation brings out a healthy competition amongst them to improve and excel so as to make it to the next edition of the magazine.

D.P.B.S. (P.G.) College has been doing invaluable social service since its inception bringing higher education to the doorsteps of the villages which were deprived of such an opportunity in the past. Even as other avenues of higher education are slowly opening up, however, the place of pride which your institution occupies in the Society will be cemented further as long as the College strives to incorporate necessary infrastructural improvements including modern teaching methods and classroom facilities, in tune with the times. I am happy to observe that your college is taking necessary steps in this direction.

I use this opportunity to appreciate the hard work which has gone into making this in-house Magazine and wish the College, its students & faculty all the very best for the future.

With Best Wishes.

S. K. Sharma

SUNIL KUMAR SHARMA

JAYPEE GROUP

Regd. & Corporate Office :
Sector 128, NOIDA - 201304, Uttar Pradesh (India)
Ph: +91 120 4609000, 2470800 Direct : +91 120 4609152
Fax : +91 120 26145389 E-mail : sunil.sharma@jalindia.co.in

प्रो० धीरेन्द्र पाल सिंह
अध्यक्ष
Prof. D.P. Singh
Chairman

सत्यमेव जयते

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
Ministry of Human Resource Development, Govt. Of India
बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002
Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002
दूरभाष Phone: कार्यालय Off:
0011&23234019]23236350
फैक्स Fax:011-23239659,
e-mail: cm.ugc@nic.in | Www.ugc.ac.in

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दुर्गाप्राद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर), उत्तर प्रदेश सत्र 2019-20 में अपनी वार्षिक पत्रिका ***"ऋतम्भरा"*** का तेईसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका के माध्यम से कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता हैं। साथ ही महाविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों और उपलब्धियों का भी इस पत्रिका में समावेश होता है। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठायेगें तथा अपने विचारों से समाज व राष्ट्र को नई दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभायेगें।

इस अवसर पर मैं कॉलेज के प्राचार्य, संकाय एवं कर्मचारियों, सभी छात्र-छात्राओं तथा सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और वार्षिक पत्रिका "ऋतम्भरा" के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धीरेन्द्र पाल सिंह

Tel. (O) 91-11-23793528 (Direct), 91-11-23015321 Extn. 4442, Fax : 91-11-23010252
E-mail : message-rb@rb.nic.in

प्रो० डॉ. राजीव कुमार गुप्ता
(एम.कॉम., एल-एल.बी.,पी-एच.डी., एम.बी.ए., एम.जे.)
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
मेरठ

दूरभाष:
0121-2400444, 09868106027
Office: Regional Higher Education Officer,
E-Mail: rheomeerut@yahoo.com | www.rheomrt.org

पत्र संख्या 33/दिनांक 16.12.2019

शुभकामना संदेश

महोदय,

यह हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज अनूपशहर, बुलन्दशहर अपनी पत्रिका ***"ऋतम्भरा"*** का अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका से महाविद्यालय के प्राध्यापक, विचारक और विद्यार्थियों को अपनी ज्ञान-पत्रिका की अभिव्यक्ति प्रकाशित करने का सुअवसर प्राप्त होगा तथा इसे नया आयाम मिलेगा। ***'ऋतम्भरा"***के सफल प्रकाशन हेतु मैं, प्राचार्य, प्राध्यापकगणों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

राजीव कुमार गुप्ता

डॉ. यू.के झा (प्राचार्य)
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज अनूपशहर, बुलन्दशहर

Tel. (O) 91-11-23793528 (Direct), 91-11-23015321 Extn. 4442, Fax : 91-11-23010252
E-mail : message-rb@rb.nic.in

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रोफेसर नरेन्द्र कुमार तनेजा
पी-एच०डी० (अर्थशास्त्र)
कुलपति

प्रत्राक : एस.वी.सी./20/1513
दिनांक : 10.01.2020

संदेश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर द्वारा महाविद्यालय के सत्र 2019-20 की वार्षिक पत्रिका "ऋतम्भरा" का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिये आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथा उनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञानोपयोगी लेखों को प्रकाशित करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन करने हेतु शुभकामनायें।

डॉ० यू०के० झा
प्राचार्य
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अनूपशहर -202390 (बु0शहर)

(प्रो० एन०के० तनेजा)

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ - 250 004
कार्यालय : +91-0121-2760554, 2760551, फैक्स : 2762838
शिविर कार्यालय : +91-0121-2600066, फैक्स : 2760577
वैबसाइट : ccsuniversity.ac.in
ई-मेल : vc@ccsuniversity.ac.in

प्रोफेसर (डॉ.) राजीव सक्सेना
कुलपति
जेपी विश्वविद्यालय, अनूपशहर
(उत्तर प्रदेश शासन के अधिनियम, 8 वर्ष 2014 के तहत स्थापित
अलीगढ़ रोड, अनूपशहर, जिला बुलन्दशहर (उप्र) - 203390
www.jaypeeu.ac.in

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है की दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका **'ऋतम्भरा'** का तेइसवां अंक (अकादमिक सत्र 2019-20) प्रकाशित करने जा रहा है। मैं आनंदित महसूस कर रहा हूँ।

मानव अपने सम्पूर्ण जीवन काल में, अपनी वर्तमान अवस्थानुसार, नैसर्गिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सदा प्रयासरत रहता है। साथ ही साथ, विद्यार्थी जीवन प्रत्येक मानव जीवन का श्रेष्ठतम काल होता है। अत: सर्वाधिक सर्वश्रेष्ठ उद्देश्यों को श्रेष्ठतम श्रेणी में पाने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को पूरी ईमानदारी, कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन से कर्म करना चाहिए।

वर्तमान परिस्थितियों में भारत एवं भारतीयता को समझने एवं भारत को विश्वगुरू के रूप में स्थापित करने में भी हम सभी को अथक प्रयास करना चाहिए। आशा करता हूँ की पत्रिका का यह अंक महाविद्यालय के विद्यार्थियों को एक सार्थक मंच प्रदान करेगी।

पत्रिका-प्रकाशन के पावन अवसर पर प्राचार्य, संपादक मंडल, विभिन्न संकायों के प्रध्यापकगणों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ, साथ ही साथ वाषिर्क पत्रिका ऋतम्भरा के सफलतापूर्ण प्रकाशन की कामना करता हूँ।

जयहिन्द!

डॉ० राजीव सक्सेना

Durga Prasad Baljeett Singh. (P.G.) COLLEGE,
ANOOPSHAHR-203390
(Affiliated to Ch. Charan Singh University, MEERUT)
Website : www.dpbscollegeanoopshahr.org, **E-mail** : mails_principaldpbs@rediffmail.com
Ph. : 05734-275450 (O), 05732-275450 (Fax)

Date : 14.01.2020

अजय गर्ग
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका **"ऋतम्भरा"** का का तेईसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक छात्र-छात्राओं एवं विद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों की सृजनात्मक क्षमता के विकास का साक्षी तथा जीवनोपयोगी विविध रचनाओं से युक्त होगा। यह पत्रिका हमेशा की तरह छात्र-छात्राओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकमानाएं व्यक्त करता हूँ।

(अजय ...

Durga Prasad Baljeett Singh. (P.G.) COLLEGE,

ANOOPSHAHR-203390

(Affiliated to Ch. Charan Singh University, MEERUT)

Website : www.dpbscollegeanoopshahr.org, **E-mail** : mails_principalbpbs@rediffmail.com

Ph.: 05734-275450 (0), 05732-275450 (Fax)

डॉ० के०पी० सिंह
सचिव, प्रबन्ध समिति

Date : 11.01.2020

संदेश

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"ऋतम्भरा"** के तेईसवें अंक के प्रकाशन पर मुझे प्रसन्नता है। मुझे विश्वास है कि इस अंक के माध्यम से छात्रों, कर्मचारियों एवं शिक्षकों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्राप्त होगा।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका ज्ञानवर्धक, रोचक एवं महाविद्यालय की उपलब्धियें का एक पूर्ण संकलन होगी।

छात्रों के व्यक्तित्व का समग्र विकास हमारे संकाय का केंद्र होना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से छात्रों को एक सफल, सहनशील, संवेदनशील एवं अनुशासित नागरिक बनाने में महाविद्यालय पूरा योगदान दे रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में महाविद्यालय हर उन बुलन्दियों को प्राप्त करेगा जो अपने में एक मिशाल होगी।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनायें देता हूँ।

(डॉ० के०पी० सिंह)
सचिव
प्रबन्ध समिति

प्राचार्य का उद्बोधन ...

हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का यह कथन कि ''इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं'' हमारे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है। अपने शैक्षिक जीवन में सफलता की आकांक्षा हर विद्यार्थी रखता है, लेकिन इसके लिए जिस कठिन परिश्रम, क्रमबद्ध योजना एवं सतत प्रयत्नशीलता की आवश्यकता है, इनमें अक्सर कमी रह जाती है। यहीं कारण है कि हमारे आज के युवा अक्सर निराशा के भँवरजाल मे उलझकर अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं और कई बार आत्महत्या करने जैसे भयानक कदम भी उठा लेते हैं। ऐसे सभी विद्यार्थियों को मैं इस पत्रिका के माध्यम से यही संदेश देना चाहूँगा कि अपने धैर्य को कायम रखते हुए अपनी क्षमता का सही आँकलन कर ऐसा लक्ष्य निर्धारित करें जो यथार्थवादी हो और फिर उस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा मे सतत प्रयत्नशील रहें। सफलता निश्चित रूप से आपके कदम चूमेगी।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ऋतम्भरा के 23वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों, प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। साथ ही उन सभी महानुभावों का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपना शुभ संदेश प्रेषित कर हमारे विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया है।

(डॉ. यू.के. झा)
प्राचार्य

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ऋतंभरा के 23 वें अंक को आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सदैव की भांति इस वर्ष भी यह पत्रिका छात्र छात्राओं के साथ साथ अन्य सभी व्यक्तियों के लिए अत्यंत उपयोगी ज्ञानवर्धक तथा कौशल वर्धक साबित होगी। ऋतंभरा के इस अंक में विद्यार्थियों ने अपने सृजन कौशल के माध्यम से अपने विचारों को अत्यंत रचनात्मक एवं उत्कृष्ट रूप से अपने लेखों, कविताओं एवं संकलनों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिससे पत्रिका अपने उद्देश्यों को निश्चित ही पूर्ण करने में सफल होगी।

वर्तमान समय में नागरिकता संशोधन बिल तथा तथा अन्य विभिन्न कारणों से देश के नागरिक खासकर कुछ युवा दिग्भ्रमित हैं। युवाओं को राष्ट्र की आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों को दूरदर्शी सोच के साथ समझना होगा, विचार करना होगा और उन पर सहमत होना होगा। राष्ट्र के सभी नागरिकों को वर्तमान के साथ-साथ सदैव भूतकाल से सबक लेते हुए भविष्य को भी ध्यान में रखना चाहिए। ऐसे में इस प्रकार की पत्रिकाएं निश्चित ही युवाओं को एक सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक होती हैं ।

मैं पत्रिका के 23 वें अंक के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु के लिए महाविद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों पदाधिकारियों प्राचार्य डॉ यू. के. झा, संपादक मंडल के सभी संपादकों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं का हार्दिक आभारी हूँ। विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग से ही महाविद्यालय की पत्रिका ऋतंभरा का यह अंक प्रकाशित हो पाया है।

धन्यवाद।

VK Goel

डॉ. विनोद कुमार गोयल

(प्रधान सम्पादक)

प्राध्यापक मण्डल (वित्त-पोषित)

बाँये से दाँये डॉ. सीमान्त कुमार दुबे, डॉ. (श्रीमती चन्द्रावती), डॉ. पी.के. त्यागी (मुख्यानुशासक), डॉ. यू.के. झा (प्राचार्य), डॉ. वी.के. गोयल, श्री यजवेन्द्र कुमार, श्री लक्ष्मण सिंह, डॉ. आर.के. अग्रवाल।

प्राध्यापक मण्डल (स्व-वित्तपोषित)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : डॉ. तरूण बाबू, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, श्री मयंक शर्मा, श्री पंकज कुमार गुप्ता, डॉ. यू.के. झा (प्राचार्य) श्री सचिन अग्रवाल, डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़, डॉ. सुनीता गौड़, डॉ. सुधा उपाध्याय

(खड़े हुए - प्रथम पंक्ति) : डॉ. विशाल शर्मा, डॉ, राजीव गोयल, गुरूदत्त शर्मा, डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह, कु. कुशमाण्डे आर्य, डॉ. राधा उपाध्याय, श्री सत्य प्रकाश, डॉ. घनेन्द्र बंसल, श्री देव स्वरूप गौतम, श्री ऋषभ वार्ष्णेय

(खड़े हुए - द्वितीय पंक्ति) : श्री सत्यपाल सिंह, श्री योगेन्द्र कुमार, श्री गौरव जैन, श्री चन्द प्रकाश

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण

(वित्त-पोषित)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री सुनील कुमार, श्री के.के. श्रीवास्तव, डॉ. यू.के. झा (प्राचार्य), श्री सुनील कुमार गर्ग (कार्यालय अधीक्षक), श्री लक्ष्मण सिंह, श्री पंकज शर्मा

बाँये से दाँये (खड़े हुए) : श्री हम्बर सिंह, श्री राम अवतार, श्री विजय पाल सिंह, श्री सुनील कुमार निर्मल, श्री नारायण दत्त मिश्रा, श्री महेश चन्द, श्री अमरनाथ राय, श्री कपूर चन्द, श्री राजेन्द्र सिंह

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण

(स्व-वित्तपोषित)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री जितेन्द्र कुमार, श्री विजय कुमार, श्री दीपक शर्मा, डॉ. यू.के. झा (प्राचार्य), श्री सुरेश रावत, श्री चन्द्रपाल सिंह

(खड़े हुए - प्रथम पंक्ति) : श्री योगेश कुमार, श्री सुन्दर पाल, श्री मान सिंह, श्री साहब सिंह, श्री विजय कुमार, श्री राजीव, श्री विक्रम सिंह, श्री जितेन्द्र कुमार

(खड़े हुए - द्वितीय पंक्ति) : श्री राम बाबू, श्री सुबोध कुमार, श्री जगदीश कुमार, श्री सोनू कुमार, श्री नेत्रपाल सिंह, श्री त्रिलोक चन्द, श्री राजू, श्री नितिन कुमार

सत्र 2018–19 के हमारे चमकते सितारे

अश्वनी कुमार
एम.एस-सी. (भौतिकी)
68.15%

श्वेता पाठक
एम० एस-सी० (रसायन)
75.70%

ललिता रानी
एम० ए० (संस्कृत)
75.60%

जितेन्द्र शर्मा
बी०सी०ए०
75.02%

निशा शर्मा
बी०एड०
77.85%

शैफाली मित्तल
बी० कॉम०
64.85%

दीपक कुमार
बी०एस-सी०
78.35%

दर्शना
बी० ए०
67.90%

41 UP Bn. NCC BULANDSHAHAR

DURGA P

NATIONAL SERVICE SCHEME

ANAND BHAWAN

DURGA PRASAD
SINGH (P.G.)
HAHR

GH (P.G.) COLLEGE

D.P.B.S. (P.G.) COLLEGE ANOOPSHAHAR
Bn. NCC BULAND SHAHAR

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर
DPBS (PG)

उत्तर प्रदेश दिवस महोत्सव

उत्तर प्रदेश दिवस महोत्सव
25 जनवरी 2020

DPBS (PG) COLLEGE
ANOOPSHAHR
HAPPY TEACHERS' DAY
2019

D.P.B.S. (P.G.) COLLEGE ANOOPSHAHAR

DURGA PRASAD

वर्ष - 2019

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर

जिला-बुलन्दशहर

प्रगति आख्या (2019-20)

डॉ० उमेश कुमार झा, प्राचार्य

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी स्थापना के 54 वर्ष पूर्ण कर चुका है। सन् 1965 से 2019 तक की इस अवधि में महाविद्यालय ने उत्तरोतर संरचनात्मक एवं गुणात्मक प्रगति की है। महाविद्यालय के अनेक छात्र एवं छात्राओं ने विश्वविद्यालय स्तर पर शैक्षिणक तथा विभिन्न पाठ्यसहगामी कार्यक्रमों में महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। वर्तमान समय में चार अनुदानित एवं चार स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं, जिनमें कुल 1561 छात्र–छात्रायें अध्ययनरत हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों एवं अनुशासन की दृष्टि से यह महाविद्यालय चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

01– सत्र 2018–2019 का परीक्षाफल विगत वर्ष की भांति उत्तम रहा है। महाविद्यालय में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार परीक्षाफल निम्न प्रकार है : –

पाठ्यक्रम	परीक्षाफल (उत्तीर्ण प्रतिशत)
बी0ए0	95.00%
बी0एस–सी0	100.00%
बी0कॉम0	84.68%
बी0सी0ए0	91.07%
एम0ए0 (संस्कृत)	87.50%
एम0एस–सी0 (भौतिकी)	40.00%
एम0एस–सी0 (रसायन विज्ञान)	72.72%
बी0एड0	100.00%

02– प्रबन्ध समिति द्वारा महाविद्यालय में सभी कक्षायें सुचारू रूप से चलाने हेतु विभिन्न विषयों में शासन स्तर से शिक्षकों के रिक्त पदों के सापेक्ष अंशकालिक शिक्षकों (ट्यूटर) की व्यवस्था की गयी है।

03– शारीरिक शिक्षा विभाग में कार्यरत प्राध्यापक डॉ0 सीमान्त कुमार दुबे ने एमिटी विश्वविद्यालय, नोयडा से शारीरिक शिक्षा विशय में गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य पूर्ण कर पी0एच–डी0 की उपाधि प्राप्त की है।

04– महाविद्यालय में रेडियो फ्रिकवेंसी लिंक द्वारा 4G की गति से सभी विभागों, पुस्तकालयों तथा कार्यालयों मे इंटरनेट की सुविधा प्रदान की गयी है ।

05– "आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)" के तत्वाधान में शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों की गुणवत्ता संवर्धन का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है ।

06– दिनांक 09–07–2019 को NCC कैडेटस ने पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता उत्पन करने हेतु रैली निकाली तथा प्राचार्य द्वारा विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों पर प्रकाश डालते हुए पर्यावरण सुधार हेतु अनेक सुझाव दिये गये।

07– दिनांक 09–08–2019 को व्यापक स्तर पर पौधा–रोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्राचार्य एवं महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं ने सहभागिता की।

08– महाविद्यालय में राष्ट्रीय पर्व के रूप में 15 अगस्त 2019 को स्वतंत्रता दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया ।

09– दिनांक 29–08–2019 को राष्ट्रीय कृमि मुक्त दिवस एवं राष्ट्रीय खेलदिवस को उत्साह से मनाया गया। फिट इंड़िया

मूवमेन्ट प्रारम्भ" होने के उपलक्ष्य मे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सजीव प्रसारण भी छात्र–छात्राओं को दिखाया गया ।

10– दिनांक 05–09–2019 को शिक्षक दिवस महाविद्यालय में उत्साह पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा सभी शिक्षकों को सम्मानित किया गया ।

11– दिनांक 02–10–2019 को महात्मा गांधी जी की 150 की जंयती एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जंयती को उत्साह पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर पोस्टर प्रतियोगिता व विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

12– दिनांक 11–10–2019 को जनसंख्या समाधान फाउन्डेशन के सौजन्य से जनसंख्या नियंत्रण पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

13– दिनांक 16 एवं 17 / 10 / 2019 को महाविद्यालय में वार्शिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कई महाविद्यालय के छात्र / छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

14– दिनांक 26 / 10 / 2019 को शासन के निर्देशानुसार दीपोत्सव कार्यक्रम मनाया गया ।

15– दिनांक 31 / 10 / 2019 को राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर एकता दौड़ तथा विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

16– दिनांक 05 / 11 / 2019 को पर्यावरण संरक्षण हेतु एक बार में प्रयोग आने वाले प्लास्टिक से बनी सामग्री का प्रयोग न करने तथा इससे होने वाले खतरों के प्रति आम लोगों को जागरूक करने की शपथ दिलायी गयी ।

17– दिनांक 05 / 11 / 2019 को एन0सी0सी0 इकाई द्वारा कैरियर गारडेन्स के सम्बन्ध में एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया । यह व्याख्यान ब्रिगेडियर एस0पी0 सिन्हा द्वारा दिया गया ।

18– दिनांक 15 / 11 / 2019 को सड़क दुर्घटना रोकथाम के सम्बन्ध में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

19– दिनांक 26–11–2019 को महाविद्यालय में संविधान दिवस मनाया गया ।

20– बी0एड0 विभागाध्यक्ष डॉ0 के0सी0 गौड़ ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग), भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के विशेषज्ञ के रूप में शिक्षा शब्दाबली (अंग्रेजी–हिन्दी) के निर्माण में दिनांक 25–11–2019 से 29–11–2019 तक प्रतिभाग किया ।

21– दिनांक 08 / 12 / 2019 को जेपी समूह द्वारा महाविद्यालय परिसर मे राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के खण्ड काव्य रश्मिरथी पर आधारित नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया गया ।

22– दिनांक 10 / 12 / 2019 को राष्ट्रीय मानवधिकार दिवस मनाया गया । इस अवसर छात्र–छात्राओं को मानव अधिकार सम्बन्धी शपथ दिलायी गयी ।

23– दिनांक 11 / 01 / 2020 को संविधान ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

24– दिनांक 22 / 01 / 2020 को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

25– दिनांक 23 / 01 / 2020 को नेताजी सुभाश चन्द्र बोस की जयंती पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

26– दिनांक 26–01–2020 को गणतंन्त्र दिवस धूमधाम से मनाया गया तथा इस अवसर पर छात्र / छात्राओं द्वारा गंगा अवतरण नाटक को प्रस्तुत किया गया ।

27– दिनांक 28 / 01 / 2020 को मुख्यमंत्री गंगा रथ यात्रा का विद्यालय परिवार द्वारा स्वागत किया गया तथा इस अवसर पर गंगा को स्वच्छ बनाने का संकल्प भी लिया गया ।

28– महाविद्यालय की राश्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा दिनांक 15, 17 एवं 20 जनवरी 2020 को एक दिवसीय विशेष शिविर तथा दिनांक 29–01–2020 से दिनांक 04–02–2020 तक सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

29– दिनांक 07 फरवरी 2020 को वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रत्येक कक्षा के मेधावी छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया गया तथा महाविद्यालय की पत्रिका "ऋतम्भरा के तेइसवें अंक" का विमोचन किया गया ।

श्रद्धेय श्री जयप्रकाश जी गौड़ अध्यक्ष, ऐंग्लो वैदिक शिक्षा समिति के नेतृत्व में महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

विषय : संस्कृताध्ययने रूच्युत्पादनार्थं योग्याः उपायाः

डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़
अध्यक्ष (शिक्षा संकाय)

संस्कृतं हि कापि जीवनभाषा। भाषा मनुष्यान् परस्परं बध्नाति। संस्कृतं न केवलं भारतीयभाषाः प्रत्युत, अनेक वैश्विक अपि परस्परं संयोजयति। तादृशं संस्कृतं, साम्प्रतं विद्यालयेषु परम्परागतविद्यालयेषु, महाविद्यालयेषु, विश्रविद्यालयेषु च मातृभाषा माध्यमेन, आंग्लभाषामाध्यमेन हिन्दीभाषामाध्येन वा अध्याप्यते। छात्राश्च संस्कृतस्य व्याकरणमत्यन्तं कठिनमिति, संस्कृतस्य विषयः नीरसः इति, कण्ठस्थीकरणमधिकमत्रकरणीयमिति च चिन्तयन्तः-

तस्याध्ययने रूचिमेव न धारयन्ति। ईदृशीं परिस्थितिं परिवर्तयितुं योग्याः उपायाः केचन अस्माभिः सवैरवि सदैव चिन्तनीयाः।

तत्रादौ तावत् संस्कृतभाषाया सम्भाषणं सर्वेणापि संस्कृतशिक्षकेण करणीयम्। अनौपचारिकतया विद्यालयप्राङ्गणे व्यक्तिशः सामूहिकरूपेण सम्भाषणं कर्तव्यम्। पठनाप्रारम्भात् पूर्वम् अनौपचारिकभाषणं विधेयम्। प्रार्थनाकार्यक्रमेषु वार्तानां सरलसंस्कृतेनं विमर्शन विधातव्यम्। विभिन्नसंस्कृतप्रचारसंस्थाभिः निर्मितं सम्भाषणसाहित्यं सड.लय्य, तदुपयोगेन यथा छात्रः अनविार्यतया संस्कृतेन वदेत् तथा परिस्थितिः उत्पादनीया। शिष्टाचार-व्यवहार वाक्यानां भित्तिपत्राणि निर्माय कक्षाप्रकोष्ठं परितः संश्लेषणीयानि। तदनुकरणे छात्राः प्रेरणीयाः। संस्कृतेन संलपनम् आलोक्य सर्वेषां हृदि निसर्गतयैव श्रद्धा जागर्ति। वस्तुतः अध्याप्यमानायाः भाषायाः सर्वोत्तममाध्यमं स्वयं सैव भाषा भवति। अतोऽस्माभिः संस्कृतं संस्कृतमाध्यमेनैव अध्यायपनीयम्। अन्यथा संस्कृतभाषेयम् अनुवादद्वारा अवगम्यमाना छात्रेषु श्रद्धां कथमपि नोत्पादयति।

सर्वत्र सम्भाषणे छात्राणां सम्भाषाणार्थं प्रोत्साहनं विधातव्यम्। यः अधिकाधिकं संस्कृतेन भाषते तस्मै पुरस्काराः प्रदेयाः। नेयं नूतनभाषेति, मातृभाषासंलाप इव संस्कृतसंलापोऽपि सरल इति छात्राः बोधनीयाः। कदापि संस्कृतस्य विरोधे न भाषणीयम्। अस्मदीयायाः भारतीयसंस्कृतेः संस्कृतभाषेयम् आत्मा अस्ति। वैदिकसाहित्यात् समारभ्य वाल्मीकिव्यासकालिदास-अश्घोषादि महाकवीनां परिणतप्रणयनप्रौढिना, महर्षिगौतमकणादजैमिनिशङ्कराचार्यादि-महामनीषिणां दार्शनिकचिन्तनैः च सम्भरितेयं राराज्यते। इमे च धर्मगुरवः प्रसिद्धपुरूषाः संस्कृतपृष्ठभूमितः उत्पन्नाः स्वीयग्रन्थरत्नेषु संस्कृतस्य गहनवैदुष्यपरम्पराम् अरक्षन्। सा परम्परा अस्माभिः सर्वैरपि रक्षणीया।

अपि च समये-समये नूतनविधप्रतियोगितानाम् आयोजनं कार्यम्। विभिन्नविषयानणां भाषणकेन्द्रितस्पर्धाः आयोजनीयाः। व्याकरणांशेषु शब्दानां लिङ्ग-कथनं, व्युत्पतिकथनं। समासकथनं चेति स्पर्धाः सञ्चाल्य तेषां ज्ञानमभिवर्ध्य, संशयमपवार्य, व्याकरणं न कठिनं प्रत्युत, किञ्चित् विज्ञानमिति भावना तेषु जागरणीया। सम्भाषाणव्यक्तित्वविकास-भाषणकलाशिक्षण-सर्जनात्मकरचनाप्रशिक्षण स्मरणशक्तिप्रशिक्षण- वेगपठनकौशलादिविविध शिविराणां माध्यमेन संस्कृताध्ययने छात्राणां रूचिस्माभिरेव संस्कृतशिक्षकैः जागरणीया, प्रेरणीया, सम्पोषणीया च।

वैदिक वाड़मय में पर्यावरण चेतना और स्वास्थ्य

उद्यन्नादित्यो रशिमभिः शीर्ष्णो रोग मनीष्णोशः

अर्थात् उदय होता सूर्य अपनी किरणों से सिर के रोग दूर कर देता हैं।

डॉ० सुनीता गौड़
असिस्टेन्ट प्रोफेसर - बी.एड.
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज

हमें अपनी शक्ति को पूर्ण करने के लिए सदा सूक्ष्म भूतों (आकाश, वायु तेज, जल, प्रथ्वी) को प्रकृति से प्राप्त करना चाहिए और इन तत्वों के प्रति हमारे मन में आदर का भाव होना चाहिए। प्रकृति और हममें एक ही तत्व होते हुए भी प्रकृति में उनका सूक्ष्म रूप होने से प्रकृति हमसे शक्तिशाली है और यह सिद्धान्त है कि शक्ति सदा अपने से शक्तिशाली से ही प्राप्त करनी चाहिए। जैसे ब्रह्माण्ड में ठीक अनुपात में पंच महाभूतो का समन्वय है उसी प्रकार एक समता स्थापित हो तभी हममें एवं प्रकृति में उसी प्रकार एक समता स्थापित होगी आकाश, जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी में से प्रत्येक रोग हरने की स्थिति में है। यही जानकर हमारे प्राचीन मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने इनके संरक्षण की बात की है। साथ ही यह बताया कि ये हमारे स्वास्थ्य रक्षण में कितने उपयोगी है इसीलिए वे पर्यावरण संतुलन की बात करते हैं। इन सभी को वे देवता की भाँति मानकर इनसे अपने रक्षण की कामना करते हैं। आज इन्हीं से सीख लेकर पर्यावरण संरक्षण किए जाने की आवश्यकता है। वेदों में इनकी तत्वों से स्वास्थ्य संरक्षण की जो भावना अभिव्यक्त की गई है, वह निम्नलिखित है-

आकाश - सूक्ष्म शक्तिशाली एवं नैसर्गिक साधन आकाश ही है, यही हमारे ब्रह्माण्ड का आधार है।

सूर्य नमस्कार ओर इसके लाभ - सूर्य मानव शरीर का आधार है। उसी से भू (पृथ्वी) भुवः (अंतरिक्ष) और स्वः (द्यलोक) प्रकाशित हैं। उसी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के लिए जो सूर्य नमस्कार किया जाता है। उससे शरीर के सभी अंगो पर तनाव पड़ता है और उनमें नम्यता आती है। अंगो में क्रमशः संकुचन और प्रसारण क्रिया होता है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है। इससे फेफड़े में जो विषैली वायु जमा पड़ी रहती है, वह निष्कासित हो जाती है और शुद्ध ऑक्सीजन उस विषैली वायु का स्थान ले लेती है। मस्तिष्क में भी ऑक्सीजन का प्रवाह तेज होने से स्मरण शक्ति तेज होती है। सूर्य नमस्कार से ऐच्छिक और अनैच्छिक नाड़ी संस्थान में संतुलन रहता है।

वायु- वायु देवता की स्तुति करते हुए कहा गया है-

वायु उक्थोर्भिजरन्ने त्वामच्छा जरितारः।
सुत सोमा अहुर्विदः।।

हे वायु! तेरी ओर अभिमुख होकर शब्दोच्चारण से हम तेरी स्तुति करते हैं और तब स्तुति कर्ता सोमपायी एवं प्रकाश- युक्त होता हैं।

प्रकृति में वनस्पति की पोषक – वर्धक तथा उसकी गंध सुगंध का पान कर उसकी वितरण वायु ही है, यह भाव निम्नलिखित ऋचा में भी दिया गया है–

अग्रं पिबा मधूनां सुतं वायो दिविष्टिषु।
त्वं हि पूर्वपा असि।

हे वायु! वनस्पति का सोमपान कर पर्यावरण में संतुलिन कायम कर। तुम पूर्वपा हो। वायु स्वास्थ्य का दाता और रोगों का शमनकर्ता है। यह संकेत ऋग्वेद 10/137/2 में भी आया है–

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरापरावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।।

अर्थात दो प्रकार की वायु चलती है– एक अंतरिक्ष और समुद्र से आती है। दूसरी सूखी भूमि से आती है। प्रथम शरीर को पवित्र करती है और दूसरी जो थल के मलादि के कारण जो अशुद्ध होता है, उसे शुद्ध करती है। प्रथम रोगों का शमन करती है इसीलिए लोग समुद्र तट पर तथा पहाड़ पर मात्र वायु सेवन द्वारा स्वास्थ्य लाभी और रोग शमन हेतु जाते है और दूसरी वायु शरीर के अंदर रह कर श्वास–प्रश्वास की क्रिया करती है। उससे ही प्राणधारी जीवित रहते हैं।

अथर्ववेद 4/13/3 में भी यही भाव दुहराया गया है–

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे।।

हे वायु! स्वास्थ्य को बहाकर ला। जो रपः (रोग) है, उन्हें निकाल दे! तू सर्व रोग–नाशक है तथा देवों का दूत होकर फिरता रहता है।

अग्नि– आध्यात्मिक दृष्टि से अग्नि से ईश्वर अपेक्षित है पर भौतिक अग्नि की क्षमता, तेजस्विता एवं व्यायकता का संकेत ऋग्वेद में अनेक जगहों पर मिलता है–

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरूत।
से देवों एह वक्षति।।
अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवें।
यशसं वीरवतमम्।।

अर्थात् अग्नि प्राचीन महान ज्ञानी ऋषियों द्वारा और नवीन साधकों द्वारा श्रुति किए जाने योग्य है। वही संसार में दिव्यगुणों और पदार्थो को प्रकाशित करने वाला है। प्रतिदिन नियम पूर्वक अग्नि के परीक्षण से ऐश्वर्य पुष्टिकारक भौतिक पदार्थो का निश्चयपूर्वक उपभोग करो। यह अग्नि मानव जीवन में यशस्वी शारीरिक बलों की वृद्धि करने वाली है।

भारतीय ऋषियों ने अग्नि की पूजा यज्ञ द्वारा की है जिसका पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी बहुत महत्व है। यज्ञ द्वारा न केवल फसल प्रचुर और सुस्वादु होती है। वरन् विश्व का वानस्पतिक अनुपात भी कायम रहता है। वृक्षों के फलने–फूलने से अदृष्य लाभ होते है–वर्षा का होना, रेगिस्तान का न फैलना, वातावरण में ऑक्सीजन की प्रचुरता बने रहना आदि। मनुष्यों को इस ज्ञान का संकेत यजुर्वेद के इस मन्त्र में दिया गया है–

ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं धृतं पयः कीलाल परिस्त्रुतम।

स्वधा स्थ तपर्यत में पिवृन्।।

अर्थात् यज्ञ में प्रयुक्त किए गए घृत, दूध व अन्नादि के सूक्ष्म अंश जल के साथ फैलकर इस पृथ्वी पर वायु जल एवं अन्न के माध्यम से प्राप्त होते है। अतः वे बल एवं पराक्रम के वाहक हैं। उनसे हमारी उत्पादक शक्तियाँ पुष्ट होती हैं। यही भावना यजुर्वेद के इस मंत्र में की गई है–

अयक्ष्मं च मे अनामयश्य में जीवानुश्च में।

दीर्धायुत्वं च में यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

अर्थात यज्ञ से हमारा शरीर यक्ष्मादि रोगो से रहित होकर दीर्घजीवी एवं सामर्थ्यवान बने।

जल– वैदिक वाड़मय में मित्र और वरूण शब्द ऑक्सीजन और हाइड्रोजन के लिए प्रयुक्त हुए हैं। यज्ञ द्वारा जहाँ मेध न वहाँ भी वर्षा कराना इन्ही दोनो गैसों के समीकरण की संभावना से ही संभव है।

ऋग्वेद के 10 वं मण्डल के 30 वें सुक्त की प्रथम 10 ऋचाओं में यह वर्णित है कि जल कैसे बनता है। अथर्ववेद में सूर्य की धूप में जल सेवन को कल्याणकारी औषधि बताया है–

देवस्य सवितुः सवे कर्म कुण्वन्तु मानुषाः।

शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः।।

अर्थात् सूर्य देवता की प्रेरणा में रहकर मनुष्य कर्म करे तो जल औषधि बनकर हमारे लिए कल्याणकारी होता है। यज्ञ से वर्षा होती है इसे मनु ने बताया है–

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।

आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं तवः प्रजाः।।

अर्थात यज्ञाग्नि में डाली गई आहुति सूर्य तक पहुँचती हे। फलतः वहाँ के मंडल के क्रियाशील होने से सर्य द्वारा वर्षा कराई जाती है। वर्षा से अन्न ओर अन्न से प्रजा की उत्पत्ति होती है। जल के स्त्रोत के बारे में यजुर्वेद में कहा गया है–

पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

अर्थात् पय पृथिवी पर (नदी, निर्झर, सरोवर, कुआँ) वनस्पतियों में, अंतरिक्ष में (पृथिवी से 10 किमी. की ऊँचाई तक वाष्प के रूप) द्युलोक (10 किमी. से ऊपर वाले भाग) में मिलता है। इन्ही तीनो स्त्रोतों से जल प्राप्त किया जाता है।

पृथ्वि– भूमि को माता मानकर अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है–

यते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।

तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।।

अर्थात् है पृथ्वी ! जो तेरा मध्य भाग है और जो तेरा केन्द्र भाग है तुम्हारे शरीर से जो अन्न आदि बलकारक पदार्थ उत्पन्न होते हैं।

उनमें हमें प्रतिष्ठित कर, हमें तेरे प्रति पवित्र भावना वाला बना। हमें ऐसी प्रेरणा दे कि हम समझें कि तू भूमि मेरी जननी होने के कारण माता है और मैं तुझ पृथ्वी का दु:ख से रक्षा करने वाला पुत्र हूँ, समस्त रसो को देने वाला मेघ हमारा पिता है जो हमें परिपुष्ट करता है।

अग्नि र्भूम्योभोषधीष्वग्निमापो बिभ्रतग्निरनश्मसु।

अग्निरन्तः पुरूषेषु गोष्वश्वेष्वगनयः।।

अर्थात् भूमि में अग्नि है और यह पृथ्वी औषधियों में अग्नि को और जल को धारण कर रही है इस भूमि पर पड़े हुए पत्थरो में अग्नि विद्यमान है। पुरूषों के अन्दर भी वही अग्नि है और अश्वादि पशुओं में भी वही अग्नि है। इसी भूमि से अन्न आदि की कामना की गई है–

यस्सामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।

सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुआमथो उक्षतु वर्चसा।।

जिस भूमि पर सबको समान सुख देती हुयी नदियाँ दिन–रात बिना किसी प्रमाद के बहती रहती हैं, वह अनेंक नदियों वाली भूमि हमारे लिए जल और अन्न आदि दे और तेज प्रदान करने वाले अन्नों से हमें परिपुष्ट करे।

उपस्थास्ते अनभीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।

दीर्घ न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहतः स्याम।।

प्रथ्वी से रोग आदि दूर करने की प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि है पृथ्वी! हमारी सब संताने तेरी गोद में खेलती हुई रोग रहित, यक्ष्मा आदि महारोग से रहित हों, हम तेरी सहायता से अपनी आयु को लम्बी समझते हुये हम तेरे लिए अपना समर्पण कर देनेव ाले हों। यहाँ मिट्टी से यक्ष्मा रोग दूर करने की शक्ति का संकेत है।

यह थी प्राचीन तपोवनी ऋषियों की सूक्ष्म दृष्टि। उन्होंने पृथ्वी, वायुय, अग्नि, जल और आकाश इन सभी तत्वों को आध्यात्मिक दृष्टि से देवता मानकर उनसे अपने रक्षण की कामना की और उनके संरक्षण के प्रयास भी किए। ऐसा इसलिए किया गया था क्योंकि कोई भी अपने देवता को नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा। वे यह भी जानते थे कि इनकी शुद्धता से व्यक्ति रोगमुक्त रहता है अगर इसी भावना को आज हम अपना लें तो हम पर्यावरण का नुकसान भी नहीं करेंगे और अपने आपको और मानव जाति को भी सुरक्षित रखेंगे।

`प्रेरणादायक कविता'

सुनील कुमार गर्ग
कार्यालय अधीक्षक

कल का दिन किसने देखा है,
आज का दिन भी खोये क्यों,
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं,
उन घड़ियों में फिर राये क्यों।

करें कोशिश अगर इंसान तो क्या-क्या नहीं मिलता,
वो सिर उठा के तो देखे जिसे रास्ता नहीं मिलता,

भले ही धूप हो, काँटे हो राहो में,
मगर चलना तो पड़ता है,
क्योंकि किसी प्यासे को घर बैठे दरिया नहीं मिलता
मेरी मंजिल मेरे करीब है,
इसका मुझे एहसास है,
गुमान नहीं मुझे इरादों पर अपने,
ये मेरी सोच और हौंसलों का विश्वास है।
वक्त से लड़कर जो नसीब बदल दे,
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे,
कल होगा क्या कभी ना यह सोचो,
कया पता कल खुद वक्त अपनी तस्वीर बदल दे।

भूल होना प्रकृति है
उसे मान लेना संस्कृति है,
और भूल को सुधार लेना प्रगति है।

वो खुद ही तय करते है मंजिल आसमानों की
परिंदो को नहीं दी जाती तालीम उड़ानों की,
रखते हैं जो हौंसला आसमान छूने का,
उनको नहीं होती परवाह गिर जाने की
जीत की चाहत का जुनून चाहिए,
उबाल हो जिसमें ऐसा खून चाहिए
आ जायेगा यह आसमान भी जमीन पर,
बस इरादों में जीत की गुँज चाहिए।

संघर्ष में आदमी अकेला होता है,
सफलता में दुनिया उसके साथ होती है,
जब-जब जग उस पर हँसा है,
तब-तब उसी ने इतिहास रचा है।

वार को देखकर आधार बदलना सीखो,
वक्त को देखकर व्यवहार बदलना सीखो।

स्वच्छ भारत अभियान

अनिल कुमार अग्रवाल
कनिष्ठ सहायक

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत सरकार द्वारा चलाया जाने वाला एक राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान है। जिसकी शुरूआत प्रधनमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा महात्मा गाँधी के 145 वे जन्मदिन के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को की गई थी। यह अभियान पूरे भारत में सफाई के उद्देश्य को पूरा करने के लिए शुरू किया गया है। प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की है कि वे स्वच्छ भारत मिशन से जुड़े ओर अन्य लोगों को भी इससे जुड़ने को प्रेरित करें ताकि हमारा देश दुनिया का सबसे अच्छा और स्वच्छ देश बन सकें इस अभियान की शुरूआत स्वयं नरेन्द्र मोदी ने सड़क की सफाई करके की थी।

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत का सबसे बड़ा अभियान है जिसके शुभारम्भ पर लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। शुभारंभ के दिन प्रधानमंत्री ने नौ हस्तियों के नामों की घोषणा की और उनसे अपने क्षेत्र में सफाई अभियान को बढ़ाने और आम जनता को उससे जुड़ने के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि इन हस्तियों को अगले 9 लोगों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करना है और ये श्रृंखला तब तक चलेगी जब तक कि पूरे भारत तक इसका सन्देश न पहुँच जाए। उन्होंने यह भी कहा कि हर भारतीय इसे एक चुनौती के रूप में ले और इसे सफल अभियान बनाने के लिए अपना पूरा प्रयास करे। नौ लोगों की श्रृंखला पेड की शाखाओं की तरह है। उन्होनें आम जनता को इससे जोड़ने के लिए अनुरोध किया और कहा जुड़ने के लिए प्रेरित करें। इस तरह भारत एक स्वच्छ देश हो सकता है। हमें भी यह संकल्प लेना चाहिए और देश को स्वच्छ बनाना चाहिए।

"विज्ञान में महिलाओं का योगदान"

डॉ० जागृति सिंह
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
रसायन विभाग

भारत राष्ट्र एक विकासशील राष्ट्र रहा है। वर्तमान में हमारा राष्ट्र विकास के पथ पर संसार में अपना परचम पसार रहा है। परन्तु किसी भी राष्ट्र या देश का विकास तभी समभव है जब उसमें निवास करने वाले पुरूष तथा महिलाऐं समान रूप से अपना योगदान देते हैं। क्योंकि कोई भी राष्ट्र दोनों (नारी व पुरूष) से प्रभावित होता है।

हम देखते है कि ग्रामीण अथवा शहरी, कोई भी क्षेत्र में महिलाऐं आबादी का लगभग आधा अंश होती हैं। वे परिवार, समाज या समुदाय का एक बड़ा सार्थक अंग हैं। जो समाज को सशक्त रूप से प्रभावित करती हैं। महिलाऐं किसी भी देश अथवा राष्ट्र को विकास तक पहुँचाने में पुरूषों के बराबर ही महत्व रखती हैं। परन्तु ये हमारे देश की विडम्बना ही कह सकते हैं कि देश में सदैव ही महिलाओं की उपेक्षा की जाती रही है और आज भी कायम है।

यदि हम प्राचीन काल और वर्तमान युग में तुलना करे तो, पुरातन काल से ही महिलाओं ने अनेक क्षेत्रों में अपना परचम लहराया है। चाहे वह क्षेत्र विज्ञान हो या कानून, समाज हो या कृषि, क्रीड़ा हो या दार्शनिकता: सभी क्षेत्रों में नारी का अपना योगदान रहा है। तभी तो प्राचीन काल से ही तथा पुराणों में भी नारी को 'माँ' के रूप में 'प्रथम गुरू' की विशेष संज्ञा दी गई है।

भारत का वर्तमान में विकास होने के बावजूद आज भी महिलाओं को उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। क्योंकि यह एक सच है कि इतिहास में उनकी शिक्षा सम्बन्धी पुख्ता तथ्य हमारे समक्ष नहीं है। साथ ही यह भी सत्य है कि इतिहास के तथा वर्तमान के बहुत से स्वर्णिम अध्याय को हमसे दूर रखा गया, या फिर देश की जनता ने कभी इस सम्बन्ध में जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश नहीं की। इसके बावजूद भी नारी देश व समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर देश के विकास में अपनी भूमिका निभा रही है।

आज हम विज्ञान क्षेत्र में दिग्गजों की बात करें तो जिन लोगों का नाम हमें याद आता है, वो शायद सी०वी० रमन या ऐ०पी०जे० अब्दुल कलाम आदि ही है। यदि विज्ञान क्षेत्र में किसी महिला का नाम पूछा जाय तो? शायद हमें एक भी नाम याद नहीं आयेगा। इसलिए आज हमने विज्ञान क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाली ऐसी महिलाओं के बारे में जानकारी संकलित करने की कोशिश की है, जिन्होंने रूढ़ियों को तोड़ते हुए अपने लिए खास जगह बनायी है और विज्ञान और शोध के प्रतिष्ठित क्षेत्र में पुरूषों का दबदबा कायम होने के बावजूद, महिलाओं ने इस क्षेत्र में असीम ऊँचाइयों को हुआ है। आइये जानते हैं। ऐसी ही संकलित पाँच महिलाऐं जिन्होंने विज्ञान विभिन्न क्षेत्रों में अपना अमूल्य योगदान दिया।

1 मीनल संपत:- जब 5 सितम्बर 2013 को मार्स ऑर्बिटर ने प्रस्थान किया तब सबने अंतरिक्ष में भारत के योगदान में इस नई उपलब्धि की तारीफ की थी। परन्तु, कुछ ही लोगों को पता था कि इस मिशन की सफलता मीनल संपत के नेतृत्व में सिस्तम इंजीनियरों की टीम की कड़ी मेहनत का नतीजा था। इस टीम ने करीब दो साल तब कड़ी मेहनत, बिना किसी छुट्टी लिए, यहाँ तक कि राष्ट्रीय अवकाशों के दौरान दिन-रात एक करके काम किया था। मीनल संपत को 2013 को मार्स-मिशन को सफल बनाने में योगदान के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनु-संधान संगठन (आई०एस०आर०ओ०) टीम ऑफ एक्सीलेंस' अवार्ड से नवाजा गया था।

2 डॉ इंदिरा हिंदुजा:- डॉ इंदिरा हिन्दुजा ने काफी बाझ महिलाओं की गोद भरने में मदद की है। साल 1986 में भारत के पहले 'टेस्ट-ट्यूब बच्चा' का श्रेय इन्हें ही जाता है। इन्होंने गैमीट इंट्रा फेलो-पियन (GIFT) जकनीक का अविष्कार किया। जिसकी वजह से साल 1988 में पहल जी आई एफ टी बच्चा दुनिया में आया। चिकित्सा के क्षेत्र में अग्रणी शोध और काम के लिए सरकार ने इन्हें साल 2011 में 'पद्मश्री' पुरूस्कार से सम्मानित किया।

3. डॉ अदिति पंत :- समुद्र-विज्ञान क्षेत्र की जानी-मानी हस्ती डॉ अदिति पंत पहली दो भारतीयों में से एक हैं, जो देश के तीसरे अंटार्टिका अभियान में भाग लेकर साल 1983 में अंटार्टिका पहुँची थी।

उनका मिशन दक्षिण गंगोत्री की स्थापना थी, जो भारत का

पहला अंटार्टिका स्टेशन है। भारतीय अंटार्टिका कार्यक्रम में उनके योगदान के लिए डॉ पंत को उनके तीन सहयोगियो के साथ 'अंटार्टिका' पुरूस्कार दिया गया। बाद में उन्होंने नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशनाग्राफी और नेशनल केमिकल लैब्रटॉरी में काम किया।

4. प्रियंवदा नटराजन:- कोयंबतूर में जन्मी प्रियंवदा नटराजन अपने डार्क एनर्जी और डार्क मैटर (विषय) में शोध के लिए मशहूर है। उनके पास दो पूर्वस्नातक डिग्रियाँ है- एक भौतिकशास्त्र में और दूसरी गणित में।

उन्होंने मैपिंग द हैवंस: द रैडिकल सांइटिफिक आइडियास दैट रिवील द कॉसमॉस नाम पुस्तक लिखी है। आज वो येल यूनिवर्सिटी के डिपार्टमैट ऑफ अस्ट्रानमी में प्रोफेसर के पद पर काम कर रही हैं।

5. टेसन थॉमस :- भारतीय मिसाइल प्रोजेक्ट का नेतृत्व करने वाली पहली और अग्नि पुत्री नाम से जानी जाने वाली टेसी थॉमस ने डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट आर्गनिफेशन (डी०आर०डी०ओ०) में अपना सराहनीय काम से सबका ध्यान खींचा।

भारत की लॉन्ग रेंज न्यूक्लिय- केपेबल बलिस्टिक मिसाइल अग्नि 5 के निर्माण के पीछे पत्नि ओर माँ का दायित्व संभालने वाली टेसी थामस का हाथ है। आज वो सब महिलाओं के लिए प्रेरणा बन गई है, जो घर की जिम्मेदारी और नौकरी में तालमेल बिठाने की कोशिश में जुटी है।

निष्कर्ष:- में यह कि जब आपको लगेगा कि कोई काम असंभव है, तो, इन महिलाओं और उनकी उपलब्धियों के बारे में सोचिए, जिनसे महिलाओं को कभी न हार मानने ओर अभिलाषा को पूरा करने में कार्यरत रहने की प्रेरणा मिलती है।

ट्रैपिफक पुलिस मैन बनूँगा

प्राची
बी0एड0 प्रथम

माँ मुझे पुस्तक दिला दो
मैं भी पढ़ने जाऊँगा
ट्रैफिक पुलिस मैन बनकर
खूब सारा खाऊँगा।।
ना खाऊँगा ना खाने दूंगा
बोले माइक पर मोदी जी।
ट्रैफिक नियम लागू ऐसे कर
झोली खाली कर दी जी ।।
इस झोली का कितना पैसा
लगता सरकार के हाथ।
बीच में ट्रैफिक पहरेदार
कर लेंगे हाथ साफ ।।
पहले दो तीन सौ कमाते
अब कमायेंगे हजार।
देखते-देखते अर्थव्यवस्था में
हो जाएगा सुधार ।।
तरीका सरकारी खजाना
बढ़ाने का है पाक-साफ।
लेकिन देश की सड़कें
दिख रही जगह-जगह हाफ ।।
कहीं-कहीं पर हाफ
कहीं-कहीं पर साफ
कहीं-कही पर गाड़ी निकले
करते हुए मंत्र जाप।।
पर ट्रैफिक वाले का डंडा
सिखाने चला नियम-कानून।
सड़कों से बच जाओ तो
धन लूट के पियेंगे खून ।।

"यज्ञ–दर्पण"

कुशमाण्डे आर्य
विभाग–समाजशास्त्र

मानव जीवन में यज्ञ का बड़ा महत्व है। जो मनुष्य यज्ञ नहीं करता है उसका जीवन नरकवत हो जाता है। यज्ञो वैश्रेष्ठतमृ कर्म: अर्थात यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म है। मनुष्य का धर्म होता है कि वह एक घन्टा समय निकाल कर दोनो समय सुबह–शाम यज्ञ अर्थात अग्नि होत्र अवश्य करे। यह करने से वातावरण शुद्ध होता है। वैदिक धर्म के अनुसार यज्ञ पाँच प्रकार के होते हैं।

1. ब्रह्म यज्ञ (संध्योपासना)
2. देव यज्ञ (अग्नि होत्र)
3. पितृ यज्ञ
4. वलि वैश्वदेवयज्ञ
5. अतिथि यज्ञ

पंच महायज्ञ

1. ब्रह्म यज्ञ :- जो साधक सुबह–शाम श्रद्धा भाव से शान्तपूर्वक ईश्वर का चिन्तम करता है या उसका गुणमान करता है, वह ब्रह्म यज्ञ कहलाता है

2. देव यज्ञ :- सुबह शाम श्रद्धापूर्वक यज्ञ करना ही देव रू कहलाता है। देव रू (अग्नि होत्र) करने से वायुमण्डल शुद्ध एवं वातावरण शुद्ध होता है। यज्ञ करने से सभी प्राणियों को सुख मिलता है। यज्ञ द्वारा लोक परलोक दोनो सुधर जाता है।

3. पितृ यज्ञ:- माता, पिता, आयार्यो, गुरूओं एवं विद्ववानों की सेवा करना तथा उनकी आज्ञाओं का पालन करना ही पितृ–यज्ञ कहलाता है।

4. बलिवैश्वदेव यज्ञ:- सभी जीवों पर दया करना (दया दिखाना) ही बलि वैश्वदेव यज्ञ कहलाता है।

5. अतिथि यज्ञ :- अकस्मात आये हुए अतिथियों, विद्वानों तथा आचार्यो का सम्मान करना तथा भोजनादि द्वारा उन्हें सन्तुष्ट करना ही अतिथि यज्ञ कहलाता है।

किसी भूखे व्यक्ति को भोजन भरा देना एवं प्यासे को जल पिला देना। यह एक प्रकार का यज्ञ है। जो मनुष्य किन्ही असहायों, अनाथों एवं गरीबों को धन, वस्त्र, बर्तन एवं अत्तादि का सहयोग भरता है। यह भी एक प्रकार का यज्ञ है। किसी भिक्षुक को भोजन करा देना एवं भिक्षा देना। यह भी एक प्रकार का यज्ञ है। किसी पशु पक्षी को अन्न का दाना देना यह भी एक प्रकार का यज्ञ है। जो मनुष्य किसी व्यक्ति को खिलाता है तो समझो वह एकांगी यज्ञ है। लेकिन अग्नि में डाला हुआ पदार्थ अग्नि में जलकर वाष्प बनकर आकाश में जाता है और बादल बनाकर भमि पर जल वरसाता है। यह सर्वाङ्गीण यज्ञ कहलाता है। अग्नि में डाला हुआ पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता है। घी सामग्री आदि पदार्थ अग्नि में जलकर दूसरों को सुगन्ध पहुँचाता है और हमारे जीवन में शान्ति आती है। सुख समृद्धि बढ़ाता है।

अत: हमारे जीवन में यज्ञ का बड़ा महत्व है। जिस मनुष्य का जीवन यज्ञमय नहीं होता है। उसका जीवन नरकवत बनकर रह जाता है। यज्ञ करने से मनुष्य का जीवन सदा शुद्ध और पवित्र रहता है। अत: हमें सुबह–शाम यज्ञ करना चाहिए।

यज्ञ मनुष्य की आत्मा है। यज्ञ के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। जो मनुष्य प्रात: सायं दोनो समय रू करता है। वह अत्यन्त भाग्यशाली माना जाता है जो मनुष्य अपना महयाण चाहाता है। वह सुबह शाम दोनो समय यज्ञ करें। यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है एवं सदा सुख शान्ति मिलती है। जो नमुष्य अपने जीवन को सुन्दर एवं सुखमय बनाना चाहता है। वह दोनो मय प्रात: सायं यज्ञ अवश्य ही करे और यदि यज्ञ दोनों समय नहीं हो पाता तो एक समय अवश्य ही करें। यज्ञ करने से स्वयं में आनन्द की अनुभूति होती है। अपना निर्माण होता है। परिवार समाज, राष्ट, एवं विश्व का कल्याण होता है। यज्ञ मनुष्य को महान बनाता है सदा पापो से दूर रखता है। यज्ञ करने से प्रत्येक प्राणियों को लाभ पहुँचता है। यज्ञ करने से मनुष्य का जीवन हमेशा कमल की तरह खिला और मुस्कुराता रहता है। यज्ञ करने से घर में सुख समृद्धि होती तथा सदैव शान्ति बनी रहती है। अत: यज्ञ करना कभी नहीं भूलें।

किसी कवि ने बड़ा सुन्दर लिखा हैं–

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।

जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से।।

ऋषियों ने ऊँचा माना है, स्थान यज्ञ का।
करते है दुनिया वाले एवं सम्मान यज्ञ का।।

दर्जा है तीनो लोक में महान यज्ञ का।
जाता है देवलोक में इन्सान यज्ञ से।।

जो कुछ भी डालो यज्ञ में खाते है अग्निदेव।
सब को प्रसाद यज्ञ का पहुँचाते है अग्निदेव।।

पैदा अनाज होता है भगवान यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।।

शक्ति और तेज-यश भरा, इस शुद्ध नाम में।
साक्षी यही है विश्व के, हर नेक काम में।।

पूजा है इसको श्री कृष्ण, भगवान रामने।
होता है कन्यादान भी, इसी के सामने।।
मिलता है राज्य कीर्ति, सन्तान यज्ञ से।।

सुख शन्ति दायक मानते है सब मुनि इसे।
वसिष्ठ, विश्वामित्र और नारदमुनि इसे।।

इसका पुजारी कोई पराजित हनीं होता।
भय यज्ञकर्ता को कभी विच्चित नहीं होता।।

होती है सारी विपदाएँ आसान यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते है भगवान यज्ञ से।।

चाहे अमीर है चाहे गरीब है।
जो नित्य यज्ञ करता है व खुशनसीब है।।

हम सब में आये यज्ञ के अर्थी की भावना।
द:खियों के सच्चे दिल से यह श्रेष्ठ कामना।।
होती है पूर्ण कामना महान यज्ञ से।।

अत: यज्ञ मनुष्य की आत्मा है। रू के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

क्या आप जानते हैं ?

कनिका शर्मा
बी0एड0 प्रथम

प्र0 ऑस्ट्रेलिया के जंगलो में लगी आग से किस वनीय प्रजाति की आधी आबादी समाप्त होने का दावा किया गया है ?

उ0 कोहाला (भालू की प्रजाति)

प्र0 मिशन इन्द्रधनुष 2.0 किससे संबंधित है ?

उ0 बच्चों के टीकाकरण से।

प्र0 अन्तर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार 1901 के बाद कौन सा वर्ष सबसे गर्म रहा ?

उ0 2019

प्र0 केन्द्र सरकार ने हाल ही में कितने राज्यों के लिए 5908 करोड़ रूपये की सहायता राशि जारी की ?

उ0 7 (कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, असम, मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश)

प्र0 निर्धन लोगों को नि:शुल्क चिकित्सा सहायता प्रदान के लिए किस राज्य ने ''आरोग्य श्री योजना'' लॉन्च की है ?

उ0 आन्ध्र प्रदेश (इस योजना का लाभ 5 लाख तक की वार्षिक आय वाले लोगों को मिलेगा)

प्र0 किस राज्य ने अपने भूमि रिकार्ड को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के बेव पोर्टल से एकीकृत करने वाला देश का पहला राज्य बना ?

उ0 महाराष्ट्र।

वाणी सयंम

के.के. श्रीवास्तव
पुस्तकालय प्रभारी

वाणी एक अद्‌भुत कला है, जो सिर्फ मनुष्य को ही प्राप्त है। सृष्टि में अनगिनत प्राणी है, जिनके पास बोलने के क्षमता नही हैं। वाणी समस्याएं पैदा कर सकती है और वाणी ही उनका समाधान भी कर सकती है। सवाल हैं, कि उसके दुरूपयोग करके लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। संम्यक वाणी के चार सूत्र है। मितभाषिता-मृदुभाषित और विचार भाषित। अध्यात्म साधना में वाणी का संयम जरूरी है। समाज में वाचाल लोगों को गंभीरता से नहीं लिया जाता। उतना ही बोलना चाहिए जितना बोलना आवश्यक हो। उचित अवसर पर शालीनता के साथ कही गई बात प्रभावी होती हैं। और शास्त्र की चमत्कारिक व्याख्या करने में भी दक्ष हो सकता हैं। परन्तु आप की यह विद्धता केवल भोग के लिए है। मोक्ष के लिए नहीं। दुनिया में ऐसे-ऐसे बहुत लोग है, जो कि बात करने में माहिर होते है, परंतु सफल वहीं होते है, जो होठो पर नियंत्रण करना जानता है। क्रोध या कलह के समय मौन हो जाते से तमाम समस्याओं पर विराम लग जाता हैं।

संस्कृत मे एक नीति वचन हैं। 'वाचालता पतन का कारण है, और मौन उत्थान का।

मुखर होने के कारण हार को गले में पहना जाता हैं। मृदुभाषा सबको प्रिय लगती है। मधुर वाणी से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता हैं। तमाम लोग काम, क्रोध लोभ और भयवश झूठ बोलकर अपना विश्वास खो देते हैं। तभी तो महान कवी कबीरदास जी ने कहा है 'सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप/ झूठ के पांव नहीं होते। वह भी सत्य की सतय बैसाखी पर चलता है। मिलावट खोर भी अपनी दुकान के सामने लिखवाता है, यहाँ शुद्ध सामान मिलता हैं। बोलने से पहले यह विचार कर लेना चाहिए कि क्या वह आपके मौन से श्रेष्ठ होगा ? वस्तुत: सारे विवादो की जड़ तीखे वचन ही होते है। इसलिए जरूरी है कि हम तौलकर बोले, मीठी बोली, सत्य बोली और समझकर बोले।

ये जरूरी तो नहीं

लक्ष्मी चौहान
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

जिंदा दिल है हम हँस कर दो गम सह लेगें
हर गम में उसका साथ हो
जरूरी तो नहीं .....

यूं तो वो बहुत वफादार है मगर फिर भी
हर कदम पे वो वफा करे
जरूरी तो नहीं .....

हौंसले और भी बढ़ जायेंगे शिकायत के बाद
जीत यहाँ सदा हमारी हो
जरूरी तो नहीं .....

शिद्‌दत-ए-गम में इन्सान से भी लेता है
सामने उसका आँचल हो
जरूरी तो नहीं .....

नजरें भी बस क्या करती पत्थर हो गयी
उसके बाद किसी और को देखें
जरूरी तो नहीं .....

हमने हमेशा उसे दिल से चाहा
वो भी हमें दिल से चाहे
जरूरी तो नहीं .....

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर चिन्तन में नारी – ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ० राधा उपाध्याय
राजनीति विज्ञान विभाग

भारतीय नारी जागरण के इतिहास में ईश्वरचन्द जी का चिन्तन स्वर्ण युग है। उन्होंने नारी के मूल में छिपी महती महाशक्ति के दर्शन किये। उन्होंने देखा कि नारी त्याग की प्रतिमा है, उसके स्वभाव में दान है, प्रेम है, अहिंसा है। इसलिए कोई कार्य कर सकना तब तक सम्भव नहीं है, जब तक नारी शक्ति को उसकी पूर्ण गरिमा तक जागृतन कर दिया जाए। ईश्वरचन्द जीने भारतीय नारी के अन्दर छिपी त्यागवृत्ति और उसकी महती दान परम्परा को गृह की चाहर दीवारी से बाहर निकाला और समाज तथा देश के व्यापक हितों में उसका प्रयोग किया।

ईश्वरचन्द जी नारी शिक्षा के समर्थक थे। उनके प्रयास से ही कल कत्ता में एवं अन्य स्थानो में बहुत बालिका विद्यालयों की स्थापना हुई। उस समय हिन्दू समाज में विधवाओं की स्थिति बहुत ही सोचनीय थी। इन्होंने विधवा पुनर्विवाह के लिए लोकमत तैयार किया। इनके ही प्रयासो से 26 जुलाई 1856 ई० में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित हुआ। इन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह एक विधवा से ही किया। इन्होंने बाल विवाह का भी विरोध किया।

ईश्वरचन्द जी ने नारी को जगाया और बस प्रकार के अतिथियो और भय वर्णनाओं के बीच आश्वस्त किया उसे बन्दिनी से विद्रा हिणी बनाया। सार्वजनिक जीवन, गृहजीवन में, तथा सामाजिक जीवन में उन्होंने नारी को मुक्ति की दीक्षा दी। उसे दासी नहीं अर्द्धगिनी माना, उसे दिल बहलाव की वस्तु नहीं जीवन की निरंतर साधना में प्रेम ओर साहचर्य की दीप शिखा समझा। इस प्रकार ईश्वर चन्द जी ने नारी को उसके पूर्ण गौरव तक उठाया।

आधुनिक भारतीय इतिहास में ईश्वरचन्द जी पहले व्यक्ति हुए जिन्होंने बड़ी निर्भीकता तथा साहस से समाज के सामने यह बात रखी कि शताब्दी से शोषित उत्पीड़ित नारी अब पुरूष के अनैतिक प्रभुत्व को किसी प्रकार स्वीकार नहीं करेगी। इनका यह दृढ़ मत था कि समाज के आधे भाग की उपेक्षा कर हम किसी भी प्रकार की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रगति नहीं कर सकते है। ईश्वरचन्द जी ने कहा कि मेरे विचार से स्त्रियों की यह घरेलू गुलामी हमारे जंगलीपन की निशानी है।

ईश्वरचन्द जी ने यह सीख दी कि स्त्रियों को अपनी रक्षा के लिए पुरूषों पर आश्रित नहीं रहना चाहिए। बहादुरी मर्दो की बपौती नहीं है। अपने में अधिक साहस आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए। यदि स्त्रियाँ भीरू बनी रहेंगी तो असामाजिक तत्व उस पर हावी रहेंगे हिन्दुस्तान की स्त्री कभी अबला नहीं थी। वे भूतकाल में अपनी वीरता के लिए प्रसद्धि थी। बहादुरी के काम उन्होंने वार से नहीं बल्कि अपने चरित्र की शक्ति से किये थे उसे असमानता और अत्याचा पर आधारित व्यवस्था का विरोध करने का पूर्ण अधिकार है।

जिस रूढ़ि और कानून के बनाने में स्त्री का कोई हाथ नहीं था और जिसके लिए केवल पुरूष जिम्मेदार है, उस कानून और रूढ़ि के जुल्मों से स्त्री को लगातार अबला बनाया है जितना अधिकार पुरूष को अपने भविष्य की रचना का है उतना ही वेसा ही अधिकार सभी को भी अपना भविष्य तय करने का है।

जब तक राष्ट्र की जननी स्वरूप हमारी स्त्रियाँ ज्ञानवान नहीं होती तो उन्हें स्वतंत्रता नहीं मिलती तथा उनसे सम्बन्धित कानूनों, रिवाजों और पुरानी रूढ़ियों में अनुकूल परिवर्तन नहीं किया जाते, तब तक राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता।

अगर आप सपना देखते है–

डॉ० भुवनेश कुमार

हममे से कई सारे लोगों को लगता है , काश मेरे पास ये होता वो होता। हममें से कई सारे लोग बड़े सपने इसलिए नहीं देखते है। क्योंकि वो सोचते है कि हमारे पास पर्याप्त संसाधन नहीं है, हम कुछ नहीं कर सकते और न ही कर पायेगे इसलिए वह सपना भी नहीं देखते। मेरा कहना है, कि अगर आपके पास कुछ नहीं है तो कम से कम सपना तो देखा जा सकता है और वो सपना आप देखते रहिए। सच माने आप दुनिया के सबसे ताकतवर प्राणी है। आप सब कुछ पा लेंगे जिसका आप सपना देखते हैं।

यह कहानी बनाती है कि किसी सपने की हकीकत में कैसे बदला जा सकता है एक बार की बात है जापान में एक 10 साल का लड़का रहा करता था। जिसका नाम ओकायो था। ओकायो का सपना था कि वो कराटे सीखे ओर सबसे बड़ा मास्टर बने लेकिन ओकायो का बाया हाथ नहीं था। एक दुर्घटना में ओकायो का बाया हाथ कट गया था। इस सपने से ओकायो के माता–पिता बहुत परेशान थे कि बच्चा कराटे सीखना चाहता है और उसका बाया हाथ भी नहीं है। लेकिन किसी प्रकार ओकायो ने अपने माता–पिता को अपने सपने के लिए राजी कर लिया जिससे उसके माता–पिता उसे लेकर एक कराटे गुरू के पास लेकर गये। गुरू ने जब ओकायो का देखा तो कहा कि तुम कैसे करोगे तुम्हारा बांया हाथ नहीं है कैसे सीखोगे। ओकायो ने कहा तुझे पता नहीं कैसे सीखूगेा, लेकिन अगर आप मुझे सिखाओगे तो मैं अवश्य सीखूंगा। कराटे गुरू ओकायो के विश्वास को लेकर प्रभावित हुए और उसे कराटे सिखाने के लिए तैयार हो गए। सभी बच्चो के साथ ओकायो की भी ट्रेनिंग शुरू हो गयी, और गुरू ने उसे केवल एक ही किक मारने की प्रैक्टिस करने को कहा। गुरू ने कहा कि तुम केवल एक की किक की प्रैक्टिस रोजना करो। लगभग दो महीने बीत गये ओकायो केवल एक ही किक मारने की प्रैक्टिस करता रहा। ओकायो ने देखा सब बच्चे अलग–अलग चीज सीख रहें है, मै केवल रोज दो महीने से एक ही प्रैक्टिस कर रहा हूँ। मैं किसी को कैसे हराऊंगा। गुस्सा होकर ओकायो अपने गुरू के पास पहुँचा और कहा गुरूजी आप सभी को अलग–अलग चीज सिखा रहे हो और मुझे केवल आप किक मारना ही सिखा रहे हो। गुरूजी ने कहा ओकायो अगर सीखना चाहते हो तो जो सिखाया जा रहा है उसे सीखो अन्यथा की स्थिति में यहाँ से जा सकते हो।

उस दिन के बाद से ओकायो चुपचाप अगले छः महीने तक उस किक की प्रैक्टिस करता रहा और जब उसकी ट्रेनिंग पूरी हुई तो गुरूजी ने सभी बच्चों को बुलाया जिन्होंने ओकायो के साथ ही ट्रैनिंग को पूरा किया था। और कहा अब सबकी परीक्षा का दिन आ गया है और उन्होंने एक निधार्रित दिनां को उनका टूर्नामेंट रखा ओर कहा कि जो इस टूर्नामेंट को जीतेगा वो मास्टर बनेगा। टूर्नामेंट शुरू हुआ ओकायो का जो विरोधी था, वह बहुत शक्तिशाली था, लेकिन ओकायो का विरोधी सोच रहा थ कि ओकायो का तो एक हाथ भी नहीं है। ओकायो भी अपने आप में बहुत डरा हुआ था जबकि ओकायो का विरोधी अत्यन्त आत्म विश्वास में था और उसने ओकायो को कमजोर समझ यिा लेकिन मौका पाकर ओकायो ने उसी किक को मारा जिसकी उसने प्रैक्टिस की थी। और उसका विरोधी धराशायी हो गया ओर ओकायो मास्टर बन गया। मैच के बाद ओकायो ने गुरूजी से पूछा कि मैं मास्टर बन गया हूँ केवल एक किक की वजह से ये कैसे हुआ गुरूजी ने कहा तुम्हारे जीतने की दो वजह है, जिनमे एक किक जो बहुत कठिन किक है जिसके तुम मास्टर हो ओर दूसरा उस किक को कारने के लिए एक ही तरीका है कि विरोधी का बांया हाथ पकड़ कर जमीन पर पटक दो, मगर तुम्हारे पास तो बांया हाथ है ही नहीं है। मैंने तुम्हारी कमजोरी को ही तुम्हारा हथियार बना दिया है।

लगभग आप की और हमारी जिंदगी में भी यही हो रहा है। हम अपनी कमी को इतना हावी कर लेते है कि हम कुछ कर ही नहीं पाते। ओकापो चाहते तो वो भी बहाना बना सकता था कि मेरा तो बायां हाथ की नहीं है। लेकिन उसके सपने इतने बड़े थे और उसे ऐसे गुरू मिले जिन्होने उसे मास्टर बना दिया।

"वैराग्य से बोध की ओर"

सत्यपाल सिंह लोधी
प्रवक्ता - हिन्दी विभाग

जब आग की लपेट विकराल रूप धारण करती है, तब उनकी चपेट में आकर बड़ी से बड़ी वस्तुएँ भी देखते-देखते खाक हो जाती है। एक जलते हुए दीपक की अग्नि को बुझाना आसाना है। उसे फूँक मारकर भी कोई बुझा सकता है, पर वहीं अग्नि जब विकराल रूप धारण कर लेती है जब वह पल भर में ही सब कुछ स्वाहा कर देती है।

वैराग्य की अग्नि भी कुछ ऐसी ही होती है जब वह किसी के अंतस में सुलगती है धधकती है तो पल भर में ही वह वासनाओं के बहते दरिए को सौख लेती है, वासनाओं के समुद्र को सोख लेती है, कामनाओं के बड़े-बड़े पर्वतो को भ जलाकर खाक कर देती है। वैराग्य की एक छोटी सी चिनगारी तो बुझाई जा सकती है। पर वैराग्य की वही छोटी सी चिनगार जब निर्यामत योग यज्ञ ध्यान और गुरू कृपा से विकराल रूप धारण कर लेती है दावानल बन जाती है तब वह फिर किसी के बुझाए नहीं बुझती। फिर तो वह काम क्रोध, लोभ योह राग-द्वेष आदि निम्नगामी प्रवृत्तियों, दुर्गुणों के बड़े-से-बड़े समुद्र को भी सोख लेती है, दुर्गुणो के बड़े-से-बड़े पर्वतो को भी जलाकर राख कर देती है।

साधना के शिखर पर पहुँचे सभी साधको, योगियों को जीवन में वैराग्य की यही अग्नि अपने चरम पर होती है, अपने शीर्ष पर होती है। इसलिए वे राग द्वेष, शुभ-अशुभ हर्ष-विवाद सुख-दु:ख आदि सभी छंदो से परे और उनले मुक्त होते है। फिर वो संसार का बड़े -से बड़ा आकर्षण भी उन्हें आकर्षित नहीं कर पाता।

जब राजा शुद्वोधन को पता चला कि उनका पुत्र आगे चलकर वैरागी, सन्यासी हो सकता है तो उन्होंने अपने पुत्र सिद्धार्थ के लिए योग-विलास का भरपूर प्रबंध कर दिया। तीन ऋतुओं के लायक तीन सुन्दर महल बनवा दिए। वहाँ नाच-गान और मनोरंजन की सारी सामग्री जुटा दी गई। दास-दासी उनकी सेवा में रख दिए गए पर ये सारी चीजें सिद्धार्थ को इंसार में बाँधकर नहीं रख सकी। विषयों में उनका मन फँसा नही ंरह सका। अन्तत: वे अपनी सुन्दर पत्नि यशोधरा, दुधमुँहे राहुल और कपिल वस्तु जैसे राज्य का मोह छोड़कर तपस्या के लिए निकल पड़े। वे अंत में गया के पास एक पीपल के वृक्ष के नीचे जा बैठे। वही सोव्यीय नामक एक घसियारे ने उन्हें आठ मुद्रीधास दी। धास को उन्होंने पूर्व दिशा की और रखकर उसकी आसनी बनाई और इस प्रतिज्ञा के साथ उस पर ध्यान में बैठे गए कि जब तक वे बौध प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक वहाँ से नहीं उठेंगे और अतत: वर्षा की कठिन तपस्या के बाद उन्हे ज्ञान की प्राप्ति हुई।

पूर्वजन्म के संस्कारों के ाकरण महावीर स्वामी के अतस में भी वैराग्य की अग्नि जल रही थी। इसलिए राजसी वैभव के बावजूद उनका मन राज पाट में नहीं लगता था। ऊँचे महल और शानोशौकत भी उन्हें फीके जान पड़ते थे और इसलिए तीस वर्ष की अवस्था में सारे राजसी सुख वैभव का परित्याग कर सच्चे ज्ञान की खोज में निकल पड़े। करीब साढ़े 12 वर्ष की कठार तपस्या के बाद उन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई।

उसी प्रकार मात्र 16 वर्ष की अवस्था में मूलशंकर के मन में वैराजय धारण करने की इच्छा उत्पन्न होने लगी ओर अतत 21 वर्ष की अवस्था में उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिए धर त्याग दिया। अत में विभिन्न धर्मस्थलों का भ्रमण करते हुए मथुरा में वे स्वामी विरजानंद के शिव्य बने। उनसे दीक्षा लेकर उनकी ज्ञानपिपासा शात हो गई। गुरू ने मूलशंकर का नया नाम दयानंद रखा। गुरू ने कहा- "दयानन्द संसार की दशा की ओर दृष्टिपात करो। वह रसातल को प्राप्त हो रहा है। वेदों की ध्वर्नि सारे विश्व में गूंजा दो, यही मेरी गुरू दक्षिण है"

अपने अतंस में वैराग्य की अग्नि धारण किए आचार्य शंकर भी आठवर्ष की अवस्था में ही सन्यास ग्रहण कर नर्मदा नहीं के तट पर पहुँचे, जहाँ उनकी भेट पर्वत की गुफा में ध्यानस्थ महान योगी गोविन्द भगवत्पाद से हुई। गुरू ने तेजस्वी शंकर को अपना शिष्य स्वीकार कर उपदेश दिया तथा आज्ञा दी की तुम अवैदिव मतों का खडन कर जन-जन में वेदांत समत अद्वैत मत का प्रतिपादन करो और ब्रह्मसूत्र की रचना को। शंकर जीवन पर्यत गुरू की आज्ञापालन में लगे रहे। यही कारण है कि वैराग्य से अनेक लोग ज्ञान की प्राप्ति कर चुके है। ज्ञान ही सर्वोपरि है। सारी समस्याओं की जड़ अज्ञान है।

"शिक्षा व्यवस्था"

योगेश कुमार लोधी
Mathmatics Department

शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की जरूरतः-

शिक्षा व्यवस्था देश के निर्माण में सबसे प्रमुख साधन है, क्या हम शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन और प्रयोग को प्रतीयोगी कर रहे है, जब तक प्रयोग नहीं रकेगें तब तक यही हाल रहेगा जो आज है- यानी बेरोजगारी की लम्बी कतार की स्वरोजगार के लिए कोई तैयार नहीं !

जरूरी है व्यवहारिक ज्ञानः-

आज की शिक्षा व्यवस्था में खाली शैक्षणिक व्याखान होते हैं और व्यवहारिक (प्रैकिटल) ज्ञान का बहुत कम जोर दिया जाता है। कक्षा का आकार बढ़ाया जा रहा है पर गुणवत्ता पर जोर नहीं है, शिक्षा विभाग के नये मापदण्डो के अनुसार कक्षा का आकार 900 स्कवायर मीटर कम से कम होना चाहिए। यानी एक कक्षा में 80-90 विद्यार्थियों होना तब है जब कि आदर्श रूप में सिर्फ 15-25 विद्यार्थी ही होने चाहिए ताकि विस्तार से चर्चा हो सके। हर सैद्धान्तिक चर्चा के बाद कम से कम 2 घण्टे तक उसके अभ्यास की व्यवस्थाहोनी चाहिए लेकिन ऐसा नहीं है।

सादगी-सौभ्यता की जरूरतः-

शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थी कों सादगी सौभ्यता और शिष्टाचार और विनम्रता के बीज वो सकता है।

सहशैक्षणिक गतिविधियों पर बलः-

हर संस्था को सह शैक्षणिक गतिविधियों पर बल देना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास हो सकें।

खुली पुस्तक की परीक्षाः-

विद्यार्थियों को तोता नहीं बनाना है, बल्कि एक कुशल और समझदार व्यक्ति बनाना है खुली पुस्तक परीक्षा में प्रश्न व जटिल और प्रैक्टिकल होते हैं और विद्यार्थी पुस्तक की मदद में उन प्रश्नों का समाधान खोजता है, यह एक सही तरीका है, विद्यार्थी प्रयास करते करते अपने विषय में दक्ष बन जाता है।

नवाचार जिज्ञासा को बल मिलेः-

हर विद्यार्थी जिज्ञासा और नवाचार का मण्डल होता है, औरउसको प्रोत्सहान मिले तो वो कमाल कर सकता है, लेकिन ऐसा नहीं होता है और हर कदम पर उसको हतोत्साहित किया जाता है जरूरी है कि व्यवस्था में परिवर्तन हो तो नवाचारी विद्यार्थी को हर नवाचार पर पुरस्कार मिले।

आर्टिकल की खोज

नितीश सिंघल
बी0एड0, द्वितीय वर्ष

स्कूल में छप रही पत्रिका
मिला मुझे समाचार।
सोचा मैंने लिख डालूं मैं भी?
आर्टिकल दो चार।
कोई कहानी, कोई कविता
या कोई चुटकुले बाजी।
पर कुछ भी अच्छा लिखने को,
न हुई मेरी कलम राजी।
सुई से लेकर हाथी तक,
हर टॉपिक पर मैंने सोचा।
यहाँ तक कि रात को जगकर
बालों को अपने नोंचा।
मेरे दिमाग के तोतों ने ली,
धीरे से अंगडाई,
और मेरे मन के कोने में
लिखने की सोच जगाई।।
किसी तरह सुबह होने तक,
मैं यह कविता लिख पाया।
किन्तु लिखने के बाद में जब
मन अलग हौंसला लाया।।

जीवन की महत्ता तथा विद्या क दान की महत्वता

तुंगवीर सिंह
परास्नातक (भौतिक विभाग)

जीवन क्षणभंगुर है, कुछ पता नहीं कब क्या हो जाये। संसार घटनाओं का प्रवाह है, हर-पल कहीं खुशी, तो कहीं गम है। कोई सम्पन्न है, तो कोई विपन्न है। ईश्वर ही सबका कर्त्ता-धर्त्ता है। देने पर आये तो सब कुछ दे दे, और यदि लेने पर आए तो कुछ न छोड़े। मनुष्य थोड़ी सी जिन्दगी लेकर आता है और समाज में ऐसे रहता है, जैसे अमृत पीकर आया हो। संसार में तरह-तरह के कलह-क्लेश हैं। व्यक्ति भूला रहता है कि एक दिन यह संसार छूटना है। नदी का प्रवाह वापस नहीं लौटता यदि पेड़ से पत्ता टूट जाये तो उसे पेड़ पर वापिस नहीं लगाया जा सकता, उसी प्रकार हमारा जीवन है, जो चला गया, उसे वापिस नहीं लाया जा सकता, क्योंकि कहा भी गया है -

''जीवन का मूल्यांकन कीजिए, क्योंकि गया हुआ जीवन,
कोटि-कोटि मुद्राएँ देने पर भी वापिस नहीं आता।।''

लेकिन घबराइये मत जो चला गया उसे जाने दीजिए, लेकिन जो बचा है वह गये हुए से ज्यादा मूल्यवान है। यह बात मनुष्य को स्व्यं विचारनी चाहिए कि मनुष्य का जीवन बहुत ही भाग्य से मिलता है। इसके लिए धर्म-ग्रन्थ प्रमाण हैं। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में भी कहा है कि -

''बड़े भाग्य मानुष तन पावा।''

मनुष्य ज्ञानवान, विचारशील प्राणी है। तब भी वह अँधेरे में विचरण कर रहा है। अपने चैतन्य स्वरूप का अनुभव उसे नहीं हो रहा है। आनन्द का पूर्ण प्रभाव मनुष्य के चारों तरफ फैला हुआ है। किन्तु फिर भी वह उदास हैं प्रया: देखने में आता है कि समाज में रहकर उलझनें नित्य-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं और मनुष्य को सुलझने का मौका नहीं मिल पा रहा है। मनुष्य इस दुनियाँ में उलझनें नहीं बल्कि कर्म करने और कर्मों का फल भोगने आया है। कर्म विकारों से ग्रस्त व्यक्ति सुखी नहीं रह सकता। मानव के अन्दर अनन्त शक्तियाँ विद्यमान हैं। जिन्हें पदार्थों के संग्रह में नहीं लगाना चाहिए। किए गए सुकर्म, सेवाएँ, प्रेम और प्रभु भक्ति ही साथ जानी है। इस मनुष्य शरीर से जितना अधिक से अधिक दूसरों का भला हो सके, करना चाहिए। यही मानव जीवन की सार्थकता है।

विद्या के दान का महत्व - विद्यादान के विषय में चिरकाल से ही विद्वानों और बुद्धिजीवी वर्ग का मत रहा है कि -

''विद्या का दान, अदभुत दान है। यह सभी गुणों की शान है।
इस दान के बिन आदमी, रहता पशु समान है।।''

अगर हम दान के विषय की चर्चा करें तो भूतकाल से विभिन्न प्रकार के दान-प्रदान करने की महिमा रही है, जैसे- रोटी का दान कपड़ों का दान, रक्तदान, बेटी का दान, लेकिन इन सभी दानों में विद्या के दान का अद्वितीय स्थान रहा है। क्योंकि यह एक विशेष प्रकार का दान है, जो अज्ञानता रूपी अन्धकार को पल भर में मिटा देता है। दीपक का प्रकाश तो क्षणभंगुर है। उसी प्रकार सूर्य का प्रकाश है, जो दिन में भी कमरे के कोने को अंधकार में डूबे रहने देता है। लेकिन विज्ञा के ज्ञान के प्रकाश से तो मानव का बाहरी नहीं बल्कि आन्तरिक मन जगमगा उठता है। वह क्षणभंगुर नहीं है बल्कि वह तो ऐसा प्रकाश है जो कोने-कोने में प्रकाश की ज्योति को प्रज्ज्वलित कर देता है।

यदि किसी को रोटी का दान दिया जाये तेा उसकी भूख मिट सकती है और कपड़ों का दान दिया जाये तो अबला अपना तन ढ़क सकती है। रक्त का दान दिया जाये तो किसी का जीवन बच सकता है और बेटी का दान दिया जाये तो जीवन की नियति चल सकती है।

इन सब दानों को दान करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि इसके लिए भी एक ज्ञान प्रकाश की

आवश्यकता होती है। क्योंकि यदि किसी मूर्ख अथवा अज्ञानी व्यक्ति को रोटी, कपड़ा व रक्त देकर यदि जीवित रखा जाये तो क्या अंधकार को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा, अर्थात अवश्य मिलेगा। अत –

''यह दान उसको दीजिए, जिसे इस दान की चाह ।
मूर्ख को दिया दान कहीं, तो विद्या व्यर्थ हो जाये ।।''

इसी प्रकार यदि किसी अज्ञानी व्यक्ति को कन्या दान दे दी जाये तो उसके मासूम स्वप्न तो चूर हो ही जायेंगे। बल्कि उसका सम्पूर्ण जीवन एक ऐसी कली की भाँति मुरझा जायेगा। जो समय से पूर्व ही तोड़ ली जाती है और लाख प्रयत्न करने पर भी वह नहीं खिल पाती।

विद्या दान की एक अन्य विशेषता यह है कि इस दान को न तो प्रत्येक दान कर सकता और न ही प्रत्येक गृहण कर सकता, क्योंकि इस दान को प्राप्त करने के लिए सुपात्र की आवश्यकता होती है। विद्या का सागर ज्ञान का सागर है। अत: जिनके पास विद्या का ज्ञानरूपी सागर है। जो व्यक्ति इस विद्यारूपी ज्ञान का दान कर रहे हैं। क्या वह स्वयं को कीर्ति सम्पन्न साबित नहीं कर रहे हैं। अर्थात अवश्य कर रहे हैं।

इसके साथ ही जो व्यक्ति इस विद्या के ज्ञान रूपी सागर से परिपूर्ण है और उसे संचित रखना चाहते हैं वह सर्वगुण सर्ववस्तु सम्पन्न हैं। अत: उनको यह समझना चाहिए कि ज्ञान रूपी सागर अथाह है। यदि इसें से थोड़ा कुछ दान दे दिया जाये तो क्या बुराई है – अत: कहा भी गया है कि –

''दो शब्द इस सागर से देने पर, यह सागर कभी नहीं घटता है,
थोड़ा सा उपकार करो, कोई फर्क नहीं पड़ता है।।''

अत: दान के विषय में एक अभिव्यक्ति इस प्रकार भी प्रचलित है कि –

''दान की सदा जड़ हरी, दान की महिमा बड़ी है।
दानियों के दान की हर समय जरूरत पड़ी है।।''

अत:–

''किसी ने किया रोटी का दान, किसी ने किया बेटी का दान।
किसी ने किया कपड़ों का दान, किसी ने किया रक्त का दान।।''

लेकिन जिसको किया विद्या का दान, उसने पाया जग में नाम।

।। जय हिन्द ।।

कुछ अच्छी बातें

मीनाक्षी सागर
बी0ए0 प्रथम

नहीं खाई ठोकरें सफर में तो
मंजिल की अहमियत कैसे जानोगे
अगर नहीं टकराए ''गलत'' से तो
''सही'' को कैसे पहचानोगे ।।
गलती नीम की नहीं कि वो
कड़वा है
खुदगर्जी ''जीभ'' की है जो उसे
मीठा पसन्द है।
कुछ रहम कर ऐ जिन्दगी,
थोड़ा संवर जाने दे।
तेरा अगला जख्म भी सह लेंगे,
पहले वाला तो भर जाने दे ।।
किसी को गलत
समझने से पहले
एक बार
उसके हालात समझने की
कोशिश जरूर कर लें ।।
अन्धविश्वास एक ऐसी बीमारी है,
जो दूध को फेंकवाती है और
गोबर को पुजवाती है।।
सच्चा रिश्ता एक अच्छी
पुस्तक जैसा होता है
कितनी भी पुरानी हो जाये
फिर भी शब्द नहीं बदलते।।

शिक्षा के साथ–साथ सॉफ्ट स्किल भी जरूरी : क्यों ?

सोमदत्त शर्मा
बी0एड0 प्रथम

वर्तमान में बेरोजगारी की समस्या की तुलना में भारतीय युवा वर्ग के पास ज्यादा रोजगार क्षमता है। यद्यपि रोजगार के अवसर अनेक हैं लेकिन विद्यार्थियों को नौकरी नहीं मिल पा रही है। क्योंकि वह रोजगार क्षमता से लैस नहीं हैं वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञान के प्रसार पर अधिक और रोजगार सृजन पर कम बल देती है। प्रौद्योगिकी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन हमारे देश में शिक्षा प्रणाली ने बदलते समय के साथ कदमताल नहीं किया है।

दरअसल वर्तमान भारतीय प्रणाली में कला एवं शिल्प के बीच बड़ी खाई है। कला तो ऐसी चीज है जिसे पुस्तकों में पढ़ा जाता है। इसके विपरीत, शिल्प के लिए अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए, भारतीय शिक्षा में कला एवं शिल्प का मिश्रझा समय की माँग है, जिससे भारतीय युवा वर्ग में रोजगार क्षमता बढ़ायी जा सके। नियोक्ता प्राय: योग्यता एवं अनुभव के साथ कौशल की तलाश में रहते हैं।

कोई भी व्यक्ति सॉफ्ट स्किल के जरिए रोजगार क्षमता हासिल कर सकता है। कुछ लोग सॉफ्ट स्किल को रोजगार क्षमता के कौशल कहते हैं, क्योंकि वह रोजगार हासिल करने में सहायक होते हैं। प्राय: लोग सोचते हैं कि सॉफ्ट स्किल संवाद कौशल है। ये संवाद कौशल से भी कहीं अधिक है। सॉफ्ट स्किल कौशल क्षमताएं और व्यक्तित्व, दृष्टिकोण व व्यवहार से सम्बन्धित विशेषतायें हैं, जैसे टीम बनाना, नेतृत्व प्रेरणा, समय प्रबंधन, प्रस्तुति, कौशल इत्यादि। इन कौशलों को व्यक्ति कौशल, भावात्मक बुद्धि, सामाजिक कौशल और पारस्परिक कौशल के नाम से भी जाना जाता है।

उद्योग जगत के सूत्रों से पता लगा है कि भर्ती होने वाले पाँच लोगों में से केवल एक के पास ही सॉफ्ट स्किल होती है। इसका मतलब यह है कि बहुत से लोग सॉफ्ट स्किल से परिचित नहीं होते और उनमें ये कौशल नहीं होते।

सॉफ्ट स्किल व्यवहार कौशल होते हैं जबकि हार्ड स्किल तकनीकी कौशल होते हैं। सॉफ्ट स्किल ने केवल रोजगार में प्रवेश के स्तर पर लोगों की मदद करते हैं, बल्कि पढ़ो एवं वरिष्ठ स्तर पर लोगों की मदद करते हैं। क्योंकि ये पारस्परिक कौशल नीचे से ऊपर तक अनिवार्य होते हैं।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय ने बताया कि केरियर में किसी व्यक्ति की उपलब्धियाँ 80 प्रतिशत सॉफ्ट स्किल से और 20 प्रतिशत हार्ड स्किल से निर्धारित होती हैं।

उदाहरण के लिए यदि शिक्षण हार्ड स्किल में अच्छे हैं और सॉफ्ट स्किल में कमजोर है तो वे सफल शिक्षक नहीं हो सकते। शिक्षक जो विषय पढ़ाते हैं उसके बारे में उन्हें बहुत ज्ञान हो सकता है। शिक्षक अगर संवाद और पारस्परिक कौशलों में कमजोर हो तो बहुत ज्ञानवान होना भी विद्यार्थियों को संभालने में सहायक नहीं होता। शिक्षक अपने ज्ञान का प्रभावशाली ढ़ंग से प्रसार तभी कर सकते हैं जब विद्यार्थी कौशलों के अनुकूल बनने की दिशा में अपनी अभिरूचि के हित में उसे अच्छी तरह समझ सकें।

जब आप रोजगार के लिए आवेदन कर रहे हो, तो हम सोचते हैं कि नियोक्ता हमारे तकनीकी कौशल पर अधिक ध्यान देता है, ऐसी हार्ड स्किल जो हमें वह कार्य करने के लिए सक्षम बनाती है। हार्ड स्किल भी सॉफ्ट स्किल की तरह ही महत्वपूर्ण है।

तो ये मुश्किल से पकड़ में आने वाली सॉफ्ट स्किल है क्या ?तकनीकी कौशलों (हार्ड स्किल) अपने कार्य के अनुरूप विशिष्ट प्रशिक्षण और क्षमता के विपरीत सॉफ्ट स्किल उद्योग मकें सब जगह व्याप्त है और रोजगार के इच्छुक

सभी लोगों, विद्यार्थियों और वर्तमान कामगारों के लिए आवश्यक कौशल है। रोजगार के इच्छुक अनेक लोगों के पास यह तकनीकी जानकारी तो होती है कि काम कैसे करते हैं लेकिन शीर्ष पर पहुँचने वाले आवेदकों के पास व्यक्तिगत गुण होते हैं जो उन्हें रोजगार के इच्छुक अन्य लोगों पर अतिरिक्त बढत दिलाते हैं

अच्छी खबर यह है कि आप सॉफ्ट स्किल के साथ-साथ हार्ड स्किल भी सीख और विकसित कर सकते हैं। बुरी खबर यह है कि ऐसा करना प्रायः बहुत कठिन होता है और सफलता का कोई आसान उपाय नहीं है।

बढ़ते ज्ञानवान कामगारों एवं सेवा क्षेत्रों ने कामकाजी माहौल को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। जिसे कौशलों की अत्यधिक आवश्यकता है। कार्यस्थल में बढ़ते मानवीय स्वभाव के कारण संगठनात्मक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए लोगों पर टीम के रूप में काम करने का दबाब बना है। यह लोगों को सॉफ्ट स्किल से लैस किए बिना सम्भव नहीं है। सॉफ्ट स्किल आपको सच्चे मानव के रूप में विकसित होने में सहायता करता है।

व्यक्तिगत तौर पर सॉफ्ट स्किल इंसान के आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास को बढ़ाते हैं। ये व्यक्तियों के निजी एवं प्रोफेशनल प्रगति सुनिश्चित करते हैं। प्रोफेशनल स्तर पर, ये नियोक्ताओं और कर्मचारियों के लिए अनेक अवसर प्रदान कराते हैं। इन कौशलों के कारण संगठनों में विविध प्रकार के व्यवहार वाले लोगों के साथ काम करना आसान हो जाता है। ग्राहकों को संभालने और उनके साथ मोल-भाव करने से नियोक्ताओं के लिए बिजनेस के अवसरों को प्रोत्साहन मिलता है। इनकी मदद से कम्पनी अपने प्रतिद्वंद्वियों से आगे निकल सकती है। ये कौशल विद्यार्थियों को रोजगार हासिल करने में सक्षम बनाते हैं।

यकीनन यह सूची विस्तृत नहीं है और ऐसे कौशलों पर एक नजर मात्र है जो आपको चाहिए। इनसे आपको पता चलेगा कि ऐसे बहुत से कौशल हैं। कोई नियोक्ता या व्यक्ति इस पर या अन्य कौशलों पर ज्यादा या कम बल दे सकता है।

यद्यपि इस सूची में दिये गये कौशलों पर काम करने से रोजगार तलाशते समय अच्छी मदद मिल सकती है। किसी भी नौकरी या कैरियर में और सामान्य जीवन में भी ऐसे कौशल उपयोगी होते हैं।

जीवन का अर्थ

कु० चमन चकोर
बी0एड0 प्रथम

हरी घास के बीच एक सूखी घास का तिनका पड़ा था। उसे देखकर हरी घास उसके निष्क्रिय, अर्थहीन जीवन पर खिलखिलाकर हँस पड़ी और हँसते हुए वह कहने लगी, ''अरे, सूखे रसहीन तिनके, तेरा हम हरे-भरों के बीच में क्या काम ?'' हरी घास का तिनका यह ताना सुनकर सूखे तिनके को अपने रसहीन जीवन का अफसोस होने लगा ओर वह उदास रहने लगा। तभी तेज हवा का झोंका आया और हरी घास उसमें झूमने लगी। परन्तु सूखा तिनका फुर्र से उड़कर पास में स्थित एक पानी में हौज में जा गिरा, उस हौज के पानी में एक चींटी अपनी जिन्दगी बचाने के लिए मौत से लड़ रही थी, कि अचानक उसके सामने वह सूखा हुआ तिनका आ गया।

चींटी फौरन उस तिनके को पकड़कर उस पर बैठ गई। थोड़ी देर में उस तिनक के सहारे वह किनारे पर आ गयी और हौज की दीवार पर चढ़ गई अपनी जान बच जाने पर चींटी ने उस सूखे तिनके को धन्यवाद दिया इस पर तिनका बोला, ''धन्यवाद तो आपका है, जिसने मेरे अर्थहीन जीवन का अर्थ मुझे समझा दिया है।''

जब पिता ने ही बेटे को ठग लिया !

नेहा

बी0एड0 प्रथम

उस दस साल के मासूम की आँखों में आंसू रोके नहीं रूकते थे। मुर्गियाँ बेचकर और पड़ोसियों के काम कर जो थोड़े पैसे जुड़े थे, उन्हें उसके ही बाप ने झूठ बोलकर हड़प लिये थें जब तक बेटा हुए नुकसान को अपनी उंगलियों पर जोड़ पाता, तब तक बाप वहाँ से नौ दो ग्यारह हो चुका था। पहला दु:ख तो यही था कि मेहनत की कमाई चली गई। दूसरा दु:ख यह कि सगे पिता ने ही ठग लिया, और तीसरा दुख यह कि पिता गए, तो अब न जाने कब लौटेंगे। वह मासूम बाहर से जितना रो रहा था, उससे कहीं ज्यादा अंदर सिसक रहा था। मन हुआ कि माँ के पास दौड़कर चला जाए, लेकिन ऐसा कोई पहली बार तो नहीं हुआ था। क्या यही वह पापा हैं, जिनका वह दो महीने से इंतजार कर रहा था कि पापा आएंगे तो ये लायेंगे, वो लायेंगे, ढेर सारे किस्से सुनाएंगे। कल ही तो, दिनों बाद पिता को देखकर वह खुशी से चहक उठा था, पिता रात रूके, फिर सुबह ही निकल पड़े। गए तो गए, फिर ठगी कर गये। कोई बाप अपने बेटे को ठगता है क्या, क्या कोई बाप ऐसा भी होता है ?वह मासूम जितना सोचे जा रहा था, उतना ही रोए जा रहा था। दूसरे बच्चों के भी पापा हैं, कितना प्यार करते हैं। साथ रहते हैं, घूमते-घुमाते हैं, उपहार देते हैं और न जाने क्या-क्या करते हैं।

वह मासूम सोचते-सोचते दुख से कॉप उठा। उसके ही पापा ऐसे क्यों हैं ?आस-पास कोई नहीं, जो उसके पापा की तारीफ करता हो। सभी उनहें बुरा कहते हैं। सुना है कि पापा का कही एक और परिवार भी है। पापा ने न जाने कहाँ-कहाँ रिश्ते फँसा रखे हैं, तभी तो वह साथ नहीं रहते। सुबह आते हैं, तो शाम को चले जाते हैं। कुछ देर अगर ठहरते भी हैं, तो शायद किसी को ठगने के लिए या फिर किसी से डॉलर ऐंठने के लिए। वह अपना मकसद पूरा होते ही झट निकल लेते हैं, जैसे आज अपने बेटे को ही बनाकर निकल गए। जब अगली बार आएंगे, तो मानेंगे भी नहीं कि ठगी कर गए थे। हर बार यह भी लगता है कि इस बार पापा नहीं ठगेंगे, पर पापा हैं कि सुधरते नहीं।

किसी के पापा इतने भी बुरे होते हैं क्या ?माँ ज्यादा बोलती नहीं है पर अन्दर ही अन्दर सिसकती रहती हैं उस मासूम को याद आया कि माँ ने मजबूर होकर अपना क्या गम बयां किया था। कभी पिता लकड़हारा थे, फिर जड़ी-बूटी बेचने वाले स्वघोषित हकीम हो गए। घर-घर घूमकर बेचते थे। माँ के घर भी सामान बेचने जाते थे, लेकिन गूंगा बनकर। सहानुभूति बटोरने के लिए स्लेट पर लिखकर अपनी बात कहते थे। माँ के मन में ख्याल आया था कि कि अगर यह गूंना न होता तो शायद इससे शादी कर लेती। आते-जाते पिता ने माँ के मन की बात जान ली और फिर अपना आधा सच बता दिया कि वह गूंगे नहीं हैं, पिता ने पता कर लिया था, शादी करने से ससुर से 500 डॉलर मिलेंगे।

यह याद आते ही माँ के लिए भी खूब आंसू उमड़े थे। इतना बदनाम भी कोई होता है क्या ?दिमाग में यह ख्याल आया कि यहाँ रहे, तो समाज में बदनामी भी होगी और बार-बार अपने के हाथों ठगे भी जाएंगे। पिता के चंगुल से माँ नहीं निकल पाएगी लेकिन कुछ तो करना ही होगा, ताकि ऐसे पिता का साया भी न पड़े। तब उस मासून ने अपने दिल को मजबूत कर लिया और आंसू पोंछ लिए। यह सोचना शुरू किया कि यहाँ से कैसे भाग जाए ?

परिवार इतना दागदार था कि बाकी बच्चों के साथ सहज होने में परेशानी आती थी। स्कूल की पढ़ाई में मन नहीं लगता था, तो स्कूल छोड़कर उसने स्थानीय स्तर पर ही प्रबंधन का एक कोर्स किया। कोर्स करते ही महज 16 की उम्र में वह एक दिन घर से भाग छूटा। पिता के स्याह सायों से दूर उसने खुद को ऐसे खड़ा किया कि दुनिया बोल उठी, वाह, जॉन डी रॉकफेलर (1839-1937) तुमने कमाल कर दिया। तेल रिफाइनरी के उद्योग से वह पहले अमेरिका और फिर दुनिया का सबसे अमीर उद्यमी बन गया।

बाप से दूर भागे बेटे की ख्याति इतनी ज्यादा हो गई

कि बाप को न केवल छिपकर रहना पड़ा, बल्कि अपना नाम तक बदलना पड़ा। हालांकि यहाँ भी वह बाप, जिसे लोग 'शैतान-बिल' के नाम से जानते थे, अपनी आदत से बाज नहीं आया। उसने अपना नया नाम रखा - डॉ0 विलियम लेविंग्सटन। उसने अपनी सफाई में कहा था, हाँ, मैं अपने लड़कों को ठगने का एक मौका नहीं छोड़ता था। मैं उन्हें मजबूत बनाना चाहता था।' खैर वह बेटा कभी-कभी बाप से छिपकर मिलता तो था, लेकिन दिल में गम और नफरत की गांठ ऐसी थी कि वह बाप का कहीं जिक्र आते की खामोशी ओढ़ लेता था।

ओलम्पिक खेलों की तिथि ज्ञात करना

स्नेह शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

शर्त - खेल होने का अन्तराल 4 साल का हो।

स्टेप-1 जिस तिथि को ज्ञात करना हो उसमें 4 से गुणा कर दो।

स्टेप-2 गुणा के बाद जो संख्या आए उसे 1896 में जोड़ दो।

स्टेप-3 जोड़ के बाद आयी हुई संख्या में से 4 घटा दें।

वही संख्या आ जायेगी जिसे आप ज्ञात करना चाहते हैं।

उदाहरण -13वीं ओलम्पिक खेल की तिथि ज्ञात करो -

स्टेप-1 13 ग 4 = 52

स्टेप-2 1896

+ 52

1948

स्टेप-3 1948 - 4 = 1944

उत्तर- अत: 1944 में 13 वें ओलम्पिक खेल हुए थे।

जीवन का लक्ष्य

नारायण देव मिश्रा
कार्यालय दफ्तरी

मानव के अंदर अनंत शक्तियाँ हैं। परन्तु प्रत्येक मानव अपने अनुसार जीवन जीता है। अधिकतर लोगो के अन्दर शक्तियाँ सुप्तावस्था में विद्यमान रहती हैं। लोग उन्हें पहचान नहीं पाते हैं। हम उन्हें हनुमान के बल के समान ही तब तक भूल रहते हैं, जब तक जामवंत जैसा कोई हमें हमारे लक्ष्य की याद नहीं दिलाता। हम अपने यथार्थ की खोज करते हैं। किन्तु उसमें विरला ही कोई ऐसा है, जो अपने आत्म-बल को निरन्तर याद रखता है और अपने लक्ष्य को पाकर जीवन सार्थक बनाता है। क्योंकि हम अपने जीवन को ही कहाँ पाते हैं। हम तो उसका आंशि काल ही अपने वास्तविक जीवन को दे पाते है। जब तक उन शक्तियों का आत्मज्ञान हमें होता है। तब तक हम जीवन के अन्तिम पड़ाव पर होते है। मनुष्य से अधिक शक्तिशाली पशु तो सर्वोपरि नहीं है, उसके पास मानसिक शक्ति नहीं है। बल है, लक्ष्य नहीं कर्म है, किन्तु तर्क शक्ति नहीं, विवेक नहीं पाप, पुण्य से परे स्वार्थरत परमार्थ से परे परवश है, हम मानव है, हमें अपनी मानसिक शक्तियों का विकास करना है, हमारा जीवन सक्रिय हो ओर कर्म से सृजनता हो। हम सृजंन को छोड़कर लक्ष्य-विहिन दिशा में दीन हीन होकर बने रहना चाहेंगे तो यह हमारा दुर्भाग्य होगा। जिस प्रकार इस रत्नगर्भा वसुन्धरा में अनेक निधियाँ व जल स्रोत हैं, किन्तु उन्हें पाने के लिये जब तक सकारात्मक कर्म नहीं करते तब तक उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते। इसी प्रकार जब तक हम सकारात्मक एवं दैवीय शक्तियाँ को पाने में नहीं लगते तब तक हमारे अन्दर के विकारों में न ही कभी आती है और न ही अपने आपको सृजन की ओर उन्मुख कर पाते हैं अपने अन्दर निहित अलौकिक शक्तियों को पाने के लिए मानव, सुकर्म सद्बुद्धि रूपी कुदाल चलाकर धीरे-धीरे अनंत शक्तियों का विकास कर लेता है। जीवन के अंधकार में लाखों मील चलने की अपेक्षा प्रकाश की ओर दो कदम बढ़ाना श्रेयस्कर है। स्वयं दीप्तिमान हो और दूसरो को भी प्रकाशित करें।

पर्यावरण सुरक्षा

सृष्टि
बी0एड0 प्रथम वर्ष

वर्तमान में विश्व के विकसित एवं विकासशील देश मानव समाज की सुख-सुविधाओं में वृद्धि के लिए भौतिक संसाधनों तथा परिवेश का अविवेकपूर्ण दोहन करने में लगे हैं। विकासशील देश औद्योगिक एवं तकनीकी विकास द्वारा विकसित होने का प्रयोग कर रहे हैं। अत: मानव अपने स्वार्थों की आपूर्ति हेतु प्राकृतिक परिवेश के साथ निर्दयता का आचरण कर रहा है और अवांछित परिवर्तन कर रहा है जिस कारण उसका परिवेश प्रदूषित होता जा रहा है। औद्योगिक क्षेत्रों में साँस लेना भी दुर्लभ है। जल के प्रदूषित हो जाने के कारण उसे पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मिट्टी के दूषित हो जाने से बंजर एवं बीहड़ क्षेत्रों का विस्तार होता जा रहा है। इन सभी कारणों से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि होती जा रही है।

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि धरती पर रहने वाले समस्त प्राणी परेशान हैं, पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए दुनिया भर में प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन समस्या कम होने के बजाय साल-दर-साल बढ़ती ही जा रही है। चूंकि यह एक शुरूआत भर है। इसलिए अगर हम अभी से नहीं संभले तो भविष्य और भी भयावह हो सकता है। आगे बढ़ने से पहले हम यह जान लें कि आखिर पर्यावरण अथवा पर्यावरण प्रदूषण है क्या ?

क्या है पर्यावरण ?

पर्यावरण (Environment) फ्रेंच शब्द एनवायर (Environner) से बना है जिसका अर्थ होता है जीवों के आस-पास का समस्त परिवेश (Surroundings)। इसमें जीव की बाहरी परिवेश की समस्त परिस्थितियाँ, अवस्थाएँ एवं प्रभाव सम्मिलित हैं, अत: जीव अपने आस-पास भौतिक अवस्थाओं से आवरित रहता है। जैसे जंगल में खड़ा हिरण अपने आस-पास जंगली शेर, हाथी व पेड़-पौधे जैसे जैविक कारकों से घिरा रहता है तो दूसरी तरफ जब मिट्टी, चट्टान, हवा इत्यादि अजैविक भौतिक कारकों से निर्भर रहता है।

परिस्थितिविज्ञ टैन्सले (Tansley) के अनुसार - ''प्रभावशाली अवस्थाओं व दशाओं का समस्त योग जिसमें जीव आवास करते हैं, पर्यावरण कहलाता है।''

पर्यावरण प्रदूषण - प्रदूषण का सामान्य अर्थ 'मैला होना या दूषित होना' है।

राष्ट्रीय पर्यावरण शोध समिति के अनुसार, ''मानव के क्रिया-कलापों से उत्पन्न उपशिष्ट उत्पादों के रूप में पदार्थों एवं ऊर्जा के निस्तारण से प्राकृतिक पर्यावरण में होने वाले हानिकारक परिवर्तन को प्रदूषण कहलाता है।

अर्थात् पर्यावरण के मुख्य अवयवों वायु जल तथा मृदा के सामान्य गुणों में होने वाला परिवर्तन पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है।

पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव - पर्यावरण दूषित होने के कारण सभी जीवों पर प्रत्यक्ष रूप से दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं जो इस प्रकार हैं -

1. मानव जीवन पर प्रभाव - कारखानों से निकलने वाली गैसें विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म देती हैं। सल्फर डाइ ऑक्साइड से दमा एवं साँस सम्बन्धी रोग, सिलिकायुक्त धूल कणों से फेफड़े सम्बन्धी रोग, कार्बन मोनो-ऑक्साइड से सोचने समझने की शक्ति कम हो जाती है।

   वाहनों से निकलने वाला धुआँ साँस के साथ नाक में जाकर जलन उत्पन्न करता है। वायु में सल्फर डाइ ऑक्साइड एवं नाइट्रोजन ऑक्साइड की अधिकता से कैंसर, हृदय रोग एवं मधुमेह आदि रोग हो जाते हैं।
2. जीव-जन्तु एवं वनस्पति पर प्रभाव - वायु प्रदूषण वाले क्षेत्र में वर्षा होने पर वर्षा के साथ विभिन्न गैसें विशेषकर क तथा अन्य विषैले पदार्थ घुल जाते हैं। जो अम्लीय वर्षा के रूप में धरातल पर प्रकट होती हैं, इससे पौधे नष्ट हो जाते हैं तथा मछलियों एवं अन्य जीवों पर भी

प्रभाव पड़ता है।

3. ओजोन क्षरण का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव
4. हरित गृह प्रभाव
5. ग्लोबल वार्मिंग
6. रेडियोधर्मी प्रदूषण।

पर्यावरण प्रदूषण से बचने के उपाय – पर्यावरण प्रदूषण के प्रति दुनियाभर में चिंता बढ़ रही है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस साल का नोबेल शांति पुरस्कार पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने वाली संयुक्त राष्ट्र की संस्था इंटरगवर्न मेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज और पर्यावरणवादी अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल गोर को दिया गया है। लेकिन सवाल यह है कि क्या पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वालों को नोबेल पुरस्कार देने भर से ही पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से निपटा जा सकता है ?बिल्कुल नहीं, इसके लिए हमें कई प्रयास करने होंगे –

1. जंगलों की कटाई को रोकना होगा। हम सभी अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। इससे पर्यावरण प्रदूषण के असर को कम किया जा सकता है।
2. पर्यावरण प्रदूषण की नियमित मानीटरिंग की जानी चाहिए।
3. वायु प्रदूषकों के ऊपरी वायुमण्डल में प्रकीर्ण करने के विशेष उपाय किये जाने चाहिए इससे धरातल पर प्रदूषकों का सान्द्रण कम हो जाएगा।
4. यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं है। हम सभी भी पेट्रोल, डीजल और बिजली का उपयोग कम करके हानिकारक गैसों को कम कर सकते हैं।
5. टैक्नीकल डेवलपमेंट से भी इससे निपटा जा सकता है। हम ऐसे रेफ्रीजरेटर्स बनाएं जिनमें सी एफ सी का इस्तेमाल न होता हो और ऐसे वाहन बनाएं जिससे कम से कम धुआँ निकलता हो।
6. सभी देश म्योटो संधि का पालन करें। इसके तहत 2022 तक हानिकारक गैसों के उत्सर्जन को कम करना होगा।
7. कम वायु प्रदूषण फैलाने वाली ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए। जैसे- कोयले के स्थान पर सौर ऊर्जा से वाहनों का संचालन, औद्योगिक अपशिष्टों के उपचार की व्यवस्था की जानी चाहिए।
8. ऐसा न करने वाली औद्योगि इकाइयों पर वैधानिक नियमों का कड़ाई से पालन कराने की योजना होनी चाहिए।
9. पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए सामान्य जनता में जागरूकता लाई जानी चाहिए।
10. फसलों पर जहरीले कीटनाशकों को छिड़काव विवेकपूर्ण ढ़ंग से किया जाना चाहिए।

अपना पन

सरिता

बी0एड0 प्रथम

ये क्लास हमारी बी0 एड0 की सच में बड़ी निराली है।
ऐसा यहाँ माहौल मिला जैसे चहुँ ओर हरियाली है।
जगह–जगह से लोग हैं आए भाँति–भाँति की बोली है।
फिर भी हमको ऐसा लगता जैसे अपनों की टोली है।
साथ रहो और साथ दो तुम अपना फर्ज निभाओ तुम,
जो भी है जैसा है सबको गले लगाओ तुम।
सबको अपना दोस्त ही समझो मिलकर सुख–दुख बाँटो तुम।
विषम परिस्थितियों में भी मिलकर हँसके उसको काटो तुम।
जब भी तुमको भूख लगे तो बगल जुगाड़ बनाओ तुम।
अगर जुगाड़ में कमी रहे तो छीन किसी का खाओ तुम।
भाईचारा बना रहे नहीं किसी का दिल दुखाओ तुम।
फिर भी गलती यदि हो जाए, उसको गले लगाओ तुम।
हँसते आओ, हँसते जाओ, सबका दिल बहलाओ तुम।
न कभी किसी की नजर लगे, न कभी कहीं मुरझाओ तुम।

लक्ष्य

प्रवीन कुमार
बी0एड0 प्रथम

'विकल्प मिलेंगे बहुत मार्ग भटकाने के लिए,
संकल्प एक ही काफी है मंजिल तक जाने के लिए।'

सजीव हो या निर्जीव, सभी के अस्तित्व का कुछ न कुछ औचित्य होता है। मनुष्य के संदर्भ में विशेष यह है कि मानसिक अद्विकास ने मनुष्य के जीवन में औचित्य के अतिरिक्त एक अन्य तत्व 'लक्ष्य' का समावेश किया है। जीवन में 'लक्ष्य' की उपस्थिति मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करती है। वस्तुतः सभी मनुष्य अपनी परिस्थितियों का उत्पाद होते हैं और यह माना जाता है कि परिस्थितियों की विविधता ही सभी मनुष्यों के लक्ष्यों में विविधता लाती है।

यहाँ एक विचारणीय प्रश्न यह उठता है कि अगर सभी व्यक्तियों के लक्ष्यों के निर्धारण में उनकी परिस्थितियों का योगदान सर्वाधिक होता है तो किसी भी लक्ष्य को छोटा या बड़ा मानने का आधार क्या होना चाहिए ?

मसलन, एक स्वस्थ, सुशिक्षित और सर्वसाधन सम्पन्न व्यक्ति के लिए बड़ी से बड़ी ऊँचाई तक पहुँचने के लिए उसका लक्ष्य क्या किसी अशिक्षित बाल मजदूर के राजगीर (मिस्त्री) बन जाने के लक्ष्य से बड़ा हो सकता है।

विशेष बात यह है कि लक्ष्य का उद्देश्य दरअसल लक्ष्य का ही एक अवयव है जो उसकी गुणवत्ता तत्पश्चात उसके आकार को भी प्रभावित करता है। वस्तुतः आदमी के लक्ष्य ही उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करते हैं और इस बात की बेहतर समझ के लिए मेरी समझ से हिटलर एक बेहतरीन उदाहरण है, कमजोर पृष्ठभूमि से होने के बावजूद एक तरफ जहाँ अपने राष्ट्र का सम्मान वापस लाने का उसका लक्ष्य उसको बड़ा बनाता है, वहीं दूसरी तरफ जर्मनी को यहूदियों से मुक्त करने के उसके लक्ष्य ने उसको छोटा बना दिया।

इसी प्रकार, किसी गृहणी द्वारा घर की सफाई का लक्ष्य किसी भी प्रकार से गृहस्वामी द्वारा घर की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लक्ष्य से छोटा नहीं कहा जा सकता है। घर की सुरक्षा में दी गई ढ़ील हो सकता है संपत्ति का नुकसान करा दे, पर घर की सफाई न होने पर घर में संक्रामक बीमारियाँ फैलने का खतरा लगातार बना रहेगा।

वस्तुतः मेरे जैसे ग्रामीण परिवेश से निकले बच्चे को अपना 'लक्ष्य' घोषित करना एक बड़ी चुनौती रहती हैं ग्रामीण जीवन पर शिक्षा का प्रभाव औपनिवेशिक काल से ही लगभग एक-सा रहा है। जब गाँव का कोई बच्चा अच्छा प्रदर्शन करता था, तो उसका दाखिला पास के ही किसी कस्बे में करा दिया जाता था जहाँ उसकी प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलता था। धीरे-धीरे गाँव, शहरों के लिए प्रतिभाओं के आपूर्तिकर्ता बन गये। केवल वे व्यक्ति ही गाँव की ओर लौटे जो भूमि पर निर्भर थे। समय बीतने के साथ भूमिक का विखण्डन होता गया जिसके परिणामस्वरूप खेती की ओर आकर्षण कम होता गया। हाल के दिनों में निवेशों के माध्यम से भूमि तो अधिक उत्पादक बन गई है परन्तु वास्तविक आय में कोई वृद्धि नहीं हुई है। गैर-कृषिगत कार्यों में काम के अवसर काफी कम हो चुके हैं तथा हाल के वर्षों में रोजगार वृद्धि में भी ठहराव सा आ गया है। उत्तराखण्ड व उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में काम पाने के लिए 'क्रेग जेफ्रे' ने प्रतीक्षा करना जैसी अवधारणा दी है। जिसका एक भाग किसी की आकांक्षाओं (लक्ष्यों) को जीवित रखने के लिए संघर्ष करना है। जबकि अन्य भाग निराशा का जीवन जीना है। 'अदम गौंडवी' साहब की ये पंक्तियाँ ग्रामीण जीवन को चरितार्थ करती हैं-

तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है,
मगर ये आँकड़े झूठे हैं, ये दवा किताबी है।।

आजकल, माता-पिता के लिए अपने बच्चों को उनके सपने पूरे करने के लिए कोचिंग के लिए शहरो में भेजना आम बात है। एक विशाल उद्योग के रूप में अब कोचिंग युवाओं पर अधिक धन व्यय करने का माध्यम बनते जा रहे हैं। अनगिनत युवा पुरूष व महिलायें स्वयं को एक

दुर्जेय स्थिति में पाते हैं, जिसमें न ही उनके पास कोई विकल्प होता है और न ही उन्हें इसकी कोई आशा होती है, कि वे इस स्थिति से उबर सकेंगे। कोचिंग क्लास विद्यार्थियों के ऐसे विशाल समू0ह को शिक्षित करते हैं जहाँ हर कोई एकसमान समस्या का सामना करता है। कोचिंग क्लास में लाखों विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जो ग्रामीण व अर्द्धग्रामीण क्षेत्रों से होते हैं। ये सभी अपनी युवावस्था को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने में बिता देते हैं। अपने लक्ष्य की प्रापित हेतु इतने बलिदान देने के पश्चात भी यदि सकारात्मक परिणाम न मिले तो विद्यार्थियों में एक निराशा छा जाती है, जिसका शिकार संयोगवश मैं भी हुआ। अपनी इस निराशा को कुछ कम करने के लिए ये पंक्तियाँ सदैव मुझे प्रेरित करती हैं –

जिंदगी की राहों में चलते–चलते,
रूकते–थकते, बढ़ते–बढ़ते।
कुछ अनुभव आकर मुझसे यूँ टकरा गये,
झोली से फिसले कुछ लम्हे.....
कभी हँसा गये, कभी रूला गये।
खामोशी से कुछ बातों ने,
अहसासों की ठोकर मारी,
तो कुछ कोमल लम्हे आकर, दिल का आँगन महका गये।
पलकों के झुरमुट से कोई सपना झाँके,
चुपके – चुपके.....
तो कुछ सपने बनकर आँसू,
गालों को सहला गये।
वक्त के दो ही पहलू थे – 'आशा और निराशा'
कुछ आश बन हिस्से में आये,
कुछ सीख जीवन जीना सिखा गये।
क्या खोया, क्या पाने का लम्बा कोई हिसाब है,
मैंने तो सीखा है हर लम्हे को खुलकर जीना,
फिर क्या रखा है इसमें.....
हम क्या खोये, क्या पा गये ।।

ये कैसी हकीकत है !

ज्योति
बी0ए0 प्रथम

1. पायल हजारों रूपये में आती है, मगर पैरों में पहनी जाती है, बिंदी एक रूपये में आती है, मगर माथे पर सजाई जाती है। इसलिए कीमत मायने नहीं रखती कार्य मायने रखता है।
2. अच्छे मार्ग पर कोई नहीं चलता, बुरे मार्ग पर सभी जाते हैं, इसलिए शराब बेचने वाला कही नहीं जाता, दूध बेचने वाले को घर–घर जाना पड़ता है।
3. बारात में दूल्हा सबसे पीछे, दुनिया आगे चलती है, मैय्ययत में जनाजा आगे, दुनिया पीछे चलती है। ये दुनिया सुख में आगे, और दुख में पीछे हो जाती है।
4. मोमबत्ती जलाकर मुर्दों को याद करते हैं।
   मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन मनाते हैं।
5. कड़वा ज्ञान देने वाला ही सच्चा मित्र होता है। मीठी बातें करने वाला तो चापलूस होता है।
   इतिहास गवाह है, नमक में कभी कीड़े नहीं पड़ते। मीठे में अक्सर कीड़े पड़ जाया करते हैं।
   आना–जाना तो लगा रहेगा, रच दे कुछ ऐसा इतिहास कि दुनिया रखे वर्षों तक याद।

ए–कामयाबी

पायल शर्मा
बी0एड0 प्रथम

तू रूठना मत
मैं जानती हूँ तू मेरे लिए रूक नहीं सकती
मेरी बातों में आकर, तू फंस नहीं सकती
तू मेरे अल्फाज नहीं
मेरे मेहनत की जुबान समझती है
मुझसे दूर रहकर
मुझे हर वक्त परखती है
लेनि जब मिलेंगे हम
थोड़ा रो कर थोड़ा हँसकर दिखाऊँगी
टूटते–टूटते संभलने के....
हजारो किस्से सुनाऊँगी
बस–ए–कामयाबी तू रूठना मत
मेरी कोशिशों को पहचान मिलना बाकी है
मेरे पागलपन का इम्तहान अभी बाकी है
पर तुझे पाने का जज्बा मुझमें काफी है
अभी तो तुझसे मिलने का ख्वाब पूरा होना बाकी है
खुद से किया है जो वादा
वो जरूर निभाऊँगी
तू मुझसे नाराज हो जाना
मैं तुझको मेहनत से मनाऊँगी
तू ठिकाने बदलते रहना
मैं तुझे ढूँढ के दिखाऊँगी
बस–ए–कामयाबी थोड़ा सब्र रखना
हो सके तो मेरी चाहत की कद्र रखना
ए–कामयाबी।

बेटी

करिश्मा राघव
बी0ए0 प्रथम

बेटी हूँ मैं भूल नहीं
किसी के पैरों की धूल नहीं,
वह गला नहीं मैं,
जिसे पैदा होते ही घोंट दो।
कोयला नहीं मैं,
जिसे बड़ा होते ही,
चूल्हे–चौके में झोंक दो।
गुड़िया नहीं मैं,
जिसे खेलकर फेंक दो।
चिड़िया नहीं मैं,
जिसे पिंजरे में बाँध दो।
कोई सौदा नहीं मैं,
जिसे दहेज में तोल दो।
कोई प्यादा नहीं मैं,
जिसे शतरंज में छोड़ दो।
बेटी हूँ मैं कोई भूल नहीं
किसी के पैरों की धूल नहीं।

माता–पिता का पैगाम

सरिता
बी0एड0 प्रथम वर्ष

1. जिस दिन तुम हमें बूढ़ा देखो तब तुम सब्र करना और हमें समझने की कोशिश करना।
2. जब हम कोई बात भूल जायें तो हम पर गुस्सा न करना और अपना बचपन याद करना।
3. जब हम बूढ़े होकर चल न पायें तो हमारा सहारा बनना और अपना पहला कदम याद करना।
4. जब हम बीमार हो जायें तो वो दिन याद करके अपने पैसे खर्च करना जब हम तुम्हारी ख्वाहिशें पूरी करने के लिए अपनी ख्वाहिशें कुर्बान करते थे।

लगाकर पंख उम्मीदों के

हिमानी बंसल

लगाकर पंख उम्मीदों के
उन्मुक्त आकाश में तुमको जो उड़ना है।
आशाओं के दिये थमाकर,
ऊँची चट्टानों पर तुमको चढ़ना है।
ले जख्मों को खुद ही भीतर
कि दुनिया को तो केवल हँसना है।
घात लगाए, जो बैठे हैं इर्द–गिर्द
उन निगाहों से भी बचना है।
मजबूत बना ले तू खुद को इतना
कि सुलगाते अंगारों पर
दूर तक तुमको चलना है।

वृक्ष मत काटो श्रीमान

अगर न होते वृक्ष भूमि पर, तब दुनिया का क्या होता ?
कैसे मिलते फली–फूल–फल ?क्या खाते मैना तोता ?
अगर न होते वृक्ष वनस्पति, तब हरियाली लाता कौन ?
कैसे मिलती शीतल छाया, कैसे बहती सुरभित पौन ?
अगर न होते हरे–भरे वन, तब कैसे वर्षा होती ?
कैसे बनती मानसून, मिल पाते क्या मूँगे मोती ?
अगर न होते लता, बेल, तरू, मिल पाती क्या तरकारी ?
अचर–सचर सब भूखे मरते, क्या खाते शाकाहारी ?
अगर न होते घास, चरी, तृण, पशु–पक्षी कैसे जीते ?
कैसे मिलते ब्रेड, बटर घी, दूध, दही कैसे पीते ?
सभी वृक्ष जड़–मूल तनों से भू का क्षरण रोक लेते।
दूषित वायु शुद्ध करते हैं, पशु–पक्षी रहते इन पर।
औषधि जड़ी–बूटियाँ देते, शीत धाम वर्षा सहकर।
अतः न काटे हरे–भरे तरू, दुश्मन नहीं सभी हैं मित्र।
कर इनका अनुकरण जिये हम, सुधर जाये धरणी का चित्र
इसलिए हम कहते सबसे, वृक्ष न काटो हे श्रीमान !
इनसे रहता हरा –भरा जग, ये सब कुदरत के वरदना ।

कॉलेज लाईफ

हिमानी बंसल
बी.एड. प्रथम वर्ष

दिल में जोश साँसों में तूफान ये अपने कॉलेज की दुनिया।
पढ़ना-लिखना तो चलता ही रहेगा, ऐसे तो कर कोई कुछ नहीं कहेगा यहाँ बस बिन्दास हो जाओ, ऊपर वाली छत पे गप्प लड़ाओ, लन्च में कैंन्टीन में चाय पीके आना, उसके बाद लैक्चर में नींद का बहाना।
इकट्ठे होकर एसाइनमेंट बनाना, लास्ट पीरियड के बाद सबमिट करवाना।
क्लास में कभी ध्यान नहीं देना अरे लैक्चर लेना आसान नहीं।
मच गया शोर हो गई लड़ाई, किसी की शर्ट फटी किसी की टाई।
अगले ही दिन ये कैसा हुआ ठंडा, अब दादागिरी करने का सारा ये फंडा।
बनते हैं ये अपने आपको डॉन, कॉलेज के बाद इन्हें पूछेगा कौन।
अरे छोड़ो ये झगड़े, ध्यान लगाओ यारों।
कुछ भी करो, बस पास हो जाओ यारों।
थोड़ा सा पढ़ लो, फिर करेंगे ऐश, प्लेसमेंट
के बाद सब कैश ही कैश। ओ ओ हो हो
ये है कॉलेज की दुनिया यारों संग जीना मरना।
कॉलेज पढ़कर के, पढ़ाई सारा दिन मस्ती करना। यही तो दिन हैं जो याद आयेंगे, सोचो तो यारों के बिन कैसे जी पायेंगे।

माँ

निधि
बी0एड0 प्रथम

जब आँख खुली तो माँ की गोदी का एक सहारा था,
उसका नन्हा सा आँचल मुझको भूमण्डल से प्यारा था।
उसके चेहरे की झलक देख चेहरा फूलों सा खिलता था,
उसके आँचल की एक बूँद से मुझको जीवन मिलता था।।
हाथों से बालों को नोचा पैरों से खूब प्रहार किया,
फिर भी उस माँ ने हमको जी भर करके प्यार किया।
मेरे सारे प्रश्नों का वो फौरन जवाब बन जाती थी,
मेरी राहों के काँटे चुन वो खुद गुलाब बन जाती थी।।
हम भूल गए उसकी ममता मेरे जीवन की थाती थी,
हम भूल गए अपना जीवन वो अमृत वाली छाती थी।
हम भूल गए वो खुद भूखी रह करके हमें खिलाती थी,
हमको सूखा बिस्तर देकर खुद गीले में सो जाती थी।।
हम भूल गए उसने ही होठों को भाषा सिखलाई थी,
मेरी नीदों के लिए रात भर उसने लोरी गाई थी।
हम बड़े हुए तो ममता वाले सारे बन्धन तोड़ आए,
बंगले में कुत्ते पाल लिए माँ को वृद्धाश्रम छोड़ आए।।
जो माँ जैसी देवी को घर को मंदिर में नहीं रख सकते हैं,
वो लाखों पुण्य भले कर ले इंसान नहीं बन सकते हैं।
माँ हँसती है तो धरती का जर्रा-जर्रा मुस्काता है,
देखो तो दूर क्षितिज अंबर धरती को शीश झुकाता है।।
माना मेरे घर की दीवारों में चन्दा सी सूरत है,
पर मेरे मन के मन्दिर में बस केवल माँ की मूरत है।
माँ तेरी हर बात मुझे वरदान से बढ़कर लगती है,
माँ तेरी सूरत मुझको भगवान से बढ़कर लगती है।।

ऑस्ट्रेलिया के जंगलो में लगी भीषण आग

कनिका शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

ऑस्ट्रेलिया में रिकार्ड तोड़ने वाला तापमान जिसके कारण लगी आग –

प्राकृतिक आपदाएँ धरती पर मौजूद हर प्राणी के लिए पीड़ादायी होती हैं। इन दिनों ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में फैली भीषण आग से सिर्फ इंसान ही नहीं जानवरों की जिन्दगी भी खतरे में पड़ गई है। आग से झुलसे वन्य जीवों के चित्र व्यथित करने वाले हैं। उसके कुछ इलाके बुरी तरह चपेट में हैं और लाखों हेक्टेयर इलाके इससे प्रभावित हुए हैं। रिकार्ड तोड़ने वाला तापमान और महीनों का सूखा पूरे ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग के कारण बने हैं। आग से निपटने की कोशिश कर रहे हजारों फायर फाइटर्स और स्वयंसेवकों को बारिश ने थोड़ी राहत दी है लेकिन फिर भी इस आपदा का अंत नहीं हो रहा है। सितंबर से ऑस्ट्रेलिया के कई इलाकों में आग लगी है। पिछले कुछ हफ्तों से यह आग और तेज हुई है। अब तक 24 लोग मारे जा चुके हैं जिसमें तीन फायर फाइटर भी शामिल हैं।

आग फैलने का एक बड़ा कारण – मौसम –

इसके अलावा 63 लाख हेक्टेयर जंगल और पार्क आग में जल चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया में सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य न्यू साउथ वेल्स (एन एस डब्ल्यू) हैं। यहाँ लगभग 50 लाख हेक्टयेर इलाके में आग लग चुकी हैं और 1300 घर तबाह हो गए हैं। हजारों लोगों को अपना घर छोड़कर शिविरों में जाना पड़ा है, क्योंकि आस-पड़ोस के इलाकों की पूरी आबो-हवा जहरीली हो गई है। ऑस्ट्रेलिया में आग फैलने का एक बड़ा कारण मौसम भी रहा है। गर्म, शुष्क मौसम एक साथ तेज हवाएँ आग के लिए बिल्कुल अनुकूल स्थितियाँ बना रही हैं। झाड़ियों वाले इलाके, जंगल से ढके पर्वत और राष्ट्रीय पार्क सभी इस आग की चपेट में आ गए।

अब तक करोड़ों जानवरों की मौत –

जंगलों में चार महीने से लग रही विकराल आग खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी के इकोलॉजिस्ट ने अनुमान लगाया कि आग से अब तक कई जानवरों की मौत हुई है। इसमें स्तनधारी पशु, पक्षी रेंगने वाले जीव शामिल हैं। आग के संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने अपनी चार दिवसीय भारत यात्रा भी रद्द कर दी। इस भयावह आग के चलते ऑस्ट्रेलिया में कई इलाकों में तो आपात स्थिति घोषित की गई है।

जीव कोआला की आधी आबादी खत्म –

बचाव दल के सदस्यों के मुताबिक दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया के कंगारू द्वीप पर लगी आग से पेड़ों पर रहने वाले एक जीव कोहाला की आधी आबादी खत्म हो गई। आग लगने से इस द्वीप पर करीब 50 हजार कोआला रहते थे। वहाँ भी जंगल का बड़ा क्षेत्रफल तक जलकर खाक हो चुका है। इतना ही नहीं लाखों हेक्टेयर की फसल जलकर खाक हो चुकी है। यह आग अब तक 50 करोड़ जानवरों और पक्षियों को लील चुकी है।

जलवायु परिवर्तन मुख्य रूप से जिम्मेदार –

विशेषज्ञों के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग की वजह से न केवल जंगलों में आग लगने के मामले बढ़े हैं, बल्कि तापमान से आग और भयावह भी हुई है। यही वजह है कि अपेक्षाकृत ठंडे माने जाने वाले देशो में भी पारा चढ़ रहा है। जिन देशों में गर्मी के मामले में कभी मौसम की सख्ती का सामना नहीं किया, उनमें अब तेज गर्मी जिंदगी दुश्वार कर रही है। स्पष्ट है कि ग्लोबल वार्मिंग अब एक अन्तर्राष्ट्रीय आपदा बन रही है। जंगलों की आग, सूखा, बाढ़, चक्रवात और समुद्री तूफान जैसी आपदाएँ बढ़ रही हैं।

नागरिकता संशोधन कानून : सी ए ए – 2019

कनिका शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

नागरिकता संशोधन कानून आज पूरे देश में लागू हो चुका है। इसको लेकर भारत सरकार ने नोटिफिकेशन भी जारी कर दिया है। देश में कई जगह पर नागरिकता संशोधन कानून को लेकर विरोध प्रदर्शन देखने को मिला है, वहीं नागरिकता कानून पर देश के कई इलाकों में हिंसा भी देखने को मिली। हालांकि अब सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून (सी ए ए-2019) का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है, इसके साथ ही 10 जनवरी 2020 से नागरिकता संशोधन कानून पूरे देश में लागू हो चुका है।

ग्रह मंत्रालय की ओर से जारी अधिसूचना में लिखा है 'केन्द्रीय सरकार नागरिकता (संशोधन) अधिनियम - 2019 (2019 का 47) की धारा 1 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए, 10 जनवरी 2020 को उस तारीख के रूप में नियम करती है। जिसके उक्त अधिनियम के उपबंध प्रवृत्त होंगे।

तू क्यों आई

कु० चमन चकोर
बी0एड0 प्रथम वर्ष

वो भी अपनी किस्मत पर, हल्का सा इतराती है।
तभी चीरकर खामोशी, आवाज कहीं से आती है।
तू क्यों आई ! तू क्यों आई ! तू क्यों आई !
कहने को तो दुनिया विशाल है,
पर तेरे लिए कंगाल है।
क्षण भंगुर को, जगह मिल जाती है।
बस तू ही क्यों यो ही रह जाती है,
ये दुनिया नारी होने की सजा सुनाती है।
बेटी, बहन, पत्नी, माँ कहकर तेरी बलि चढ़ाती है।
अपनी मर्म कथा लेकर जब दूर यहाँ से जाती है,
उसके निर्मल हृदय में न कोई चाह रह पाती है।
फिर से चीरकर खामोश आवाज कहीं से आती है,
तू क्यों आई ! तू क्यों आई ! तू क्यों आई ।
भारत की संस्कृति में सुन्दर
यदि मेलों का मेल न होता,
तो निश्चय ही भारपूर्ण
मानव जीवन भी खेल न होता ।।

मातृभाषा हिन्दी

नीलम
बी0एड0 प्रथम वर्ष

मीठे बोल बोलिए, क्योंकि अल्फाजों में जान होती है।
इन्हीं से आरती, अरदास और इन्हीं से अजान होती है।
यह समुन्दर के वह मोती हैं, जिनसे इंसानों की पहचान होती है।
हर किसी को लगा वहाँ पर अंग्रेजी का रोग,
हिन्दी के प्रयोग से बचते हैं सब लोग।
हिन्दी भाषी होकर भी, हमको न हिन्दी भाए।
बातचीत के बीच में, अंग्रेजी आ जाए।
हम बच्चों को भेजते हैं, अंग्रेजी पाठशाला।
और कहते हैं बेकार, बेकार है हिन्दी बोलने वाला।
सबको अपनी -अपनी भाषा, लगती है प्यारी।
हिन्दी सरल सहज है, फिर भी लगती हमको भारी।
हम अंग्रेजी को यद्यपि, कहते नहीं बुरा।
लेकिन हिन्दी की पीठ में, मारो नहीं छुरा।
जाग उठो सब नींद से, हिन्दी को अपनाओ।
और हिन्दी का प्रकाश, सारे जगत में फैलाओ।

सब जाग रहे तू सोता रह

नीलम
बी0एड0 प्रथम वर्ष

सब जाग रहे, तू सोता रहा।
किस्मत को थामे रोता रह। जो दूर है,
माना मिला नहीं। जो पास है,
वो भी खोता रह। सब जाग रहे,
तू सोता रह। किस्मत को थामे रोता रह।
लहरों पर मोती चमक रहे,
झोंके भी तुझ तक सिमट रहे।
न तूफान कोई आने वाला,
सब वह कर गोते लगा रहे,
लहरें तेरी कदमों में हैं, तू नाव पकड़ बस रोता रह।
धूप अभी सिरहाने है, मौसम जाने पहचाने हैं।
रात अभी तो घंटो है। बस कुछ पल दूर ठिकाने हैं।
इनती दूरी तय कर आया, दो पग चलने में रोता है।
सब जाग रहे तू, सोता रह।
किस्मत को थामे रोता रह।
माना कि मुश्किल भारी है, पर तुझमें क्या लाचारी है।
ये हार नहीं बाहर की है, भीतर में हिम्मत हारी है।
उठ रहे यहाँ सब गिर-गिर कर, न उठ तू यूं ही लेटा रह।
सब जाग रहे तू सोता रह, किस्मत को थामे रोता रह।
चलिए एक बार और कोशिश की जाये।
गलतियाँ सुधारी जायें, अच्छाईयाँ निखारी जायें।
जीवन सीमित पल असीमित.....

खुद का परीक्षण

शिवानी गोयल
बी0एड0 द्वितीय

एक छोटा लड़का टेलीफोन बूथ पर गया जो कि स्टोर के कैश काउन्टर पर ही रखा था। वह लड़का टेलीफोन के पास गया और उसने वहाँ से एक नंबर लगाया। उस टेलीफोन बूथ के दुकान का मालिक उसे बड़े ध्यान से देख ही रहा था और उसकी बातें भी सुन रहा था। लड़का- आंटी, क्या आप मुझे आपके घर के मैदान यानी की लॉन की सफाई करने का काम दे सकते हो ?

महिला - (जो फोन में उस बच्चे से बात कर रही थी) : उसने कहा हमारे पास पहले से ही एक लड़का काम कर रहा है जो मेरे लॉन की सफाई करता है।

लड़का - बड़ी लगन से कहा आंटी, मैं लॉन की सफाई और कटाई के साथ फर्श और सीढ़ियों को भी साफ कर दूंगा, वो भी मुफ्त में। महिला बोलती है - नहीं, धन्यवाद।

एक अच्छी सी मुस्कान के साथ ही उस लड़के ने फोन रख दिया।

ये सब स्टोर का मालिक सुन रहा था, इसलिए वो जल्दी से उस लड़के के पास गया।

स्टोर मालिक बोला- बेटा मुझे तुम्हारा रवैया बहुत पसंद आया मुझे तुम्हारी सकारात्मक सोच बहुत पसंद आई है। मैं तुम्हें एक जॉब देना चाहता हूँ।

लड़का बोलता है - नहीं, धन्यवाद।

स्टोर मालिक - लेकिन कुछ समय पहले तो तुम इसी के लिए उस महिला से प्रार्थना कर रहे थे।

लड़का - नहीं सर, मैं तो बस अपने काम की जांच कर रहा था, जो मैं पहले से ही कर रहा हूँ। मैं खुद उस महिला के मैदान की सफाई का काम करता हूँ।

दोस्तों इसी को खुद का परीक्षण कहते हैं आप पूरी मेहनत के साथ कोई भी काम करो तभी दुनिया आपकी तारीफ करेगी।

घटता हुआ जल स्तर बना चिन्ता का विषय

निधि

बी0एड0 प्रथम वर्ष

जल ही जीवन है ये शब्द वास्तव में जितने हमें अच्छे लगते हैं उतने ही सच्चे भी हैं। और हमें सच्चाई से रूबरू कराते हैं। बिना जल के वास्तव में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। लेकिन जरा सोचो अगर जल ही नहीं रहेगा तो जीवन की हम कल्पना कैसे कर सकते हैं। इसके बारे में हमें आज से गहन चिन्तन करना होगा। आज जल स्तर लगातार घट रहा है जल का प्रदूषित होना व खेतों में ऐसे पेड़ों का लगाना जिनको जल की अधिक आवश्यकता पड़ती है।

इसके अलावा जल स्तर घटने का एक मुख्य कारण यह भी है कि हम बरसात के जल को इकट्ठा करके सदुपयोग ही नहीं करते अर्थात जल का संचय ही नहीं करते। अगर हम जल का संचय करे तो भले ही इस आने वाली भयावह समस्या से निपटा जाये लेकिन कुछ हद तक तो समस्या को दूर किया जा सकता है।

अगर, हम जल संचय के प्रति आज ही जागरूक नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब पानी की एक बूँद को ही नहीं तरसेंगे बल्कि पानी के लिए धाड़ क्षेत्रों की तरह ही पूरे देश में खून बहेगा।

इसलिए आज से ही हमें संकल्प लेना होगा कि हम पानी को प्रदूषित नहीं करेंगे और बरसात के पानी का संचय करने में हमारी सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं में योगदान देंगे। इसके अलावा लोगों को भी जागरूक करेंगे। यह तभी सम्भव हो सकेगा जब हमारी आने वाली नस्लें भी गंगा, यमुना का मिश्रित पानी पीकर देश का नाम रोशन कर सकें।

कैमिस्ट्री के दोहे

कीर्ति गुप्ता

बी0एड0 प्रथम वर्ष

आओ सुनाते एक विषय की हिस्ट्री,
जिसको हम नाम से जानते हैं कैमिस्ट्री।
जल, अम्ल लवण और क्षार,
कैमिस्ट्री के शैतान है चार।
अल्फा और बीटा के गामा हैं मामा,
पहनते हैं सभी कुर्ता और पजामा।
कैमिस्ट्री में चलती है तीन की शान,
जिसके नाम हैं इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन।
कोई समझ न पाया तेरी यह थ्योरी,
चाहे रदरफोर्ड हो या हो मैडम क्यूरी।
तुझमे इतनी क्यों है मिस्ट्री,
हाय रे ! हाय ओ कैमिस्ट्री।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ

निधि

बी0एड0 प्रथम वर्ष

जब माँ ही जग में न होगी तो तुम जन्म किससे पाओगे।
जब बहन न होगी घर के आँगन में तो किससे कहोगे किसे मनाओगे।
जब घर में बेटी ही ना होगी तो तुम किस पर लाड़ लड़ाओगे।
जिस दुनिया में स्त्री ही ना होगी, उस दुनिया में तुम कैसे रह पाओगे।
जब दादी–नानी न होगी तो तुम्हें कहानी कौन सुनाएगा।
जब कोई स्वप्न सुन्दरी ही न होगी, तो किससे ब्याह रचाओगे
जब तेरे घर में बहू न होगी, तो कैसे वंश आगे बढ़ाओगे।
नारी के बिन जग सूना है, तुम ये बात कब समझ पाओगे।

ग्लोबल वार्मिंग

पायल शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

भविष्य की नई समस्या –

जैसा कि हम जानते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग एक विकट चुनौती बनकर आज पूरे विश्व के सामने है, जो एक चिन्तनीय विषय भी है। जिसे भली प्रकार से समझने के लिए कहा गया है कि –

''यदि ग्लोबल वार्मिंग को रोका नहीं जाएगा तो इस पृथ्वी पर कोई जीव बच नहीं पाएगा।''

सौर मण्डल के एकमात्र जीवित ग्रह हमारी पृथ्वी पर बढ़ते तापमान के अलावा ऐसा और भी बहुत कुछ हो रहा है। जिसके लिए पूर्णरूप से ग्लोबल वार्मिंग ही जिम्मेदार है। लेकिन यह भी एक विडम्बना है कि ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते खतरे को जानते हुए भी दुनिया के विकासशील देशो में इस समस्या से जूझने के प्रति लापरवाही ही देखने को मिल रही है। सबसे अधिक गैर-जिम्मेदाराना रवैया उन्हीं विकसित एवं विकासशील देशों का है। जिनकी ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाने में सबसे बड़ी भूमिका है।

अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय का मानना है कि इस समय दुनियाँ को आतंकवाद के अलावा वर्तमान में जो खतरा झेलना पड़ रहा है वह है ग्लोबल वार्मिंग। जो कि भविष्य के लिए भी एक प्राकृतिक चुनौती की तरह उभर कर सामने खड़ी हैं यह बात तो सब जानते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी की सतह पर तापमान निरंतर बढ़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग से जुड़ी केवल एक ही समस्या नहीं है, अगर हम हाल की रिपोर्टों को देखें तो वैज्ञानिक इस तथ्य पर पहुँचे हैं कि दुनियाँ की इकलौती महाशक्ति अमेरिका ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने के अपने वादों को पूरा करने में नाकाम रहा। वास्तव में ग्रीनहाउस गैसे ही ग्लोबल वार्मिंग बढ़ा रही हैं।

शायद अमेरिका को यह अहसास भी नहीं है कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से दुनिया को बाढ़, सूखा, भुखमरी और मलेरिया जैसी बीमारियों से मुक्ति पाने में कठिनाइयाँ पेश आ रही है।

अत: ध्यान देने वाली बात यह है कि सौर मंडल के अधिकतर ग्रह या तो भयंकर रूप से ठंडे हैं या अति गर्म। यही कारण है कि हमारी पृथ्वी के अलावा सौर मण्डल के किसी अन्य ग्रह पर जीवन की संभावनायें नहीं हैं। यहाँ तक कि मंगल और शुक्र जैसे ग्रह भी हमारी पृथ्वी से इतनी समानताओं के बावजूद भी जीवन विहीन हैं। शायद इसकी वजह वही तापमान है जिसका संतुलन जीवन उत्पत्ति के लिए अनिवार्य होता है। लेकिन क्या पृथ्वी पर जीवन हमेशा सुरक्षित रहेगा ?यह सवाल इस परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

''ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से कैसे बच पाओगे, आज नहीं सोचोगे तो कल कुछ नहीं कर पाओगे''

इसलिए मैं यह कहती हूँ कि कुछ सोचो कि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कैसा वातावरण बना रहे हैं।

कविता

टिंकल शर्मा
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

जब कद को ऊँचा बना लिया,
फिर घर को ऊँचा क्या करना।
उस दर पे सर को झुका दिया,
तो हर दर पे सजदा क्या करना।।
हँसी जिंदगी के ये पल,
ये क्षण सरपट के भागे जाते हैं।
तब तकलीफों को गिनना क्या,
और सुख की अभिलाषा क्या करना।।
दुख न हो किसी के जीवन में,
मेरे दिल में ये चाहत सदा रहे।
बन दिया जो खुद को जला लिया,
फिर अंधियारे पथ से क्या डरना।।

नारी का सम्मान

हर्षित कुमार भारद्वाज
बी0एड0 प्रथम वर्ष

"Why girls get married and go to a strangers home ?..... Because they are blessed angles of the Almighty. After fileing their own house with colour of Happiness, they go away to colour other home."

"Realize the values of si and respect then"

हमारे देश में आज भी नारियों को वो सम्मान नहीं मिला है, जिसकी वो हकदार हैं। आज भी बहुत सारी स्त्रियाँ ऐसी हैं। जिनकी कोई मर्जी नहीं होती और उन्हें हर काम दूसरों के हिसाब से करना पड़ता है और इसे नाम दिया जाता है भारतीय संस्कृति का। क्या भारतीय संस्कृति में ये लिखा है, कि एक औरत को उसकी मर्जी से जीने का कोई हक नहीं है, कई घरों में आज भी स्त्रियों का कोई सम्मान नहीं है, शायद यही कारण है कि आज भी हमारा देश उन्नति नहीं कर पा रहा है। सरकार ने तो काफी सारे कानून बनाये हैं, और काफी सारे समानताओं के अधिकार दिये हैं, लेकिन जब तक मानसिक तौर पर लोग नारी को वो सम्मान, वो अहमियत नहीं देंगे। हमारे देश का विकास कैसे सम्भव होगा। शादी से पहले जो स्वतंत्रता और लाड़-प्यार दिया जाता है पर क्या शादी के बाद भी वो उतनी ही स्वतंत्र रह पाती है, उसके विचारों को उतनी ही स्वतंत्रता दी जाती है। क्यूँ सारे परिवार को अपनाने के बाद उसके सारे हक खो जाते हैं। क्यूँ सारे कर्तव्य स्त्री को ही समझाए जाते हैं क्यूँ सारे नियम स्त्रियों के लिए ही बनाये जाते हैं... क्या पुरूषों का फर्ज सिर्फ पैसे कमाना है। किसी की बेटी को अपने घर की बहू बनाने के बाद उसकी भावनाओं का ख्याल रखने की जिम्मेदारी किसकी होती है। वो आपके घर में आकर आपकी अच्छाई व कमी दोनों को स्वीकार करती है, तो क्यूँ नहीं उसकी कमियों को स्वीकार किया जाता है और जब वो सारी जिम्मेदारियों को पूरा करने में खुद को सक्षम नहीं पाती है, सबकी नजरों में वो प्यार व इज्जत नहीं पाती तब उसके अन्दर एक बगावत पैदा हो जाती है और वह अपनी बात रखनी शुरू करती है। जो कि हर घर में लड़ाई-झगड़े की वजह बनती है और इसका जिम्मेदार भी सारा समाज उसे ही ठहराता है। बहुत कम ही ऐसी स्त्रियाँ होती हैं। जो सारी जिन्दगी दूसरों के हिसाब से चलती है। इसलिए ज्यादातर घरो में सामजस्य देखने को नहीं मिलता। देखा जाये तो स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है स्त्री ही स्त्री को सारे नियम कानून मानने के लिए बाध्य करती है। ऐसे में हमारा देश पुरूष प्रधान ही होगा। जब महिला खुद स्वीकार कर लेगी कि यही उनकी जिन्दगी है।

''जब तक एक स्त्री खुद अपनी कद्र करना नहीं सीखेगी तब तक उसे कभी न्याय नहीं मिलेगा। जिस दिन एक बहुत को बेटी की तरह प्यार मिलेगा उसकी गलतियों को बेटी की तरह माफ किया जायेगा, उसे अपनी बेटी की तरह सिखाया जोयगा, सुधारा जायेगा। उस दिन हर घर की बेटी अपनी ससुराल में खुश रहेगी।''

अगर नारी ही नारी का सम्मान करने लगे तो, इस पुरूष प्रधान देश में नारियों को सम्मान मिलना संभव होगा।

कहानी

(सबको हरे रंग में नहीं रंगा जा सकता)

पिंकी

बी0एड0 प्रथम वर्ष

एक बार शहर के एक धनी आदमी को अचानक ही आँख में बहुत तेज दर्द होने लगा। तमाम उपायों और देश-विदेश के चिकित्सकों से उपचार कराके भी फायदा नहीं हुआ। कई तरह की दवायें और टीके आजमाए, पर समय के साथ दर्द बढ़ता जा रहा था।

एक दिन एक फकीर नगर में आया। वह इस तरह के उपचारों में माहिर था। अमीर आदमी ने फकीर को अपने यहाँ बुलवाया। फकीर ने व्यक्ति से कहा कि आने वाले कुछ दिनों तक तुम्हें हरा रंग अधिक देखना चाहिए। व्यक्ति ने तुरंत पेंटरों को बुलावा कर पेंट खरीद कर लाने को कहा ओर बोला कि जिस चीज पर भी मेरी नजर पड़ सकती है। वह हरे रंग की हो जानी चाहिए।

कुछ दिन बाद वह फकीर उस आदमी के घर गया। जैसे ही वह दरवाजे पर पहुँचा, उस व्यक्ति के आदमी हरे रंग की ड्रेस लकर उसके पास पहुँच गये। उन्होंने संत को हरे रंग के कपड़े पहनने को कहा और वह उसके पास रखी सभी चीजों को हरे रंग से रंगने लगे। संत के कारण पूछने पर बोले कि किसी और को देखने पर उनके मालिक की आँखों में फिर से दर्द शुरू हो जाएगा। इतने में वह व्यक्ति भी आ गया। फकीर हँस रहा था। वह बोला, ''तुम्हें इतना सब करने की जरूरत नहीं थी। तुम्हें बस केलव एक हरे ग्लास वाला चश्मा लेना था।

जो बहुत कम पैसों में आ जाता। इससे तुम्हें यहाँ की सभी दीवारें, पेड़, पॉटस और दूसरी चीजों को हरे रंग में नहीं रंगना पड़ता। तुम चाहकर भी पूरे संसार को हरे रंग में नहीं रंग सकते।

मंजिल

सृष्टि

बी0एड0 प्रथम वर्ष

ऊँचे-नीचे रास्ते और मंजिल तेरी दूर
राह में राही रूक न जाना
हो करके मजबूर।।
ये हमारी जिन्दगी
एक लम्बा सफर ही तो है
चलते हैं जिसपे हम
अन्जानी डगर ही तो है।
देख संभलना बचके निकलना
जो नही चलते देखके आगे
ठोकर से है चूर।
ऊँचे-नीचे रास्ते और मंजिल तेरी दूर
रास्ते में थक जाए अगर तेरे पाँव
दम लेके दो घड़ी
चला-चल मिले चाहे काम।
जो कोई सोया, उसने ही खोया
बात ये याद रखना तू जरूर।।
ऊँचे-नीचे रास्ते और मंजिल तेरी दूर
तुझे सहारा भी मिले रास्ते में
तो तू समझना यही
ये है रास्ते की छांव
साथी तेरी मंजिल नहीं।
तेरा तो अपना और है सपना
अपने ही सपनों की मंजिल से
ना रह जाना दूर।।
ऊँचे-नीचे रास्ते और मंजिल तेरी दूर
राह में राही रूक ना जाना
हो करके मजबूर।।

सूक्तियाँ

पिंकी
बी0एड0 प्रथम वर्ष

अध्ययन –

जितना हम अध्ययन करते हैं उतना ही हमको अपनी अज्ञानता का आभास होता है।

निंदा –

जो मनुष्य अपनी निंदा सह लेता है उसने मानो सारे जगत पर विजय प्राप्त कर ली।

आरम्भ –

किसी कार्य का आरम्भ उसका महत्वपूर्ण अंग होता है।

विचार –

जैसे विचार होते हैं। उन्हीं के अनुसार भविष्य का निर्माण होता है।

प्रशंसा –

प्रतिद्वंद्वी द्वारा की गई प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है।

गुस्सा –

सज्जन मनुष्य का गुस्सा शीघ्रता से समाप्त हो जाता है।

नियम –

जहाँ नियमों की रक्षा नहीं की जाती वहाँ कोई भी अनर्थ पैर फैला सकता है।

लगन –

जिस को लगन है वह साधन भी पा जाता है, यदि नहीं पाता तो उन्हें पैदा करता है।

मूल –

दूसरों की भूलों से बुद्धिमान लोग अपनी भूल सुधारते हैं।

नम्रता –

अपनी नम्रता का घमंड करने से अधिक निंदनयी और कुछ नहीं है।

स्वाइन फ्लू

कीर्ति गुप्ता
बी0एड0 प्रथम वर्ष

स्वाइन फ्लू एक बार फिर देश में पांव पसार रहा है। आए दिन देश में इससे होने वाली मौतों की संख्या बढ़ती जा रही हैं। स्वाइन फ्लू श्वसन तंत्र से जुड़ी बीमार है जो ए-टाइप के इनफ्लुएंजा वाइरस से होती है। यह वायरस एच-1 एन-1 के नाम से जाना जाता है। 2009 में जो स्वाइन फ्लू हुआ था उसके मुकाबले इस बार का स्वाइन फ्लू कम पावरफुल हैं भारत में स्वाइन फ्लू इस साल अभी तक 1000 लोगों से अधिक की जान ले चुका है। महाराष्ट्र में अभी तक इस वाइरस से सबसे ज्यादा 437 लोगों की मृत्यु हुई है। जब आप खांसते या छींकते हैं, तो हवा में या जमीन पर जिस भी सतह पर थूक या मुँह और नाक से निकले द्रव कण गिरते हैं, वह वायरस की चपेट में आ जाता है, यह कण हवा के द्वारा या किसी के छूने से दूसरे व्यक्ति के शरीर में मुँह या नाक के जरिए प्रवेश कर जाते हैं। इसके वायरस सबसे ज्यादा सूअरों में पाए जाते हैं। जिससे ये फैलता है इसलिए इसको स्वाइन फ्लू नाम दिया गया है। सामान्य फ्लू और स्वाइन फ्लू के वायरस में एक फर्क होता है स्वाइन फ्लू के वायरस में चिड़ियों, सुअरों और इंसानों में पाया जाने वाला जेनेटिक मटीरियल भी होता है। लेकिन स्वाइन फ्लू में यह देखा जाता है कि जुकाम बहुत तेज होता है, नाक ज्यादा बहती है। पीसीआर टेस्ट के माध्यम से ही यह पता चलता है कि किसी को स्वाइन फ्लू है तो स्वाइन फ्लू होने के पहले 48 घण्टों के भीतर इलाज शुरू हो जाना चाहिए। पांच दिन का इलाज होता है जिसमें मरीज को टेमीफ्लू दी जाती है। साफ-सफाई का ध्यान रखा जाए और फ्लू के शुरूआती लक्षण दिखते ही सावधानी बरती जाए तो इस बीमारी के फैलने के चांस न के बराबर हो जाते हैं।

नागरिकता संशोधन कानून

कनिका शर्मा
बी0एड0 प्रथम

हमारी भारत सरकार (मोदी सरकार) ने पहले लोकसभा और फिर राज्यसभा में विपक्षी पार्टियों के विरोध के बीच नागरिकता संशोधन बिल (सी0ए0बी0) को मंजूरी दिलाने में सफलता हासिल की। इसके बाद राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की मंजूरी मिलते ही इस बिल ने कानून की शक्ल ले ली और नागरिकता संशोधन कानून बन गया। इससे पहले कि इस बिल के तहत मोदी सरकार आगे की कार्रवाई शुरू कर पाती असम में विरोध होना शुरू हो गया, बंगाल भी इस विरोध की चपेट में आय गया और इस बिल के खिलाफ हो रहा विरोध दिल्ली के जामिया से होते हुए अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी और लखनऊ के नदवा कॉलेज तक जा पहुँचा। जामिया, ए0एम0यू0 और नदवा कॉलेज में इस बात को लेकर प्रदर्शन हो रहा है कि मुस्लिमों की नागरिकता खतरे में है। यानी एक बात तो साफ है कि लोगों को नागरिकता संशोधन कानून और नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन सही से समझ में नहीं आया है जिसकी वजह से तमाम भ्रम फैल रहे हैं ऐसे में ये समझना जरूरी है कि कैब क्या है और एन0आर0सी0 क्या है ?

- नागरिकता संशोधन बिल के तहत कुछ खास देशों से नागरिकों को भारत की नागरिकता देने के प्रावधान में ढील दी गई है, जो इस प्रकार है –
- नागरिकता संशोधन बिल के तहत पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफनागस्तिान के अल्पसंख्यकों को भारत की नागरिकता दी जा सकती है।
- इस बिल के तहत कोई भी हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी और इसाई समुदाय के शरणार्थियों को भारत की नागरिकता देने के नियमों में ढील देने का प्रावधान है।
- इन अल्पसंख्यक लोगों को नागरिकता उसी सूरत में मिलेगी, अगर इन तीनों देशों में किसी अल्पसंख्यक का धार्मिक आधार पर उत्पीड़न हो रहा है, अगर आधार धार्मिक नहीं है, तो वह इस नागरिकता कानून के दायरे में नहीं आयेगा।
- मुस्लिम धर्म के लोगों को इस कानून के तहत नागरिकता नहीं दी जाएगी, क्योंकि इन तीनों देशों में मुस्लिम अल्पसंख्यक नहीं हैं, बल्कि बहुलता में हैं।
- एन0आर0सी0 (नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटीजन) – इसके तहत वह भारत का नागरिक माना जाता है जो 25 मार्च 1971 से पहले से असम में रह रहे हैं जो लोग उसके बाद से असम में रह रहे हैं या फिर उनके पास 25 मार्च, 1971 से पहले असम में रहने का सबूत नहीं है, उन्हें एन0आर0स0ी लिस्ट से बाहर कर दिया गया है।
- एन0आर0सी0 लागू करने का मुख्य उद्देश्य ही यही है कि अवैध नागरिकों की पहचान करके या तो उन्हें वापिस भेजा जाए या फिर उन्हें मुमकिन हो तो भारत की नागरिकता देकर वैध बनाया जाए।
- एन0आर0सी0 की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि 1971 के दौरान बांग्लादेश से बहुत सारे लोग भारतीय सीमा में घुस गए, ये लोग अधिकतर असम और पश्चिम बंगाल में घुसे थे, ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि जो घुसपैठिए हैं, उनकी पहचान कर, उन्हें बाहर निकाला जाए।

हम बलवानों की जननी

टिंकल शर्मा
बी0ए0 द्वितीय

हम बलवानों की जननी है, तुमको बलवान बना देंगे
हम अबला हैं या सबला हैं, तुमको यह ध्यान दिला देगी,
हम देश-भक्ति पर मरती हैं, न्यौछावर तन-मन करती हैं।
हम भारत के दुख हरती हैं, होकर कुर्बान दिखा देंगी,
हम पद्य, प्रचार मिटा देगी परदेशी वस्त्र हटा देंगी।
हम अपना शीश कटा देगी पर तुम्हें स्वाराज दिला देगी।
हम दुर्गा, चण्डी, काली हैं, आजादी की मतवाली हैं
हम नागिन डसने वाली हैं, दुश्मन का दिल दहला देंगी
हम शांतचित्त है, ज्ञानी हैं, हम ही झांसी की रानी हैं
यह अटल प्रतिज्ञा ठानी है भारत स्वाधीन करा देंगी।

कुछ अच्छे विचार

काजल पाल
बी0एड0 प्रथम

जल्दी मिलने वाली चीजें ज्यादा दिन तक नहीं चलती।
और जो चीजें ज्यादा दिन तक चलती हैं, वो कभी भी जल्दी नहीं मिलती।

- डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

हमारी सबसे बड़ी कमजोरी बीच में ही हार मान लेना है।
सफल होने का सबसे निश्चित तरीका है, कि हमेशा एक बार और प्रयास करना है।

- थॉमस अल्वा एडिसन

अगर आप किसी काम की शुरूआत करने में बहुत अधिक समय लगाते हैं,
तो आप उस काम को कभी नहीं कर पायेंगे।
इसलिए समझदारी इसी मे हैं कि सोचने में समय व्यर्थ न करें और उस काम को आज से ही शुरू करें।

- गुरूसलिंक

मैं सही फैसले लेने में यकीन नहीं करता,
बल्कि फैसले लेकर मैं खुद उन्हें सही कर देता हूँ।

- रतन टाटा

जिसके जीवन में जितने मोड़ जितनी समस्या आएंगी
वो उतना ही सफल होता चला जाएगा
क्योंकि हर समस्या अपने साथ एक मौका लेकर आती है।

- रवीन्द्रनाथ टैगोर

किसी ने स्वामी विवेकानन्द से पूछा कि- आप इतने बड़े हैं, आप इतने सशक्त हैं,
फिर भी नीचे क्यों बैठते हैं ?
स्वामी विवेकानन्द जी ने मुस्कुराकर बड़ा ही खूबसूरत जबाव दिया -
उन्होंने कहा कि नीचे बैठने वाला आदमी कभी भी गिरता नहीं है।

- स्वामी विवेकानन्द

पहाड़ चढ़ने वाला झुककर पहाड़ चढ़ता है और उतरने वाला अकड़ कर,
इसलिए जो व्यक्ति झुक रहा है, वो पहाड़ चढ़ रहा है,
और जो अकड़ रहा है, वो बड़ी तेजी से नीचे आ रहा है।

- अल्बर्ट आइंस्टीन

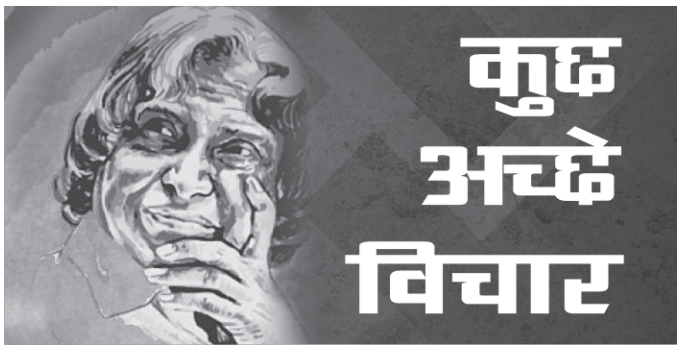

प्रयास : लाभप्रद या व्यर्थ

नेहा

बी0एड0 प्रथम वर्ष

प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था। आमने-सामने सेनायें डटी हुई थीं तथा भीषण गोलों की वर्षा हो रही थी। तभी एक सैनिक ने देखा कि उसका साथी मित्र आगे बढ़ते हुए बुरी तरह जख्मी होकर 'नो मैन्सलैण्ड' में गिर गया है। सैनिक का दिल दहल गया और अपने मित्र की सुरक्षा के लिए व्याकुल हो उठा। सैनिक स्वयं एक खाई में फँसा हुआ था तथा ऊपर से सांय-सांय करके गोलियों की बौछार हो रही थी। सैनिक ने अपने कमाण्डर से प्रूदा कि वह खाईयों के बीच 'नो मैन्सलैण्ड' पर जाकर गिरे हुए अपने घायल मित्र को उठाकर ला सकता है क्या ?कमाण्डर ने कहा, ''तुम जा तो सकते हो परन्तु मेरे विचार से इसका कोई लाभ नहीं होगा क्योकि सम्भवत: तुम्हारा साथी सैनिक शहीद हो चुका है, और इस प्रयास में तुम बेकार में अपनी भी जान गंवा सकते हो।''

कमाण्डर को चेतावनी के बावजूद वह सैनिक अपने साथी को लाने के लिए चल पड़ा। चमत्कारिक ढंग से वह अपने घायल साथी तक पहुँच भी गया और उसे अपने कंधे पर लादकर अपनी खाई में वह स्वयं भी जख्मी हो गया। लेकिन फिर भी वह अपनी खाई में लौटने में सफल रहा।

खाई में लौटने पर कमाण्डर ने सैनिक को प्रेम से गले लगा लिया और उसके जख्मों को देखते हुए कहा, ''मैंने तुमसे कहा था कि इस प्रयास से कोई फायदा नहीं होगा। देखो, तुम्हारा साथी मित्र तो मर गया है और तुम भी घायल हो गये हो।'' सैनिक ने उत्तर दिया, ''सर, इस प्रयास का फायदा था'' कमाण्डर ने कहा, ''लेकिन तुम्हारा साथी तो मर चुका है, तुम्हारा क्या मतलब है ?''

सैनिक ने उत्तर दिया, ''हाँ सर, यह प्रयास फिर भी लाभप्रद था क्योंकि जब मैं उसके पास पहुँचा तब वह जिन्दा था, और मुझे अपने दोस्त से यह सुनकर संतोष हुआ कि ''जिम ! मुझे पता था तुम आओगे।''

जीवन में कई बार ऐसा होता है कि कोई काम लाभप्रद है या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसे किस दृष्टिकोण से देखते हैं अपना सारा साहस बटोर कर वह कार्य अवश्य करें जो आपका दिल कहता है, ताकि बाद में जीवन में उस कार्य को न करने का मलाल न हो।

जिन्दगी

प्रेरणा वार्ष्णेय

बी0ए0 द्वितीय वर्ष

न हँसना आसान है, न रोना आसान है
न पाना आसान है, न खोना आसान है।

सुख-दुख तो जिन्दगी में आते ही रहते हैं
ये मैं नहीं कहती, लोग मुझसे कहते हैं।

इन्सान की जिन्दगी के ये ही दो सहारे हैं।।
खुशियों ने धोखा दिया तो गम अपना बनाएगा।

जिन्दगी अगर ठुकराएगी तो मौत गले लगाएगी।

इन्सान की जिन्दगी बिल्कुल खाली तो नहीं है
अगर कहीं गम है तो खुशियाँ भी कहीं हैं।
जिन्दगी को देखकर मन में ऐसे ख्याल आते हैं।

कोई पास नहीं रहता सभी एक दिन ठुकराते हैं।

लेकिन जिन्दगी में कभी-कभी ऐसे दोस्त भी आते हैं।
जो कुछ दिन के लिए नहीं, जीवन भर साथ निभाते हैं।

कितने आजाद और सुरक्षित हैं हम लड़कियाँ

टिंकल शर्मा
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

हमारे भारत को आजाद हुए 71 वर्ष बीत चुके हैं लेकिन हमारे मन में एक सवाल उठता है। कि हम लड़कियाँ कितना आजाद और सुरक्षित हैं। क्या हमें लड़कों की तरह हर अधिकार प्राप्त हैं। क्या हम कहीं भी अकेले आ-जा सकती हैं, तो इसका उत्तर मिलता है नहीं। देश को आजाद हुए काफी समय बीत जाने के बाद भी मारे देश की लड़कियों को आजादी ठीक प्रकार से नहीं मिली, हममें कार्य करने की और कुछ कर दिखाने की क्षमता तो है, लेकिन हम उनको पूरा नहीं कर पाते हैं। हम जो सपने देखते हैं। उन्हें पूरा करने में भी सक्षम हैं। लेकिन हम अपने सपनों को पूरा नहीं कर सकते हैं। क्योंकि हम सुरक्षित नहीं हैं।

मैं आप सभी से पूछना चाहती हूँ कि कितने सुरक्षित हैं हम लड़कियाँ जब हमारे देश में चुनाव का माहौल होता है तो हर नेता और सरकार की जुबां पर यही शब्द होता है, हम बेटी सुरक्षा, महिला सुरक्षा करेंगे। बेटी सुरक्षा को लेकर बहुत बड़े-बड़े वादे करते हैं और जब सरकार बन जाती है तो वह भूल जाते हैं बेटी सुरक्षा।

मैं उन नेताओं के लिए कहना चाहती हूँ -

'संसद के गंदे नेता भी लिप्त हैं भ्रष्टाचारों में,
खबर रेप की छपी हुई है देश के सब अखबारों में।'

आज देश का कोई ऐसा अखबार नहीं जिसमें खबर रेप की नहीं और जगह नहीं अनेकों जगह होती जो हमें अन्दर से तोड़ देती है। कहीं बेटियों का रेप करके उसको जिन्दा दफना देते हैं तो कहीं उन्हें जिन्दा जला देते हैं। क्या यही है बेटी सुरक्षा।

नेता जी, आज मेरे देश में कहीं किसी भी शहर या राज्य में बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं वह कहीं भी अकेले आ-जा नहीं सकती। अगर वह अकेले आती-जाती भी हैं तो उन्हें देश के कुछ रेपिस्ट बलात्कार जैसा जघन्य अपराध को अंजाम दे देते हैं। मैं पूछना चाहती हूँ कि कब ये बलात्कार जैसी खबरें हमारे देश में बंद होंगी, आखिर कब बेटियाँ सुरक्षित और आजाद होंगी ?

दहेज प्रथा

रूचि शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

एक मुनिराज नदी के किनारे खड़े थे तभी वहाँ से एक लड़की का शव नदी में तैरता हुआ जा रहा था, तो मुनिराज ने उस शव से पूछा -

कौन हो तुम ओ सुकुमारी, बह रही नदिया के जल में ?
कोई तो होगा तेरा अपना, मानव निर्मित इस भूतल में ?
किस घर की हो तुम बेटी, किस क्यारी की हो कली ?
किसने छला है तुमको, क्यों यह दुनियां छोड़ चली ?
किसके नाम की मेंहदी बोलो, हाथों पर रची है तेरे ?
बोलो किसके नाम की बिंदिया, माथे पर लगी है तेरे ?
लगती हो तुम राजकुमारी, या देवलोक से आई हो ?
उमा रहित ये रूप तुम्हारा, ये रूप कहाँ से लाई हो ?
मुनिराज की यह बात सुनकर शव आत्मा बोली-
मुनिराज मुझको क्षमा करो, गरीब पिता की बेटी हूँ,
इसलिए मृत मीन की भांति, जल धारा पर लेटी हूँ,
रूप, रंग और सुन्दरता ही, मेरी पहचान बताते हैं,
कंगन, चूड़ी, बिन्दी, मेंहदी, सुहागन मुझे बनाते हैं,
पिता के सुख को सुख समझकर पिता के दुख से दुखी थी मैं,
जीवन के इस तन्हा पथ पर, पति के संग चली थी मैं,
पति को मैंने दीपक समझा, उसकी लौ में जली थी मैं,
पर वो निकला सौदागर, लगा दिया मेरा भी मोल,
दौलत और दहेज की खातिर, पिला दिया जल में विष घोल।
दुनिया रूपी इस उपवन में, एक छोटी सी कली थी मैं,
जिसको मैंने माली समझा, उसी के द्वारा छली थी मैं,
ईश्वर से अब न्याय माँगने, शव शय्या पर पड़ी हूँ मैं,
दहेज के लोभी इस संसार में, दहेज की भेंट चढ़ी हूँ मैं।

गरीबी

स्नेहा शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

गरीबी एक ऐसी दशा है, अगर किसी के भाग्य में हो तो अभिशाप बन जाती है। एक ग्रहस्थपूर्ण मनुष्य के लिए तो यह जीते जी नर्क है। जीवनपर्यन्त आत्मा को न चाहते हुए भी कर्मों का अच्छा बुरा सहना पड़ता है। वो चाहकर भी छुटकारा नहीं पा सकते हैं।

जो लोग सोचते हैं कि मरने के बाद हम संघर्षों से छूट सकते हैं। यदि ग्रहस्थपूर्ण यह सोचता है, अपनी जिम्मेदारी से भागता है, तब वह मूर्ख है। यदि बुद्धिमान व्यक्ति हो तो वह संघर्ष नहीं त्यागता और हर मुमकिन प्रयत्न करता है। परिवार को व्यवस्थित रखने के लिए –

दिल से गरीबी है लोभेन नामे।
पर या ग्रहस्थी गरीबी ज्वाला समाने ।।

एक बूढ़ी औरत जिसके ऊपर अल्पायु में ही कष्टों की कावड़ी आ पड़ी हो उसका पाँच वर्षीय पोता तथा उसकी पुत्रवधू दुखों से भरे सागर को गरीबी की हल्की नौका से पार करने का प्रयास कर रहे हैं, शायद उसकी पुत्रवधू ने विवाह उपरान्त पाँच से छः ही सावन देखे हों, उसका रूप जो कभी देखने योग्य था उसे आस पड़ोस की स्त्रियों ने ऐसा प्रचण्ड रूप व नाम दिया जो किसी सुहागिन स्त्री के लिए कहना तो क्या सोचना भी अतुल्य पाप हो, लेकिन उससे बूझो जिसे वो नाम उस उमर में मिले जब खुशियाँ उसके दरवाजे पर आई ही थीं।

बूढ़ी औरत पर तो मानो दुखों का सागर ही आ पड़ा हो, वह औरत जिसने 25 साल पहले अपने पति का तथा 25 साल बाद अपने पुत्र का जनाजा अपने हाथों से सजाया हो, खुद को तो किसी भी तरह शान्त कर लेती पर अपनी पुत्रवधू को कैसे शान्त करे, जो अपने बेटे को सीने से चिपकाये बेअन्त बिलख रही थी, और दर्द सह किलकारियों से कह रही थी कि अब हमारा क्या होगा, एक तो गरीबी ऊपर से ये दुखों का पहाड़..... व पोते व वधू को गले से लगाकर रोते हुए बोली कि सब भगवान पर छोड़ दो।

सास बहू तो कैसे भी रह लेती परन्तु उसका पोता जो पिछले दो दिनों से केवल पानी के सहारे ही जीवित है, उसे देख वो दोनों बस मर ही नहीं रही हैं।

मानो मरने से भी बदतर जीवन जी रही हों जब देखा ही नहीं जा रहा था तो बूढ़ी औरत घर से बाहर निकल गई, क्योंकि घर में तो एक अनाज का दाना तक नहीं है। दुकान की सीढ़ियाँ चढ़ी ही थीं कि दुकानदार पहले सामान के पैसे ना देने व इतने दिन होने पर अच्छी बुरी सुनाने लगा।

सब अनदेखा कर बेशर्म बुत बन अपने पोते के लिए कुछ खाने के लिए माँगा तो दुकानदार और भड़क गया..... धक्का देकर भगा दिया उसे, बुढ़िया सड़क पर चलते हुए लोगों से माँग रही है। पर इस अभागिन पर किसी को भी दया न आयी। सुबह से शाम हो गई पर कुछ खाने को न ला सकी। घर कैसे जाऊँ यही सोच-सोच कर पल-पल मर रही है। अगले कुछ ही पलों में एक गाड़ी वहाँ रूकी। एक प्रसिद्ध सेठ दरवाजे से बाहर आया तथा शान्त स्वरों में बोला कि, मैं तुम्हारी सारी समस्याएँ हल कर दूँगा यदि.....

तुम मेरे पुत्र को बचाओगी तब, गरीबी से तुम्हारा परिवार सात जन्मों तक फिर कभी मिल नहीं पायेगा। यह सुन बुढ़िया में फिर से जीविका आ गई तथा खुश होकर बोली कि बताओ मुझे क्या करना है। सेठ कहते में लड़खड़ाये..... बस अपनी किडनी आप मेरे बेटे को दे दें, बुढ़िया को मानो शान्ति साँप ने डस लिया हो पर बेखबर सी गाड़ी की ओर बढ़ी जा रही है।

सेठ बुढ़िया को लेकर चला गया.....

शिक्षा साधन है और शिक्षक साधक

लतेश बालयान
बी0ए0 तृतीय वर्ष

सफलता का पथ

1. बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए।
2. सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो सूरज की तरह जलना सीखो।
3. जब कोई कार्य नया ना कर सको तो जो कुछ कर रहे हो उसे ही नए ढ़ंग से करो।
4. शिक्षा का महत्व यह नहीं कि आपने कितना पढ़ा, बल्कि यह है कि आपने कितना सीखा और कितना सिखाया।
5. वक्त कितना भी बुरा क्यों न हो तरक्की की कोशिशें कभी ना छोड़े। जिस तरह पक्षी कितना भी घायल क्यों न हो जाए लेकिन उड़ना नहीं छोड़ता, सफलता एक दिन जरूर मिलेगी।
6. जब कभी भी आप अपनी एक पराजय से निराश हो तो अपनी आँखें बंद करके अपनी शक्तियों का ध्यान करो फिर आँखें खोलने पर आशाएँ आपके सामने ही नजर आयेंगी।
7. जब आप किसी तरह का परिवर्तन देश में चाहते हो तो पहले स्वयं परिवर्तित हो फिर अपने आस-पास परिवर्तन करो फिर देश में परिवर्तन सम्भव हो जाएगा।
8. हम जितना शांतचित्त होंगे और हमारा स्नायु जितना संतुलित रहेगा, हम जितना प्रेम से सम्पन्न होंगे हमारा काम भी उतना ही उत्तम होगा।
9. मन की दुर्बलता से बढ़कर और कोई बड़ा पाप नहीं होता।
10. रख हौंसला वो मंजर भी आएगा, प्यासे के पास समंदर भी आएगा। थककर ना बैठ ए-मंजिल के मुसाफिर मंजिल भी मिलेगी मिलने का आनंद भी आएगा।
11. जब मार्ग में काँटे हो और पाँव में जूते ना हो तो हमे मार्ग बदल देना चाहिए।
12. क्षमा माँगने से व्यक्ति मजबूत होता है और उसका आत्मविश्वास बढ़ता है तथा उसे ऐसा महसूस होता है कि उसने जीवन में कुछ अच्छा काम किया है।

कविता (चित्रकार)

मयूरी भारद्वाज
बी0कॉम0 द्वितीय वर्ष

चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र।
इतने में ही वहाँ आ गया यमराज का मित्र।।
उसे देखकर चित्रकार के तुरन्त उड़ गये होश।
नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का फिर रह ना गया कुछ जोश।।
फिर उसे कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप।
बोला सुन्दर चित्र बना दूं बैठ जाईये आप।।
ऊकडू-मुकडु बैठ गया वो सारे अंग बटोर।
बड़े ध्यान से लगा देखने चित्रकार की ओर।।
चित्रकार ने कहा तुरन्त ही हो गया आगे का तैयार,
अब आप मुँह उधर तो कीजिए जंगल के सरदार।
बैठ गया वो पीठ फिराकर चित्रकार की ओर।।
चित्रकार चुपके से खिसका जैसे कोई चोर।
बैठे-बैठे लगा सोचने इधर हुई क्यों देर।।
झील किनारे नाव लगी थी एक लगा था बाँस।
चित्रकार ने नाव पकड़ ली जी भर के ले सांस।।
जल्दी-जल्दी नाव चलाकर निकल गया कुछ दूर।
इधर शेर था धोखा खाकर झुंझहलाहट में चूर।
शेर जरा चिल्ला कर बोला नाव जरा ले रोक
कलम और कागज तो ले जा रे कायर डरपोक।।
चित्रकार ने कहा तुरन्त ही, रखिये अपने पास
चित्रकला का आप कीजिए जंगल में अभ्यास।।

प्यारे दोस्तों !

हम सबकी यह आशा होती है कि कम मेहनत में हमें ज्यादा अंकों की प्राप्ति हो जाये। जोकि यह लालसा हमें आलसी बना देती है और हम परीक्षा में ज्यादा-से-ज्यादा अंक प्राप्त करने के शॉर्ट कट टिप्स जैसे रास्ते अपनाते हैं, व सफलता की कुंजी जैसी किताबों से परीक्षा के लिए कुछ चुनिंदा प्रश्नों को याद करके परीक्षा में अधिक सफलता भी प्राप्त कर लेते हैं और कई बार अधिक अंक प्राप्त भी कर लेते हैं।

किन्तु हमारी यह लालसा हमें जीवन में संघर्ष कराने से पीछे हटाती है। क्या हमारी संस्कृति में यह व्यवस्था उचित नहीं कि किसी भी कोर्स या डिग्री को कम से कम दो से तीन वर्ष का समय हो, जिसके साथ-साथ हमें जीवन जीने का ज्ञान भी हासिल करना चाहिए और यह व्यवस्था हमारे मन के विकास के साथ-साथ तन के विकास से सम्बन्ध रखती है।

''सफलता की कुंजी'' जैसी महज कुछ परीक्षा में आने वाले प्रश्नों को हल करके हम किसी विषय में तो सफलता प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु हमें जीवन की परीक्षा में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती।

कुछ कार्यों के लिए ही शॉर्ट कट टिप्स कारगर सिद्ध हो सकते हैं, किन्तु शिक्षा ग्रहण करने में यह तरीका ना अपनायें।

आचार्य चाणक्य जी की शिक्षायें विद्यार्थी जीवन में **अवश्य अपने जीवन में उतारे** -

1. अपने रहस्यों को किसी से बतायें ना।
2. अपनी अच्छाई जितना हो सके फैलायें।
3. असली ज्ञान किताबों में नहीं मनुष्य के भीतर होता है।
4. कर्ज लेने से यथासम्भव बचें।
5. विनम्रता ही सफलता की कुंजी है।

हाय स्यापा ! मोबाइल का

नितिन कुमार जोशी
बी0कॉम0 द्वितीय वर्ष

हाय स्यापा ! मोबाइल का
क्या करूँ इस स्टाइल का ?
मम्मी बोली खाना खा ले,
बच्चे बोले मोबाइल चला लें ?
साधन कैसा ये सुविधाओं का
हाय स्यापा ! मोबाइल का
स्नैपचैट, इंस्ट्रा, वहाटसऐप
कैसे-कैसे इस पे ऐप
नन्हें-मुन्हें भी ये जाने
स्टोरी कैसे इस पे डाले
स्टेट्स ये स्टाइल का
हाय स्यापा ! मोबाइल का
चारों कोनो में परिवार बँटा है
एक छत के नीचे चाहें जुटा है
टाइम ना यहाँ सुनवाई का
हाय स्यापा ! मोबाइल का
इंटरनेट पर मिले जब यार
गर्मा-गर्म रोटी की महक
लुप्त होती नजर आती है यार
पापा, बच्चे सब बिजी हैं यार
कैसा स्ट्रेटस ये स्टाइल का
हाय स्यापा ! मोबाइल का
टेक केयर की
ऑप्शन भी यहाँ यार
हर्ट, लाइक के साथ स्माइली
जितना भी लुटा दो यार
कैसा ये चढ़ा बुखार
सवाल ये स्टाइल का
हाय स्यापा ! मोबाइल का ।।

अनमोल वचन

उमा राणा
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

1. झूठ बोलना पहली बार आसान हो सकता है पर बाद में सिर्फ परेशानी देता है और सच पहली बार बोलना कठिन होता है पर बाद में सिर्फ आराम देता है।
2. कुछ रिश्ते रब बनाता है। कुछ रिश्ते लोग बनाते हैं। पर कुछ लोग बिना किसी रिश्ते के रिश्ते निभाते हैं, शायद वो ही दोस्त कहलाते हैं।
3. इतना एटीट्यूटड न दिखा जिन्दगी में तकदीर बदलती रहती है, शीशा वही रहता है, पर तस्वीर बदलती रहती है।
4. सारा जहाँ उसी का है जो मुस्कुराना जानता है रोशनी भी उसी की है जो शमां जलाना जानता है, हर जगह मन्दिर है, मस्जिद है, गुरूद्वारे, गिरिजाघर हैं। लेकिन ईश्वर तो उसी का है जो 'सर' झुकाना जानता है।
5. किसी के आगे गिड़गिड़ाने से ना इज्जत मिलती है और न मौहब्बत, अपने स्वाभिमान को बनाए रखो यदि किस्मत में तो वो खुद चलकर आएगा। यदि किसी के साथ गलत करो तो अपनी बारी का इंतजार करना। वक्त उसका भी आएगा। जिन्दगी उसी की होती है जो हर मोड़ पर मुड़ना जानता है। कुछ पल तो हर कोई मुस्कराता है, जिन्दगी उसी की है जो सब कुछ खोकर भी मुस्कराना जानता है।
6. जीने का बस यही अंदाज रखो जो तुम्हे न समझे उसे नजरअंदाज करो। पहले लोग दिल से बातें करते थे लकिन अब मूड और मतलब से बातें करते हैं। धूप का तो नाम ऐसे ही बदनाम है, वरना, लोग एक-दूसरे से भी कम नहीं है सोचा नहीं था जिन्दगी में ऐसे भी फसाने होंगे रोना भी जरूरी होगा और आँसू भी छुपाने होंगें, पता नहीं वो बचपन की अमीरी कहाँ चली गई जब बारिश के पानी में हमारे भी जहाज चला करते थे।

शिक्षक हैं भगवान

पूजा पाल
बी0ए0 तृतीय वर्ष

मन्दिर सा विद्यालय मेरा
शिक्षा है भगवान
कर लो पूजा इनकी
प्राप्त करना है यदि ज्ञान
बड़े-बड़े विद्वान बने
करके इनका ही ज्ञान
मन में भरकर आदर इनका
अब दूर करो अज्ञान
वही नरक का भागी है
जो करे इनका अपमान
बात हमेशा मानो इनकी
करो इनका सदैव सम्मान
डांट उनकी ऐसी समझे
जैसे आंवलों का रसपान
अपने शिक्षक की कर सेवा
बन जाओ गुणों की खान
शिक्षा ले अध्यापक से बनो आदर्श इंसान
कर सके गर्व जिस पर देखो
अपना भारत देश महान

सन्तोष का पुरस्कार

कु० नीलम
बी0ए0 तृतीय वर्ष

विलायत में अकाल पड़ गया। लोग भूखे मरने लगे। एक छोटे नगर में एक धनी दयालु पुरूष थे। उन्होंने सारे छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक रोटी देने की घोषणा कर दी। दूसरे दिन सवेरे एक बगीचे में सब लड़के-लड़कियाँ इकट्ठे हुए। उन्हें रोटियाँ बंटने लगी। रोटियाँ छोटी बड़ी थी। सब बच्चे एक दूसरे को धक्का देकर बड़ी रोटी पाने का प्रयत्न कर रहे थे केवल एक छोटी लड़की एक ओर चुपचाप खड़ी थी। वह अन्त में आगे बढ़ी, टोकरे में सबसे छोटी अन्तिम रोटी बची थी। उसने प्रसन्नता से रोटी ली और घर चली गयी।

दूसरे दिन फिर रोटियाँ बाँटी गई। उस बेचारी को आज भी सबसे छोटी रोटी मिली। लड़की ने जब घर लौटकर रोटी तोड़ी तो रोटी में से सोने की एक मोहर निकली। उसकी माता ने कहा, मोहर उसी धनी व्यक्ति को दे आओ। लड़की दौड़ी गयी मोहर देने। धनी ने उसे देखकर पूछा, तुम क्यों आयी हो ?लड़की ने कहा, मेरी रोटी में मोहर निकली है, आटे में गिर गयी होगी, देने आयी हूँ। धनी ने कहा नहीं बेटी। ये तुम्हारे सन्तोष का पुरस्कार है। लड़की ने कहा, पर मुझे सन्तोष का फल तभी मिल गया। मुझे धक्के नहीं खाने पड़े। धनी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपनी धर्म पुत्री बना लिया और वह लड़की उस धनी की उत्तराधिकारी हुई।

गरीबी का फसाना

नेहा गौतम
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

काँच के ख्वाब और मिट्टी का है आशियाना
थोड़ी सी खुशी और गमों का है तराना
ऐसा है मेरी गरीबी का फसाना.....
कपड़े कम और ठंड ज्यादा है
एक ही किताब से पापा ने हम सब को पढ़ाया है
हर किसी ने नेहा गौतम की टूटी चप्पल
और टेड़ी चोटी का मजाक बनाया है
ये गरीबी ही है जिसने हर किसी को सताया है
सात की अमर में पढ़ाई का नाम नहीं
बालश्रम करना हमारे लिए कोई अपराध नहीं
मरता जो बच्चा उसके लिए कफन नहीं
गरीबों का होता है खुदा पर मेरा तो खुदा भी नहीं
लोगों के सामने हाथ फैलाना मजबूरी से आदत बन चुकी थी
एक थी चादर पुरानी जो कुछ फट चुकी थी
और कुछ जल चुकी थी
एक वक्त था अपनी गरीबी का जब
कड़ाके की सर्दी में पैर तो थे पर चप्पल नहीं थीं।
इतना सहने के बाद भी एक मेरी माँ ही थी जो रोती नहीं थी
ये गरीबी ही थी जो रात को भी सोती नहीं थी।

मर्यादा

ताहिरा परवीन
बी0ए0 प्रथम वर्ष

बेटी ने पिता से पूछा, पापा मुझे अपने शरीर का कितना हिस्सा ढकना चाहिए और कितना हिस्सा खुला छोड़ देना चाहिए।

पिता ने जबाब दिया, बेटी जितने हिस्से पर तुम नर्क की आग सहन कर सको उतना हिस्सा खुला छोड़ दो।

बेटी ने पूछा, ऐसा क्यों पापा ?जबाब में पिता बोले, बेटी शरीर को ढ़कना जरूरी है, बेटी तुम्हें याद है श्रीकृष्ण गोपियों के कपड़े चुरा लेते थे, गोपियाँ तालाब में निर्वस्त्र होकर नहाती थी तो प्रभु श्रीकृष्ण उनके कपड़े ले जाकर उन्हें परेशान करते थे कारण ये था कि वो नहीं चाहते थे कि कोई भी गोपी बिना कपड़ों के नहाये, और फिर गोपियों को परेशान होकर कपड़ों के साथ नहाना पड़ता था क्योंकि गोपियों को इंसान ही नहीं, बल्कि अन्य पशु-पक्षी भी देखते थे। जिसका ज्ञान गोपियों को बिल्कुल नहीं था, इसलिए वह बिना कपड़ो के नहाने के लिए मना करते थे, लेकिन कुछ मन्दबुद्धि लोगों ने इसका गलत मतलब निकालकर प्रचार किया, समझी बेटी ?बेटी बोली, पापा यदि मैं शरीर को ढक दूंगी तो खूबसूरत कैसे दिखूंगी ?

पिता खामोश रहकर सीधा ऑफिस चले गए, और वहाँ से बेटी के लिए कीमती गिफ्ट भिजवाया, गिफ्ट खोलकर देखा, तो एप्पल का सबसे महँगा फोन था।

अब पिता ने फोन करके पूछा, बेटी अब इस मोबाइल का क्या करोगी।

तो बेटी ने कहा, पहले तो स्क्रीनगार्ड लगाँऊगी और उसके बाद कवर खरीदूंगी।

पिता ने कारण पूछा तो बेटी बोली कि इससे फोन सेफ रहेगा, पिता ने मजाक में पूछा, क्या ये सब लगाना जरूरी है। तो बेटी बोली क्या पापा आपको ये सब नहीं पता क्या बहुत जरूरी है ये, तो पिता ने टेढा सवाल पूछा कि एप्पल कम्पनी के मालिक ने ये लगाने के लिए बोला है क्या ?तो बेटी बोली, हाँ पापा बाक्स के ऊपर ही लिखा हुआ है वरना फोन पर स्क्रेच आ सकते हैं, तो पिता ने पूछा बेटी इसको लगाने से फोन खराब दिखेगा।

बेटी ने उत्तर दिया नहीं पापा इसे लगाने से तो मेरा फोन और ज्यादा खूबसूरत दिखेगा। अब पिता ने जो कहा उससे बेटी की आँखें खुल गई बोले कि बेटी यदि एक मामूली मोबाइल की सेफ्टी के लिए स्क्रीनगार्ड और कवर जरूरी है तो बिटिया तुम तो मेरे लिए सब कुछ हो, ऐसे 1000 मोबाइल तुझ पर कुर्बान कर दूँ, तो बताओ तुम्हारी सेफ्टी के लिए तुम्हारे शरीर को ढ़क दूँ तो क्या तुम कम खूबसूरत लगोगी, शरीर को खुला रखने से नहीं बल्कि ढ़कने से खूबसूरती बाहर झांकती है और ये लड़की पर नहीं बल्कि लड़कों पर भी लागू होता है।

बेटी कोई उत्तर नहीं दे पाई, बेटी सिर्फ बोली पापा थैंक्यू आपने मुझे जिन्दगी की सबसे महत्वपूर्ण और बड़ी शिक्षा दे दी। ऐसी शिक्षा स्कूल, कॉलेज में नहीं बल्कि माता-पिता से ही मिल सकती है। बेटी बोली पापा यदि भगवान सच में प्रार्थना सुनते हैं तो मुझे हर जन्म में आपकी बेटी होने का सौभाग्य मिले।

परम ज्ञान

रूकैया परवीन
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

- अपनापन, परवाह, आदर और थोड़ा समय यह वह दौलत है, जो हमारे अपने हमसे चाहते हैं।
- समय जब पलटता है तो सब कुछ पलट देता है, इसलिए अच्छे दिनों में अहंकार न रखें और बुरे दिनो में सब्र रखना न छोड़ें।
- बोले गए शब्द ही हैं जिसकी वजह से इंसान या तो दिल में उतर जाता है या फिर दिल से उतर जाता है।
- कुछ हंसकर बोल दो, कुछ हंसकर टाल दो, परेशानियाँ तो बहुत हैं, कुछ वक्त पर डाल दो।
- कभी नंगे पैर दौड़ना पड़ता था, क्योंकि जूते खरीदने के पैसे नहीं थे। आज वहीं हिमा दास एडिडास की ब्रान्ड अम्बेसडर है।
- यह सोचा हम इंसानों की है कि एक अकेला क्या कर सकता है पर देखिए, उस सूरज को वह अकेला ही चमकता है।
- मुस्कुराहट को बैंक की एफ डी मत बनाइए, इसे रोज करंट अकांउट की तरह इस्तेमाल कीजिए।
- नीचे गिरे हुए सूखे पत्तों पर जरा आहिस्ता से पैर रखते हुए गुजरें, क्योंकि कड़क धूप में आप भी कभी उनकी छांव के नीचे खड़े हुए थे।
- जीवन में असफलताओं से मत घबराइये, यह तो आनी ही हैं, समस्याओं के बिना जीवन की सुन्दरता नहीं है।
- बारिश की बूँदे भले ही छोटी हों, लेकिन उनका लगातार बरसना बड़ी नदियों का बहाव बन जाता है, वैसे ही हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी जिन्दगी में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।
- उनकी परवाह मत करो जिनका विश्वास वक्त के साथ बदल जाए, परवाह उनकी करो, जिनका विश्वास आप पर तब भी रहे जब आपका वक्त बदल जाए।
- पहचान से मिला काम बहुत कम समय टिकता है, लेकिन काम से मिली पहचान उम्र भर कायम रहती है।
- जब किसी जरूरतमन्द की आवाज तुम तक पहुँचे तो परमात्मा का शुक्र अदा करना, कि उसने अपने बन्दे की मदद के लिए तुम्हें पसन्द किया है, वरना वो सबके लिए अकेला ही काफी है।
- यदि आप सही हैं तो आपको गुस्सा होने की जरूरत नहीं और यदि आप गलत हैं तो आपको गुस्सा होने का कोई हक नहीं।
- कर्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता और धैर्य ही एक ऐसा कड़वा पौधा है जिस पर फल हमेशा मीठे आते हैं।
- जो लोग डाइटिंग करते हैं उन पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए, जो पतला होने के लिए खाना छोड़ सकते हैं, वो किसी भी चीज को त्याग सकते हैं।
- पानी की तरह बनो जो अपना रास्ता स्वयं बनाता है पत्थर की तरह नहीं, जो दूसरों का रास्ता रोक लेता है।
- किसको कितना दिया और किसने कितना बचाया। इसके लिए ईश्वर ने आसान गणित लगाया, सबको खाली हाथ भेज दिया, खाली हाथ ही बुलाया।
- जीवन में ऊँचे उठते समय लोगों से अच्छा व्यवहार करें, कभी आप नीचे आए तो सामना इन्हीं लोगों से करना होगा।
- पूरा देश लड़कियों की इज्जत भले ही न बचा पा रहा हो, लेकिन लड़कियाँ पूरे देश की इज्जत बढ़ा रही हैं।
- जीवन में अगर खुश रहना है तो खुद को शान्त सरोवर की तरह बनायें जिसमें कोई अगर अंगारा भी फेंके तो खुद-ब-खुद ठंडा हो जाए।
- मिलना है तो कदर करने वालों से मिलों, इस्तेमाल करने वाले तुम्हें खुद ही ढूँढ लेंगे।
- अच्छे और सच्चे रिश्ते न तो खरीदे जा सकते हैं, न उधार लिए जाते हैं, इसलिए उन लोगों को जरूर महत्व दें जो आपको महत्व देते हैं।
- दुनिया में हजारों रिश्ते बनाओ लेकिन उन हजारों रिश्तों में से एक रिश्ता ऐसा बनाओ कि जब हजारों आपके खिलाफ हो तब भी वह आपके साथ हो।
- मैं कैसी हूँ मुझे नहीं मालूम, लेकिन मुझे मिला हुआ हर व्यक्ति बहुत ही अच्छा है।

चुटकुले

1. एक दर्जी बस में किसी से फोन पर बाते करते हुए कहता है- ''कि हाथ छाँट दिए हैं गला आकर काटूँगा।'' जिसे सुनकर सभी यात्री बेहोश हो जाते हैं।

+++++

2. पिता-बेटा, एक जमाना था, जब मै दस रूपये लेकर बाजार जाता था उसमें सब्जी, दूध, किराने का सामान सब ले आता था।
बेटा - पिता जी अब जमाना बदल गया है आजकल हर दुकान पर सी सी टी वी कैमरे लगे रहते हैं।

+++++

3. रोशन - ओए चमन, तू दरवाजे पर इतनी हड़बड़ी में कलर क्यों पोत रहा है, यार ?
चमन - वह क्या है कि मेरे पास कलर कम है और मुझे डर है कि कहीं खत्म न हो जाए।

+++++

4. महिला - मुझे अपने पूर्व पति से फिर से शादी करनी है।
वकील - अभी 8 दिन पहले ही तो तलाक करवाया है, फिर क्यों ?
महिला - वो तलाक के बाद खुश दिख रहे हैं और मैं ये बर्दाशत नहीं कर सकती।

+++++++

5. एक नवविवाहित बहू घर में पहली बार खाना बनाती है और अपने पति को परोसती है।
जब पति खाना खाता है तो कहता है कि ''तुमने खाने में नमक क्यों नहीं डाला।
इस पर पत्नी बड़ी ही शरमाई हुई बोलती है कि ''सब्जी थोड़ी जल गई थी और हमारे यहाँ जले पर नमक नहीं छिड़कते।

++++++

6. एक बार एक शराबी शराब पीकर सड़क पर था। तभी वहाँ राजा के दरबारी आए और कहने लगे कि इसे बंदी बना लो।
तब शराबी कहता है कि महाराज मुझे बंदा ही रहने दो।

गजल

कोमल
बी0ए0 तृतीय वर्ष

''हर जलते दीपक तले अँधेरा होता है,
हर रात के पीछे एक सवेरा होता है,
लोग डर जाते हैं, मुसीबत को देखकर
मगर हर मुसीबत के पीछे
सच का सवेरा होता है.....

इंसानियत इंसान को इंसान बना देती है,
लगन हर मुश्किल को आसान बना देती है,
लोग यूँ ही नहीं जाते, मन्दिरों में पूजा करने,
आस्था ही तो पत्थर को भगवान बना देती है।

धरती के वृक्ष

शहनाज खान
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

कह रही गर्म हवा मंथन से
कहाँ गए हमारे साथी
क्या उन्हें कैद किया
या आयी परेशानी
एक चिड़िया पंख पसारे
बैठ गई मेरे पास
पूछा कहाँ गए वो मतवाले
कहाँ है उनकी हरी शाख
आया मयूर निराश होकर
बोला, क्या करूँ मैं अब
पंख बखेरे नाच रहा हूँ
बादल ना आये मेरे घर
कृषि सूखी देख वहाँ
रोया किसान खेतों में
क्यों आधुनिकीकरण ने
मुझ पर ऐसा जुल्म किया
रोयी कोयल मन ही मन
अब कहाँ बैठ मैं गाऊँ गीत
डाली-डाली सूख गई
वातावरण की चमक, मीत
सहस्त्र बच्चे मेरी आँखों में
छवि बनके आए आज
पूछ रहे हैं बार-बार
वो मुझसे एक सवाल
वृक्ष कहाँ और उन पर झूला
कहाँ हमारा सावन आज
प्रदूषण की हवा ने
किया है हम पर प्रहार
सुन्दर, ठोस, निर्मल धरा
हुई आधुनिक चमक से वीरान
धरती रो-रो करे पुकार
सींच वृक्ष करो मेरा श्रृंगार

हाय ! रे परीक्षा

नितिज जोशी
बी0कॉम0 द्वितीय वर्ष

जिसका नाम सुनने से काँपता है हर बच्चा,
वो है परीक्षा।
परीक्षा का पेपर हाथ में आते ही,
इतना डर लगता है,
कि अच्छा नहीं किया तो
घर पर पिटना पक्का है।
3 घंटे में करने होते हैं लगभग 40 सवाल,
एक भी छूटा,
तो घर पर होता है बवाल।
रिजल्ट के एक दिन पहले,
रात को नींद नहीं आती है,
अच्छे नंबर पाने के लिए,
भगवान की याद आती है।
रखते हैं विद्यार्थी भगवान का व्रत
बदले में पास होने की होती है शर्त।
फेल होने पर डंडे से होती है सेवा,
पास होने पर मिलता है शानदार ईनाम
और फिर मुँह से निकलता है,
''थैंक्यू भगवान''
फिर आती है अगली कक्षा,
तब भी मुँह से निकलता है,
''हाय रे परीक्षा''

चरित्र की उत्कृष्टता

तृप्ति शर्मा
बी0एड0 प्रथम वर्ष

यज्ञ की जलती हुई समिधा की तरह ही सुंदर चरित्र की खुशबू चारों ओर फैलती है। चरित्र ऐसी ज्योति है, जिसके अलौकिक प्रकाश से आत्मा की ज्योति अखंडता और अमरता प्राप्त होती है। इसी से जीवन ज्योति भी जलती है मानव के व्यवहारिक आभूषण ही तरह होता है चरित्र। संयम और विचारों की दृढ़ता से व्यक्ति के चरित्रबल का अनुमान लगाया जा सकता है। यह एक ऐसी सुगंध है जिससे जीवन की बगिया महक उठती है। कहने का मतलब यह है कि यदि चरित्र रूपी सुगंध जीवन रूपी बगिया से गायब हो जाए तो उस बगिया का कोई मतलब नहीं रह जायेगा। यहाँ तक की भौंरे और तितली रूख नहीं करेंगे ऊपरी शरीर पर रंग रोगन लगाना तो सौन्दर्य सजाने का कार्य है। अंदर जब चरित्र रूपी रंग रोगन लगाया जाता है तो बाहरी (बनावटी) रंग का कोई महत्व नहीं रह जाता है। अन्दर का प्रकाश चरित्र का है जिसके आकर्षण से लोग खुद ब खुद खिंचते चले आते हैं। चरित्र आत्मा का ऐसा चुम्बक है, जो बहुत दूर से ही खींच लेता है। यह चुम्बक दरिद्र और रोगी व्यक्ति में भी हो सकता है। चरित्र की पूंजी जिसके पास है वह व्यक्ति चाहे निर्धन हो या रोगी दुनिया का सबसे बड़ा धनी व पूंजीपति बन जाता है। चरित्र ऐसी पूंजी है जो सब को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इस पूंजी को कमाने के लिए न तो किसी नौकरी की आवश्यकता पड़ती है न तो व्यापार, न खेती और न ही मजदूरी करने की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए संवेदना, सद्गुण और स्वधर्म का पालन करना पड़ता है। चरित्र धन को सुरक्षित करने के लिए न तो किसी बैंक में जमा करने की आवश्यकता है और न ही चोरों से बचाने के लिए रात भर जागने की जरूरत है इसे आत्मा रूपी तिजोरी में रखकर चैन से आराम किया जा सकता है। इस पूंजी का पूंजीपति किसी से घबराता नहीं, बल्कि इससे सभी घबराते हैं। हमें यह कभी नहीं बताया या पढ़ाया जाता है कि मनुष्य चरित्र के मामले में कितना नीचे गिरा है। मनुष्य चरित्र पूरी तरह से निर्धन या दरिद्र होता जा रहा है। जब मनुष्य की संस्कृति और सभ्यता का चरित्र ही आधार है तो अधिक धन-दौलत होते हुए भी मनुष्य दुखी क्यों है ?इस पर विचार करेंगे तभी बात समझ आएगी कि मनुष्य के अन्दर मानवता, जो इंसान की सबसे बड़ी स्थायी पूंजी है, उससे वह खाली हो गया है, नैतिकता और सद्गुणों की पूंजी से कंगाल हो गया है।

एक बार महर्षि दयानन्द के विरोधियों ने उसका चारित्रिक पतन करने की मंशा से बाहर की एक वैश्या को उनके पास भेजा। जैसे ही वह वैश्या महर्षि के पास पहुँची तो उन्होंने पूछा कैसे आना हुआ माँ, इतना सुनते ही वह वैश्या रोती हुई बोली, जीवन में पहली बार किसी के मुँह से माँ शब्द सुन रही हूँ। यह मेरा अहो भाग्य है। दयानंद के चरित्र की उत्कृष्टता के सम्मुख उनके विरोधियों की मंशा विफल हो गई। यह होती है चरित्र की उत्कृष्टता। बचपन में मिले संस्कारों का प्रभाव जीवन भर किसी न किसी रूप में असर डालता है। यदि बच्चों को चरित्रवान, बलवान, साहसी और संवेदना से युक्त बनाना है तो उन्हें ऐसे संस्कार देने चाहिए, जिससे उनका सम्पूर्ण जीवन उज्ज्वल हो सके।

विद्वानों का कहना है कि -

If wealth is lost, nothing is lost
If health is lost, something is lost,
If character is lost, everything is lost.

आत्म ज्ञान

धर्मदास सिंह
बी0एड0 प्रथम वर्ष

1. आत्म ज्ञान चेतना से सदैव पूर्ण रहता है। अत: चेतना ही आत्मा का लक्षण हैं यदि कोई हृदय आत्मा को नहीं खोज पाता तब भी वह आत्मा की उपस्थिति को चेतना की उपस्थिति से जान सकता है। कभी-कभी हम बादलों में अन्य कारणों से आकाश में सूर्य को नहीं देख पाते किन्तु सूर्य का प्रकाश सदैव विद्यमान रहता है। अत: हमें विश्वास हो जाता है कि यह दिन का समय है ठीक उसी प्रकार चूंकि शरीरों में, चाहे प्रशु के हो या पुरूषों के, कुछ न कुछ चेतना रहती है। चेतना का अर्थ है (समझ, मान, अनुभव, संवेदन)। आत्मा के दो प्रकार हैं :- एक तो अणु-आत्मा और दूसरा विभु आत्मा।

   ''परमात्मा तथा अणु-आत्मा दोनों शरीर रूपी उसी वृक्ष में जीव के हृदय में विद्यमान हैं और इनमें से जो समस्त इच्छाओं तथा शोकों से मुक्त हो चुका है।

2. मनुष्य अपने आप को पहचानने से भगवान को पहचान सकता है। ''मैं कौन हूँ'' भली भाँति विचार करने पर मालूम होता है कि ''मैं'' नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। हाथ, पैर, खून, मांस इत्यादि, इनमें से मैं कौन है ?जिस प्रकार प्याज का छिलका अलग करते-करते छिलका ही निकलता जाता है। शेष कुछ बचता ही नहीं, उसी तरह विचार करने पर अपत्व के नाम से कुछ भी नहीं बचता। अन्त में जो कुछ रहता है वही आत्मा का चैतन्य है। 'अहंभाव' दूर हो जाने पर भगवान के दर्शन होते हैं।

3. ''मैं'' दो तरह का होता है, एक है पक्का मैं और दूसरा कच्चा मैं

   कच्चे मैं का अर्थ - मेरा मकान, मेरा घर, मेरा लड़का आदि।

   पक्के मैं का अर्थ - मैं उसका दास, मैं उनकी सन्तान आदि।

4. शरीर के रहते मेरा अथवा मैं-पन पूर्ण रूप रूप से मिट नहीं सकता। कुछ ना कुछ रह ही जाता है। जैसे नारियल के पेड़ की शाखाएँ अलग हो जाने पर भी पेड़ पर उसके निशान तो बने ही रहते हैं। परन्तु यह मैं पन नाममात्र का है और मुक्त पुरूष को बाँध नहीं सकता।

5. एक बार मैं एक संत से मिला और उनसे मैं ज्ञान के बारे में पूछा और उन्होंने बताया कि ''आपकी इस अवस्था में रोज-रोज आपको ध्यान करने की क्या आवश्यकता है। तो संत बोले कि बेटा ''लोटे को यदि रोज माँजा न जाए तो मैला पड़ जाता है। नित्य ध्यान न करने से चित्त में अशुद्धि आ जाती है। फिर मैंने पूछा कि अगर लोटा सोने का हो तो काला न होगा फिर संत भगवान बोले कि सच्चिदानन्द का नाम होने पर फिर साधक की आवश्यकता नहीं रह जाती।

6. मैं का बोध रहने से तुम का भी बोध रहेगा। जैसे-किसे उजाले का ज्ञान है उसे अंधेरे का ज्ञान भी अवश्य रहेगा। जिसे अच्छे का ज्ञान है उसे बुरे का भी ज्ञान होगा। जिसे पुण्य का ज्ञान है उसे पाप का भी ज्ञान अवश्य होगा।

7. मैं एक बार श्रीमद् भगवद्गीता कथा सुन रहा था तो व्यास भगवान बता रहे थे कि एक साधु सदैव ज्ञानोन्माद अवस्था में रहते थे, किसी से बोलते न थे और लोग भी उन्हें पागल समझते थे। एक दिन वे शहर से भिक्षा लाकर एक कुत्ते के ऊपर बैठकर वहीं भिक्षान्न खाने लगे और कुत्ते को भी खिलाने लगे। यह देखकर बहुत से लोग वहाँ इकट्ठे हो गये और पागल कहकर उनकी हँसी उड़ाने लगे। यह देखकर साधु ने लोगों से पूछा 'तुम लोग हँसते क्यों हो ?' और बोले -

विष्णु परि स्थितो विषणु, विष्णु, खादति विष्णवे।
वचं हससि रे विष्णों सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥

Quality Concern in Higher Education of India

Dr. P. K. Tyagi
Associate Professor and Head,
Statistics Department

Higher education is a powerful tool to build modern, value-based, knowledge based, culture based, and peaceful society which can lead the country towards becoming super power in the world. It is also considered one of the important and strong tools for the development of any country. Primary education is necessary for creating base, while, higher education is extremely important for providing cutting edge. Higher education contributes to the growth of nation by providing specialized knowledge and skill manpower. India's higher education system is the second largest in the world, after the United States. The main governing body at the tertiary level is the University Grants Commission, which enforces its standards, advises the government, and helps coordinate between the centre and the state.

The quality in education need to be defined in the wider sense of the overall aim of education as the all round development of the individual and his commitment to social objectives; and viewed in this context, there is no doubt that vigorous efforts will have to be made to improve these to suit the changing needs of the country. It has become increasingly evident that the relevance of education, its significance, its validity for personal aspiration, its link with societal needs and goals, its efficiency and impact are the basic parameters of every educational system. Quality in education can also be interpreted from a different viewpoint; it means educational standards are judged from examination results. An educational institution that shows high pass percentage is considered to be an institute of great quality.

University Education Commission (1948-49) rightly felt the uneasy sense of the inadequacy of the higher education system particularly in terms of quality and standards. Reiterating the importance of quality in higher education and its sustainability, the Kothari Commission in (1964-66) remarked that "the situation of higher education was unsatisfactory and even alarming in some ways that the average standards have been falling and rapid expansion has resulted in lowering quality". We have to therefore, gear up the machinery of higher education to fulfill the aspirations of people and be conscious towards quality maintenance as well as its role to elevate the country to new heights. In his message, Dr. Radhakrishnan communicates "there is need for change in the perception and attitude of universities realizing that their field is wider, task is greater and goal is higher in building a strong and happy India." The universities are not merely places of conferring degrees and distinctions. They besides being places of learning, also centers of service and wholesome development of human

personality of men and women turning them into fine human beings. This will demand for quality education at higher education level. Quality in education depends on several factors. A few of them include:

- Politicization
- Poor quality of intake
- Managerial Inefficiency
- Overcrowded Classrooms
- Inadequate Student Services
- Inadequate material resources
- Non- accountability of institutions
- Inefficiency in Teaching
- Examination Reforms
- Teaching Methods

There are other factors also which are affecting the quality of higher education such as motivation of the teachers and students, favourable environment for teaching-learning process, irrelevance of the curriculum leading towards the low employability etc. which needs to be improved for enhancing the quality of higher education in India.

Thus it can be concluded that education is the key to the progress especially higher education which provides the cutting edge and skilled manpower. But, quality of higher education is declining and is a matter of concern for all the stakeholders as well as for the whole nation. Indian higher education has expanded in quantity but lacking behind in terms of quality. India cannot progress until it higher education system is qualitatively strong enough because this poor quality is resulting in low employability, low performance of the specialized individuals, lack of innovative and creative ideas etc. which are the key elements of success and progress in present time. In all, there is a need to enlarge the adaptive capacity and quality of the higher education system so that it is more responsive to the changing world of work and meets the diversified needs of economy – both domestic and global. For that purpose diversification of the Indian higher education and training system has to be pursued as a goal. This can be achieved by having a proper mix of public and private, formal and non-formal institutions. Special initiatives are required to enhance employability. Curriculum and content has to be continually renewed through Teaching and Learning Support Networks and specific skill development network may be set up. Collection of data on job market trends, its analysis and dissemination is important. Drawbacks mentioned above need to be transformed into the strength of the Indian higher education system but this can only be done with the strong willpower, determination and readiness to change.

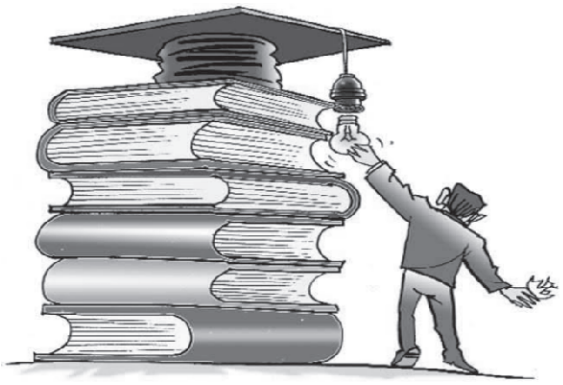

Need of Reformation in Higher Education in India

Dr. R. K. Agrawal
Associate Professor and Head,
Mathematics Department

The growth rate of India in the last two decades can directly attribute to the higher education system. If India wants to greater growth, it must transform its universities and other higher technical education institution to world class institutions, then its higher education system must be reformed. Since, the country must safeguard the interests of young researchers, besides providing a strong platform for research and ensure permanent appointments for faculty members. The main problems are as follows:

Lower enrolment ratio:

There is a huge gap between those who move out from school and who enroll in higher education system, which is really needed to be bridged. India's Gross Enrolment Ratio (GER) is around 19 percent which 6 per cent lower than the world average and it is 50 per cent lesser than countries such as Australia and the US. India has the largest population of young people (100 million) between 17 to 19, When around 19 % students enrolment into higher education institutes which translates to 20 million, which very low.

One common platform:

In India, apart from UGC (University Grants Commission) there are several regulatory bodies like AICTE, MCI, BCI, NCTE and those under state governments. These individual bodies move in different paths, creating various hurdles like exams, teaching methods for students. So we need to bring all important regulatory bodies on a common platform and develop a common understanding and strategy for managing the change.

Lack of good faculty:

Shortage of quality faculty is proving to be a great stumbling block in the transformation of higher education in India. According to a government report, there is a massive need for expansion in higher education; but there is also a lack of deserving Ph.D. candidates for faculty positions in the higher education. This has created a shortage of almost 54 percent in the faculty talent pool in higher education, such a deficiency will greatly prove to be a stumbling block, which mainly due to the bad decisions taken by policymakers, bureaucrats, and university administrators.

Lack of new teaching methods:

The Indian higher education system has been following lecture drive method for several years. This has turned ineffective and not sufficient in many areas. Besides, there is a lack of teacher's learning and development areas need which is should be in the form educating them. There are no approaches like mentoring, spot visits, practical educational tours and involvement in research projects with peers. Finally, one need to change the teacher's training curriculum along with content, subject and methodology. Teachers must be encouraged take short duration professional training courses, which could help to strengthen the teacher's learning and development areas. Finally, there is no syllabus for integrating development concepts like emotional competencies, life

skills and info-savvy skills. etc. Education institutions often lack the emphasis for pointing out on the learning outcomes than content teaching. Many institutions never take the initiative to collaborate or participate with international institutes in order to get the exposure of digital learning methods or technologies.

Increase in profit making institutions:

Though private player in the higher education contributes significantly to the growth of the sector, the profit intent of these institutions has threatened the very basic foundation of social development goal. Many private players who are politicians, realtors, businessmen/women mint huge money by creating educational institutions, which had made us to say that no secret that the education industry has long lost its noble cause and is more of a business. This greatly harmed the higher education system.

Government initiatives for the issues:

The government has taken a number of initiatives to tackle the reduce the demand supply gap in school education. It has been proposed to set up another 6,000 schools at the block level as model schools to benchmark excellence. Of these, 2000 will be set up under Public Private Partnership. Besides, a new proposal by the Human Resource Development Ministry has been put forward to replace the University Grants Commission, which is the governing body for all the colleges and universities. The new Higher Education Commission of India will also govern the functioning of the universities and colleges but it would give a special power of **acting as 'self-governing' bodies.**

Apart from the government initiative more is needed to be done. It includes promising greater autonomy to universities/colleges, developing brand new regulatory environment for upgrading existing institutions into the world-class category. Besides, one has to re look at the entire range of regulations that impact higher education which includes —teacher qualifications, recruitment system, funding system, credit scoring system, teacher progression (API), quality control of private institutions, procedures for financing central/state universities, methodology or schemes for grant of autonomy. Re-study the old system to find the best regulations, which can help us in a number of ways, like whether the regulations have achieved the objective for which they were conceived; whether, in the current situation and the vision which holds for the future. Moreover, one needs to understand that whether these regulations are necessary in the present form or are they acting as hurdles in the path to reform. With the announcement of the new higher education body, one needs to lay emphasis to change the mode from a 'regulator' to a 'promoter and facilitator'. The new body must shed the role of being a 'licensor'.

Finally, there is must be a broad based academic development plan which includes students, professors, researchers and teachers for all kinds of consultations. Since most of the educational institutions are run by either big private players or the government. Many most of the top brass refuses to meet or discuss with them. As great reforms are done for the benefits of students and society, they should be included for implementing any new reforms.

Novel Coronavirus 2019: A Global Health Emergency

Dr. Shailendra Kumar Singh
Assistant Professor, B.Ed. Department

The 2019-nCoV coronavirus spreads from person-to-person in close proximity, similar to other respiratory illnesses. More than 14,000 people have been infected by the new coronavirus, which continues to spread to more countries since it was first detected in the Chinese city of Wuhan in early December. At least 304 people have died so far in China and almost all in Hubei province, of which Wuhan is the capital.

How is the coronavirus spreading?

The 2019-nCoV coronavirus spreads from person to person in close proximity, similar to other respiratory illnesses, such as the flu. The disease can be transmitted through sneezing or coughing, which disperses droplets of body fluids such as saliva or mucus. According to scientists, coughs and sneezes can travel several feet and stay suspended in the air for up to 10 minutes. These droplets can come into direct contact with other people, or can infect those who pick them up by touching surfaces on which the infected droplets land, or touching a surface and then their face. It is not yet know how long the virus can survive on surfaces, but in other viruses, the range is between a few hours or months. Transmission is of particular concern on transport, where droplets containing the coronavirus could pass between passengers or via surfaces like plane seats and armrests. The incubation period of the coronavirus, the length of time before symptoms appear, is between one and 14 days. Though not yet confirmed, Chinese health authorities believe the virus can be transmitted before symptoms appear.

Can people be immune to the new coronavirus?

Viruses that spread quickly usually come with lower mortality rates and vice versa. Although the total number of deaths has risen, the current death rate stands at about 2.4 percent - this is lower than first feared and well below severe acute respiratory syndrome, another coronavirus that broke out between 2002 and 2003, which killed 9.6 percent of those infected. As the virus is an entirely new strain, there is no existing immunity in anyone it will encounter. Some level of immunity will naturally develop over time, but this means that those with compromised immune systems, such as the elderly or sick, are most at risk of becoming severely ill or dying from the coronavirus.

How can people protect themselves?

In terms of self-protection and containing the virus, experts agree that is important to wash hands thoroughly with soap; cover your face when coughing or sneezing; visit a doctor if you have symptoms and avoid direct contact with live animals in affected areas. While face masks are popular, scientists doubt their effectiveness against airborne viruses. They may provide some protection to you and others, but they are loose and made of permeable material, meaning droplets can still pass through. Some countries, such as the UK and Nigeria, have

advised people travelling back from China to self-quarantine for at least two weeks.

How serious is this epidemic?

Given the response and effect, the new coronavirus is being treated as a serious concern. The infection is now more widespread than the 2002-03 severe acute respiratory syndrome (SARS) episode, which also originated in China, in terms of affected people but not deaths. The World Health Organization has designated the outbreak with its highest warning level, as it has for five others, including Ebola in 2014 and 2019, polio in 2014, the Zika virus in 2016 and swine flu in 2009.

I LOVE NATURE

Megha Sarin
B.Com IInd Year

I love the sound of birds,
So early in the morn,
I like the sound of puppies
Soon after they are born.

I love the smell of flowers
And the taste of honey from bees.
I love the sound the wind makes
When it's blowing through the trees.

I love the way the sky looks
On a bright and sunny day,
And even when it's rainy,
I love the shades of the grey

I love the smell of the ocean.
The sound of waves upon the sand,
I love the feel of sea shells and
How they look in my hand.

MAKE THE MOST OF TODAY

Anmol Kumar
M.Sc
Physics Department

To realize the value of "One Year" ask a student who has failed in his examination.

To realize the value of "Month" ask a mother how has she given birth but to a premature baby.

To realize the value of "One Week" ask an editor of a weekly newspaper how he has arranged the news.

The realize the value of "One Day" ask a daily labour how he has maintained health of ten kids to food.

To realize the value of "One Hour" ask a lover who is waiting to meet his/her beloved.

To realize the value of "One Minute" ask a person who has missed the train.

To realize the value of "One Second" ask a person who has survived an accident.

To realize the value of " One Mill Second" ask a person who has won silver medal in olympic.

The clock is running tick-tick-tick..... without waiting for anything.

Note : Time once gone has gone forever . Time and tide wait for none.

National Service Scheme (NSS): An Introduction

Dr. Seemant Kumar Dubey
Assistant Professor and Head,
Department of Physical Education

The National Service Scheme (NSS) is a Central Sector Scheme of Government of India, Ministry of Youth Affairs & Sports. It provides opportunity to the student youth of 11th & 12th Class of schools at +2 Board level and student youth of Technical Institution, Graduate & Post Graduate at colleges and University level of India to take part in various government led community service activities & programmes.The sole aim of the NSS is to provide hands on experience to young students in delivering community service. Since inception of the NSS in the year 1969, the number of students strength increased from 40,000 to over 3.8 million up to the end of March 2018 students in various universities, colleges and Institutions of higher learning have volunteered to take part in various community service programmes.

Motto:

The motto of National Service Scheme is "NOT ME BUT YOU".

Benefits of Being a NSS Volunteer:

A NSS volunteer who takes part in the community service programme would either be a college level or a senior secondary level student. Being an active member these student volunteers would have the exposure and experience to be the following:

- an accomplished social leader
- an efficient administrator
- a person who understands human nature

Major Activities:

National Integration Camp (NIC):

The National Integration Camp (NIC) is organized every year and the duration of each camp is of 7 days with day-night boarding & lodging. These camps are held in different parts of the country. Each camp involves 200 NSS volunteers to undertake the scheduled activities.

Adventure Program:

The camps are held every year which are attended by approximately 1500 NSS volunteers with at least 50% of the volunteers being girl students. These camps are conducted in Himalayan Region in the North and Arunachal Pradesh in North East region. The adventure activities undertaken in these camps includes trekking of mountains, water rafting, Para-sailing and basic skiing.

NSS Republic Day Parade Camp:

The first Republic Day Camp of NSS Volunteers was held in 1988. The camp takes place in Delhi between 1st and 31st January every year with 200 NSS selected volunteers who are good in discipline, March-past and cultural activities.

A Contingent of selected NSS volunteers participates in the Republic Day Parade at Rajpath, New Delhi on 26th of January every year in accordance with the guidelines and requisition of the Ministry of Defence.

National Youth Festivals

National Youth Festivals are organized every year from 12th to 16th January by the Government of India, Ministry of Youth Affairs & Sports in collaboration with the State Governments in different parts of the country. Eminent guests, speakers and youth icons are invited to address and interact with about 1500 participating NSS volunteers during the National Youth Festivals.

National Service Scheme Award

The Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India had instituted the National Service Scheme Awards to recognize the voluntary service rendered by NSS volunteers, Programme Officers, N.S.S. units and the university/senior secondary council. These awards were instituted in the year 1993-1994. Since then, these awards are given away every year at various Levels.

CHEMICAL ANALYSIS OF TOPPERS OCCURANCE

Vikas Kumar
B.Ed (IInd Year)

Toppers are never found in pure state as they are always contaminated with disease like headache, and found discussing the problems with other students, teachers etc.

Methods of Preparation :-

There are many methods of preparing toppers. They are usually prepared by following methods.

1. Students + Books + Peaceful atmosphere = Toppers
2. Students + Good Teachers + Hard work = Toppers

Chemical Properties:-

1. Highly Soluble in books, newspaper but completely in soluble in comics, movies.
2. They are usually colourless and tasteless.
3. They are bad conductor of wrong advices.

Physical Properties:-

1. Rare complexion with dark circle below eyes.
2. They are allergic to pictures fashion, and fiction.
3. They are always punctual.

Uses :-

1. They bring fame to their schools and parents.
2. Book sellers are mainly dependent on them for their living.

Simple Tests To Check The Purity Of Kitchen Ingredients

Dr. Chandrawati
Associate Professor and Head,
Chemistry Department

Due to the long supply chains, none of us knows where exactly our food comes from. Is it even pure or there is something harmful mixed in it?

If you are often worried about the adulteration in your daily food, here is help. Here are some easy techniques that you can use at home and test the purity of common kitchen ingredients:

Turmeric powder

Adulterants: Chalk powder, lead chromate and metanil yellow

How to test: Take some turmeric and put it in a transparent glass. Add a few drops of water and concentrated hydrochloric acid to it. Now swirl the mixture property. If it turns pink, it indicates the presence of mentanil yellow. If there are small bubbles, it indicates the presence of chalk powder.

Another easy way to check the adulteration in turmeric is by adding a teaspoon of turmeric to a glass of warm water. Leave the mixture for a while and do not mix it. If the powder doesn't mix and settles down, it means the turmeric is pure. Cloudy water indicates adulteration.

Red chilli powder

Adulterants: Brick powder and artificial colour

How to test: Take a spoon of chilli powder and mix it in a glass of water. If there is a swirl of bright red colour it indicates the presence of artificial colouring. While settling down of gritty sediment shows the presence of saw dust or brick powder.

Cumin powder/seeds

Adulterants: Charcoal dust, saw dust, starch with grass seeds coloured.

How to test: Add a teaspoon of cumin in a glass of water and leave it for a few minutes. The adulterants will float while the pure spice will settle down at the bottom.

Take some cumin seeds in your hands and rub your palms vigorously. If your palms turn black, it indicates adulteration.

Black pepper

Adulterants: Papaya seeds

How to test: Take a teaspoon of black pepper corn and put them in a bowl of alcohol. The real corn will settle at the bottom while the papaya seeds will float.

Sugar

Adulterant: Chalk powder

How to test: Take a teaspoon of sugar and leave it in water for 30 minutes. A clear solution indicates purity while a white solution along with residue at the bottom indicates the presence of chalk.

Salt

Adulterant: Chalk powder

How to test: Take a teaspoon of salt and leave it in water for 20 minutes. A clear solution indicates purity while a white solution along with residue at the bottom indicates the presence of chalk.

Value Education in India

Gurudatt Sharma
Assistant Professor, B.Ed. Department

"Value-education is the aggregate of all the process by means of which a person develops abilities, attitudes and other forms of behaviour of the positive values in the society in which he lives." - C. V. Good

The very purpose and main function of education is the development of an all round and well-balanced personality of the students, and also to develop all dimensions of the human intellect so that our children can help make our nation more democratic, cohesive, socially responsible, culturally rich and intellectually competitive nation. But, nowadays, more emphasis is unduly laid on knowledge-based and information-oriented education which takes care of only the intellectual development of the child. Consequently, the other aspect of their personality like physical, emotional, social and spiritual are not properly developed in providing for the growth of attitudes, habits, values, skills and interests among the pupils. It is here that we talk in terms of value-education. A complete description of what value-education is, could entail a study in itself.

Value-education is a many sided endeavour and in an activity during which young people are assisted by adults or older people in schools, family homes, clubs and religious and other organisations, to make explicit those underlying their own attitudes, to assess the effectiveness of these values for their own and others long term well-being and to reflect on and acquire other values which are more effective for long term well-being. Value Education, is thus concerned to make morality a living concern for students. Hence, what is needed is value-education. Despite many educators and educationists description regarding value-education, it cannot be denied that continuing research will continue to making the description of value- education more adequate.

A wide range of values of moral, aesthetic and social nature that have evolved during the marathon march of the human civilisation is posing before us a crisis of priorities: which of these values is to be cultivated and what is the appropriate stage of doing so? Hence, the issue becomes all the more jumbled when it comes to fixing up of the responsibilities: who is to inculcate values? — parents, leaders, the affluent, the business tycoons, thinkers, artists, teachers? The easy and obvious answer is — "the teacher is the prime inculcator of values because the young are under his or her formal care".

Whatever may be the answer! Really speaking, it is not enough just to know about values, because values have to be practiced. Our country is undergoing radical, social changes. So, the students who are the future citizens of tomorrow have to be oriented to respond to and adjust with these social changes satisfactorily by equipping them with desirable skills and values.

Budget 2020 Highlights

Dr. Tarun Shrivastava
Assistant Professor,
Commerce Department

Finance Minister Nirmala Sitharaman presented the Union Budget 2020-21 in the Lok Sabha on 1st February 2020. This is the second budget after Narendra Modi led National Democratic Alliance returned to power for a second term. This year's Union Budget centres around three ideas — Aspirational India, Economic development, A Caring Society. Central government to provide ₹99,300 crore for educational sector in FY21. New education policy will be revealed soon, said Sitharaman. Sitharaman also proposed new income tax slabs and lower rates. These income tax rates are optional and are available to those who are willing to forego some exemptions and some deductions. This year's Economy Survey projected economic growth to rebound and hit 6%-6.5% in the next financial year starting April 1.

Here are the highlights of Budget 2020

-More airports, highways

-India to develop 100 more airports by 2024

-India to monetize over 6,000 km of highways in 12 lots by 2024

-India to privatize at least one major port

-Things that will become dearer

-Customs duty on walnuts raised to 100% from 30%

-Customs duty on autos and auto parts raised by up to 10%

-Customs duty on platinum and palladium cut to 7.5% from 12.5% for certain purposes

-Nominal health cess of 5% on import of medical devices

-SUBSIDY

* Food subsidy seen at ₹1.15 trillion in 2020/21

* Petroleum subsidy seen at ₹409.15 billion in 2020/21

* Fertiliser subsidy ₹713.09 billion in 2020/21

-GROWTH/DEFICIT

- Nominal GDP growth in 2020/21 estimated at 10%
- Fiscal deficit for 2019/20 seen at 3.8% of GDP
- Fiscal deficit for 2020/21 seen at 3.5% of GDP
- Fiscal deficit for 2021/22 seen at 3.3% of GDP
- Fiscal deficit for 2022/23 seen at 3.1% of GDP
- Revenue deficit seen 2.7% of GDP in FY21

- Sub-urban rail will boost multi-modal connectivity and open up new economic opportunities for areas in and around cities like Bengaluru, said Ola Mobility Institute

- Moody's Investors Service said the budget highlights the challenges to fiscal consolidation. India's government debt is already “significantly higher" than the average for its Baa-rated peers, said Gene Fang, associate managing director of sovereign risk.
- Custom duty on fan upped to 20% vs 10%. Custom duty on specified goods used in refrigerators & ac hiked to 12.5% vs 10%.
- **A National Logistics Policy to be released soon:**
- To clarify roles of the Union Government, State Governments and key regulators.
- A single window e-logistics market to be created
- Focus to be on generation of employment, skills and making MSMEs competitive
- National Skill Development Agency to give special thrust to infrastructure-focused skill development opportunities
- Project preparation facility for infrastructure projects proposed
- To actively involve young engineers, management graduates and economists from Universities
- Infrastructure agencies of the

government to involve youth-power in start-ups

The Value of Discipline

Dev Swaroop Gautam
Assistant Professor,
B.Ed Department

"Discipline regulates our actions and life"

Discipline is the crux of life. If nature leads a law abiding life, we, the human beings, must work for a system that may urge us to lead a disciplined life. For this, we need regularity, punctuality and proper mental set up because it is discipline which guarantees progress prosperity and success. Discipline is the key to all progress and promotion. In our society, it is essential on our part to live a regulated life so that all may lead a good and harmonious life. We should keep in mind the motto of "live and let live". Otherwise the progress and project of a national would come to a stand still. Life will not run smoothly and people will resort to the jungle rule "might is right". This will put our civilization in a great mess.

Our country needs men of disciplined nature and without discipline, we are bound to lose in every way. Let us endeavour our best to remain disciplined throughout our life.

Way to Environment Conservation

Dr. Sudha Upadhyaya
Assistant Professor,
B.Ed. Department

The increasing rate of modernisation and urbanisation has taken a heavy toll on environment. Due to modernization in the lifestyle of people, the condition of environment is degrading day by day. Where on one hand, technology is doing wonders to bring more comfort in life, environment on the other hand is facing all the negative repercussions. Environment is being affected in many ways like increasing pollution, depletion of energy resources, poisonous air, and adverse weather conditions and so on and so forth. However, nowadays people are becoming aware to protect our environment and are trying to make genuine efforts to save it from further degradation. Following are some of the ways in which every person can contribute to some extent in saving the environment.

1. Grow more Trees

Trees not only help in purifying the air around us but also benefit in million other ways, one of which is climate control. As we know that greenhouse gases have poisoned the air and have also led to the depletion of ozone layer of the atmosphere which in turn has caused the temperature to rise. Trees contribute in maintaining the air quality by emitting oxygen and thus reduce the greenhouse effect from the atmosphere. As a result of this, trees save us from extreme weather conditions. Lately, people are getting more aware about the benefits of planting trees as several missions and programmes are being organised by the governments of various countries and UN as well.

2. Say No to Plastics

Plastics are non-biodegradable substances that do not decompose ever. Plastics cause much land pollution and also prove fatal for animals when they swallow polythene bags or pouches. It chokes their respiratory system and as a result they die out of suffocation. Also burning of plastic causes production of highly poisonous and toxic gases that are harmful for humans to inhale. We must stop the use of plastics that is available in the form of bags, toys and other daily use objects and turn towards better options like jute bags or paper bags, clay toys etc. which are eco-friendly as well.

3. Use Alternative Sources of Energy

Coal and petroleum are the two important sources of energy used by people in transportation, to obtain electricity, in industries and factories etc. However, we

should also consider the harmful effects of using these sources of energy. The gases emitted during the combustion of coal and petroleum are responsible for increasing the level of carbon dioxide in the atmosphere which highly contributes in depleting the ozone layer and thus adds up in raising the temperature. We must turn to other forms of energy like wind energy, solar energy, geothermal energy etc. as they do not leave any aftereffects and work in an environment friendly manner.

4. Use Public Transport

Modernisation has brought considerable change in the lifestyle of people and as a result of this people turn to a more comfortable and lavish ways of living. Owning personal vehicles now is no more limited to need; rather it has become a status symbol. People these days own more cars than the number of family members in the house and this has undoubtedly left a negative impression on the environment. The gases coming out of the vehicles by the combustion of fuels are adding to the air pollution even more. Thus, it is better to use public transportation for going to work place ro reduce pressure on environment.

5. Do not Litter your Surroundings

Littering around is in itself a bad habit that many of us have. However, it does not just make the place unhygienic but also affects the environment adversely. Throwing away wrappers, garbage and other waste around your surroundings adds up in the breeding of germs and bacteria which are responsible for causing several diseases and polluting the air around. Wastes you throw away also contain non-biodegradable items which remain there in the environment and sometimes reach to the water bodies and destroy the life there as well.

6. Save Natural Resources

The reserves of non-renewable natural resources like coal and petroleum are limited and endangered. We have already exhausted these reserves by using them with carelessness and now the situation has arrived that only a handful amount of these non-renewable forms is left. What we can do is to follow the idea of sustainable use and use these resources wisely and judiciously. We can rely upon the other renewable forms of energy and put less pressure on the non-renewable ones. However, we must not consider the renewable reserves as our own property and should not waste them too. This way we can save our natural resources for ourselves as well as for our future generations.

7. Rainwater Harvesting

Although water is a renewable natural resource, yet the careless use and wastage of water has started the problem of water crisis in several countries. Our biggest fault is that we

start taking things for granted, especially those that are readily available to us. However, the need of this hour is to start taking this issue seriously and try to save water in as many ways as possible. One of the best and easiest ways to do so is by collecting rain water in reservoirs, tanks and at a very primary level in our rooftops so that it could be used for other purposes in our houses like for watering plants, washing dishes etc.

8. Reduce Pollution

Pollution is one of the major reasons for the degradation of environment. All kinds if pollution like land, air and water act as the mediums to ruin our beautiful earth and make it unsuitable to live in comfortably. However, it is only humans who are responsible for pollution as they are the agents of spreading it. The use of refrigerators, air conditioners, microwaves, factories, industries motor vehicles etc. contribute in causing air pollution. The discharge of waste from factories, dumping of garbage into the water bodies is leading to water pollution. We must understand that our actions are not only posing threat to the environment but ultimately it is making the earth unfit for us to live in. Thus, we should stop practicing such activities at least at our level to help in reducing pollution.

9. Recycle

Recycling the products is the best way to reuse objects in different ways. It is the process of turning waste material into new and usable ones. This could be seen as an alternative for waste disposal as we know that disposing off waste especially non-biodegradable objects, pressurises the environment to a great extent. The processes of waste disposal like incineration and landfilling cause tremendous amount of damage to the environment in the form of air and land pollution. By recycling, we can use the same object all over again in different forms and as a result, the production of materials like plastics could be lowered down.

10. Spread Awareness

Indeed, working on the personal level to protect our environment helps a lot. However, we should also step out of our comfort level and try to make others aware of the practices which lead to the degradation of environment. We must take extra efforts to spread this awareness to the less educated and less exposed section of the society. If everyone of us begin to do our part in saving the environment, the earth will again become the same beautiful and healthy place for living.

Importance of Sanskrit Language

Laxman Singh
Assistant Professor and Head, Sanskrit Department

For those who aren't familiar with it, Sanskrit is the main liturgical language of Hinduism and used to be the lingua franca that helped all of the different regions of Greater India communicate with each other. Most of the greatest literary works to come out of India were written in Sanskrit, as well as many religious texts. Sanskrit is the language of Hindu and Buddhist chants and hymns as well. Today, only about 1% of the population of India speaks Sanskrit, though it is protected as a scheduled language and is the official language of one Indian state, Uttarakhand.

India, in its many different incarnations, has a history that dates back to before the Iron Age, when Vedic Sanskrit, the ancestor of Sanskrit, was first spoken. This later gave way to Classical Sanskrit, which was used to write many of the great Indian epics, such as the Ramayana. Besides all of this, however, there are a few specific reasons why Sanskrit should be taken seriously:

1. One of the first written records was in Sanskrit

It has been attested that one of the first written records may have been in Sanskrit. It was probably the texts that make of the Rigveda, which is a collection of Hindu hymns that dates back to ancient times. Though there isn't a large body of evidence to support this, but even though Vedic Sanskrit was a purely spoken language, complete memorization in order for proper pronunciation was crucial, so we can safely say that the written accounts we have now were most likely the same as the ones then. These religious and ceremonial texts were extremely important in terms of both religion and philosophy.

2. Sanskrit is the philosophical language for a few religions

Besides its importance to Hinduism, Sanskrit is also a philosophical language used in Jainism, Buddhism, and Sikhism. Jainism is a religion practiced by probably less than 1% of the population of India, and yet Jain literature has had a huge impact on Indian culture and history over the centuries. One of the main languages used to write this literature is Sanskrit. The main language of Buddhism was Prakrits at first, but later Sanskrit was adopted, with some of the most important Buddhist literature being written in Sanskrit. The Guru Granth Sahib, the most important Sikh religious text, is written in a few different languages, one being Sanskrit.

3. It has had a huge influence on other languages

One of the most popular languages in India today, Hindi, is hugely influenced by Sanskrit, and is in fact a register of the Khariboli dialect that has been "Sanskritised". If you take a look at the modern Indo-Aryan languages, you will see that many of them directly borrow grammar and vocabulary from Sanskrit. Beyond those of modern India, other languages in nearby regions have been influenced as well. Austronesian, Sino-Tibetan, and many languages of Southeast Asia show Sanskrit influence as well. Some have said that there are even words in English that were originally Sanskrit words.

The Impact of Social Networking Sites on the Youth

Sachin Agrawal
Assistant Professor
(Department of B.C.A.)

Social Networking sites are termed to as web based services that give an opportunity to individuals to create their own personal profile with the choice of their own list of users and thereby connect with them in an altogether public forum that provides them with features such as chatting, blogging , video calling, mobile connectivity and video/photo sharing. People spend more than usual hours on social networking sites to download pictures, browse through updates seek entertainment and chat around with friends to keep themselves connected to one another. These sites have held an addiction to the youth wherein they find it difficult to concentrate on their work and prefer logging in and jumping across one site to another. Some have derived benefit out of these sites whereas some have become academically challenged by the use of these websites. Individuals have set their own limits as to when and when not to access these websites but we witness very few out of the lot who does not access or make use of these sites at all.

Impact of social networking websites on the education of the youth

The researcher tries to portray, social networking sites such as face book , Twitter etc. are gaining popularity with the pace of time and due to their attractive features the youth of today's generation is fascinated towards them. The study argues against the notion claiming that due to the rapid popularity of social networking sites the youth tends to distract themselves from their studies and professions but on the contrary is also developing friendly and social ties with the world that revolves around them.

Impact of social networking sites on students

The fact that out of all the respondents targeted, nearly 55.4% of the total population from people ranging in the age group 15 to 25 use social networking sites and also states that most of the users from the same age group use these sites as a medium to seek entertainment. It focuses on the fact that most of the youth uses these sites due to influence of their friends and just because their friends have been using and accessing these sites. The technologies and offers of these sites are such that they fascinate and attract the youth and teenage. Determining its popularity, parents and educators have lend an ear to its concern and consideration. These concerns range from youth privacy, safety, time consumption, health issues, psychological well being and academic performance. However it must be finally specified about as to how youth uses social networking sites and must enact communication behavior that should result in their benefit.

Effect of Computer Languages on Young Generation

Pankaj Kumar Gupta
Head
Department of B.C.A.

Computer coding is the universal language of the planet. People who know how to code will be able to communicate across countries and cultures, be innovative, and solve problems more efficiently, with no barriers to impede their success. Learning programming at a young age helps your children solve everyday problems and get set up for a lifetime of opportunities.

1. Educational Benefits

The elementary schools use computers for testing and other activities, but it is a rare school curriculum that includes any computer programming. In many schools across the world started including a computer programming skills segment to the school day. This type of education helps kids to learn the basic inner workings of computers. Kids can feel successful at getting a computer to do what they tell it to do. This foundation can set kids up for a lifetime of successful use and management of the technology in their everyday lives.

2. Computational Thinking

Computational Thinking is the ability to communicate your thoughts in a structured and logical way. This type of thought process is like the step by step instructions that are coded into a computer. It is also the process of thinking up and then solving problems in a methodical way that could be replicated by a machine. Software engineers, computer programmers, and logistics specialists use this method of thinking to solve problems. Computational thinking is a combination of advanced mathematics, algorithm development and logic. The development of computational thinking involves considering a problem and breaking it down into single-action steps. Each of these steps is handled in the most efficient way possible. There is also an element of abstraction in computational thinking, which allows your child to move from a specific solution to a specific problem and generalize it to other situations. The result is a paradigm shift in thinking about how the world works.

3. Creativity, Thinking Fluidity

Children have creative and fluid minds that allow them to think in a more "out of the box" way. The nearly endless ways of coding and solving problems can inspire kids to grow. You can show your child that coding is a type of storytelling. There is a logical beginning, progression, and ending to the story and the program. These skills can set kids up for success in written and oral communications in school and thankfully the introduction of IT basics in primary schools is rightly becoming widespread.

4. Job Opportunities

The current generation of children will need to be literate in technology in order to be competitive in the future job market. Not knowing how to code will be comparable to not knowing how to read. Most jobs require the knowledge of basic IT skills, while even retail and fast food jobs require the use of technology and computers. Coding specialists are well-paid and highly sought-after on the current market, and opportunities for these skilled employees will expand in the future.

The Importance of Mobile Technology in Our Society

Mayank Sharma
Assistant Professor
Department of B.C.A.

Mobile technology is taking off in leaps and bounds. While this technology is relatively new in the big scheme of things, it is certainly not new in anyone's mind; indeed, it truly feels like mobile devices have been around forever. We laugh and gawk at old photos where we see monstrous cell phones, when in reality we thought they were cutting edge a mere 10 years ago.

Mobile technology has changed human history. It allows us to stay connected regardless of our geographical location. The implications of this are huge: not only is it incredibly convenient to be able to make a phone call wherever you are, but it's also crucial to be able to make a phone call when you need to most; namely, during an emergency situation. Because of this, mobile technology has literally saved lives. Besides these obvious implications, there are also more subtle ways by which mobile technology has helped mankind. Consider that mobile devices are commonly used in the medical industry to enhance and simplify how things are run.

We owe a great deal of gratitude to mobile devices. Through phone calls, SMS messaging, mobile Internet browsing and many more avenues, we've been able to stay connected as a society and keep in touch both in times of relaxation and in times of need. Mobile devices have truly touched the lives of millions.

Business strategies have evolved immensely over the years. This has been made possible by the swift integration of various technological tools that have automated tasks and made the business processes simpler and more efficient, thus increasing productivity.

Mobile technology has been one of those trends that have taken the business world by storm. Mobile device penetration has been rapid and monumental. In fact, the number of mobile phone users is estimated to rise to 4.77 billion by 2017. The shift towards mobile has been transforming the economic landscape over the years. Mobile communication and connectivity have been changing the way business communicators create, plan and distribute messages.

Recent developments in the mobile communication technology have generated massive improvements in numerous business domains. Let's take a look at how mobile technology has been driving business communication.

Improved Customer Experience

With the rising importance of mobile devices in customers' lives, businesses are constantly seeking new and improved ways to leverage this trend. A large percentage of consumers perform their searches on mobile devices. Therefore, businesses have started investing in making their websites responsive.

Apart from that, mobile apps have turned out to be the norm nowadays. For example, mobile apps have spawned an entirely new market for retailers. In addition to that, the real estate industry has also implemented this trend by introducing 3D mobile apps. These apps help in conveying the concept and the layout of a property to prospective buyers way before the construction process has even started.

Additionally, customers can convey their concerns and feedback about the products and services easily with the help of mobile technology and expect quick responses to their doubts and queries. Such interactive methods help in maintaining a clear communication channel with the users, thus improving productivity.

HISTORY OF COMPUTER

Pinki Agrawal
B.Ed Ist year

In ancient times when doing calculation was so cumbersome at that time those people were involved in computing the big mathematical problems, then people started to think that why should big calculation be performed with the help of machines so that possibility of errors can be minimize.

ABACUS - Abacus was invented in 1846 and used by Babylonians circa 300 B.C.A. device for counting beads in string or rods was used to calculate intermediate result of mental arithmetic.

John Napier - John Napier invented logarithms tables in 1614. He also invented 'Napier's bones' being used in multiplication.

Blaise Pascal : He invented 'Pas caline Machine' in 1642. This was first mechanical and calculating machine which was able to add and subtract the numbers.

Gott fried Wilhelm von leibniz - He invented 'Reckoning Machine in 1694. It was capable of multiply and division operations. Charles Babbage - In 1822, he made different engine, which was used to calculate polynomial expression. In 1833. he also made Analytical engine, which was used to all type of calculation. Charles Babbage is also known as Father of Computer.

Best Computer Courses for Jobs

(i) Web Designing - Web designing is a great opportunity for those who want to work independently. It consists of learning coding languages like HTML, PHH, Java Script etc.

(ii) VFX and Animation - These courses deals with topics like visual effects, animation, 3D technology, graphics etc.

(iii) Hardware and Networking Courses - Their advertisement keeps appearing on newspaper and TV every now and then. As they promise, these courses guarntee jobs.

(iv) Software and programming language courses- To develop s/w, one must learn programming languages like Java, C++ etc. S/w developers are in much demand in IT companies.

(v) Tally-Tally is an accounting s/w. Tally is trusted by many big companies and the Government to store and transfer financial statements.

(vi) Cyber Security Courses- Many tasks are done online now a days. Tasks like banking, paying bills and shopping but cyber crimes are in creasing day by day.

(vii) Microsoft office and typing courses- This is very basic and simple course. It covers topics like MS word, MS Excel, power point etc. These jobs are not highly paying.

(viii) Diploma in computer science - The course duration is 3 years. The course covers topics like S/W, Hardware, Computer application and programming.

Best course in Computer science-

(i) Full Stack Web Developer
(ii) Mobile Application Developer
(iii) Software Engineer
(iv) Systems Architect
(v) Machine Learning Engineer
(vi) Data Engineer

C.V. RAMAN

Tungveer Singh
M.Sc. I Year
Physics Department

Indian Physicist:-

Sir Chandrasekhara Venkata Raman was an Indian Physicist born in the former Madras Province in India presently the state of Tamil Nadu, who carried out ground-breaking work in the field of light scattering, which earned him the 1930 Nobel prize for physics.

He discovered that light travels in a transparent material. Some of the deflected light travels in a transparent material, some of the deflected light changes wavelength. This phenomenon subsequently known as Raman scattering, results from the Raman effect.

In 1954, India honoured him with its highest civilian award, The Bharat Ratna

Early Education:-

It we talk early education of C.V. Raman's that Raman's father initially taught in a school in Thiruvanaikovil, become a lecturer in Mathematics and Physics in Mrs. A.V. Narsimha Rao College Visakhapatnam in the Indian state of Andhra Pradesh, and later joined presidency college in Madras.

At the early age, Raman moved to the city of Visakhapatnaam and studied at St. Aloysius Anglo- Indian High School.

Raman passed his matriculation examination at the age of 11. He passed his R.A. examination (Equivalent) to today's Intermediate exam, PLIC PDC and +2) with a scholarship at the age of 13.

In 1902 Raman joined Presidency College in Madras where his father was a lecturer in Mathmatics and Physics. In 1904 he passed his Bachelor of Arts Examination of university of Madras. He stood first and won the gold medal in Physics. In 1907 he gained his master of sciences degree with the highest distinctions from university of Madras.

Career:-

In the year 1917, Raman resigned from his government services after he was appointed the first polit professor of Physics at the university of Calcutta. At the same time, he continued doing research at the Indian Association for the cultivation of science (IACS), Calcutta, where he became the Honorary secretary. Raman used to refer to his period as the golden era of his career.

Many students gathered around him at the IACS and the university of Calcutta. In 1926 Prof. Raman established the Indian journal of Physics and he was the first editor.

The second volume of the journal published his famous article. "A new Radiation" reporting the discovery of Raman effect.

Raman spectroscopy came to be based on this phenomenon, and earnest Rutherfood referred to it in his presidential address to the Royal Society congress in 1929. He was conferred a knighthood. and medals and honorary doctorates by various university.

Personal Life of C.V. Raman:)

He was married on May 6, 1907 to Lokasundari Ammal (1892-1980).

They had two sons, Chandrasekhar and

radio-astronomer Radhakrishanan.

Raman was the paternal uncle Subrahmanyam Chandrashekhar who later won the noble Prize in physics (1983) for his discovery of the Chandrashekar limit in 1931 and for his subsequent work on the nuclear reactions necessary for stellar evolution.

Achievements:-

During a voyage to Europe in 1921 Raman noticed the blue colour of glaciers and the mediterranean sea. He was motivated to discover the reason for the blue colour. Raman carried out experiments regarding the scattering of light by water and transparent blocks of ice which explained the phenomenon.

Raman employed monochromatic light from a mercury arc lamp which penetrated transparent material and was allowed to fall on a spectrograph to records its spectrum. He detected lines in the spectrum, which were later called Raman line.

Honours and awards:-

Raman was honoured with a large number of honorary doctorates and memberships of scientific societies.

- He was elected as a fellow of the royal society early in his career (1924) and knighted in 1929.
- In 1930 he was the Nobel prize in physics.
- In 1941 he was awarded the Franklin Medal.
- In 1954 he won awarded the Bharat Ratna
- He was awarded the Lenin Peace Prize in 1957.

Hence that is why:-

India Celebrates National Science day on 28 February of every year to commemorate the discovery of the Raman effect in 1928.

LET NO ONE STEAL YOUR DREAMS

Manu Smrati
B.Com IInd Year

Let no one steal your dreams
Let no one tear apart
The burning of ambition
That fires the drive inside your heart

Let no one steal your dreams
Let no one tell you that you can't
Let no one hold you back
Let no one tell you that you won't

Set your sights and keep them fixed
Set your sights on high
Let no one steal your dreams
Your only limit is the sky

Let no one steal your dreams
Follow your heart
Follow your soul
For only when you follow them
Will you feel truly whole

Set your sights and keep them fixed
Set your sights on high
Let no one steal your dreams
Your only limit is the sky

TRUE HAPPINESS

Srishti
B.Ed. I Year

There was a boy, whose family was very wealthy. One day his father took him on a trip to the country where he aimed to show his son, how poor people live.

So, they arrived to a farm of a very poor family, as he considered. They spent there several days. On their return, the father asked his son, did he like the trip.

"It was great, dad" - the boy replied. "Did you notice how poor people live?" father asked "Yes, I did"-said the boy. The father asked his son to tell in more details about his impressions from their trip."

"Well, we have only one dog, and they have four of them. In our garden there is a pool, while they have a river that has ho end. We have got expensive lanterns, but they have stars above their heads at night. We have the patio, and they have the whole horizon. We have only a small piece of land, while they have the endless fields."

We buy food, but they grow it. We have high fence for protection of our property, and they did not need it, as their friends protect them."

The father was stunned. He could not say a word.

Then the boy added. " Thank you, dad, for letting me see how poor we are."

Happiness is not something ready-made It comes from your own actions.

Happiness, True happiness, is an inner quality. It is a state of mind. If your mind is at peace, you are happy.

If your mind is at peace, but you have nothing else, you can be happy.

If you have everything the world can give-pleasure, possessions power-but lack peace of mind you can never be happy.

LIFE IS AN EXAMINATION

Pushpendra Kumar
M.Sc
(Physics Department)

God is a great examiner
We are all his students
The world is an examination hall
And life is an answer sheet.
The time allotted is three-hours,
The first hour bell rings in childhood,
The Second in youth,
The third in old age.
The bell of the late hour is rung by God,
The examination is over
The copy is snatched
Do not try to cheat,
The examiner will beat.
You must not lose marks by wasting time
And writting nothing.
You must not say that
The paper was lengthy and time is short
If we fail, we come back to the same hall
A new life once more,
And If we pass, we goto heaven
And return no more

MASSAGE TO THE STUDENTS

Pavan Kumar
M.Sc I Year
(Physics Department)

Dear young students,

Emulate these values in the interest of our nation, community family and yourself:.

1. Save water and electric power.
2. Save food materials.
3. Save petrol and other fuels.
4. Avoid over dose entertainment.
5. Avoid narcotic drugs.
6. Save yourself from deadly diseases.
7. Never put off till tomorrow what you can do it today.
8. Work is worship.
9. Respect your elders.
10. Grow more plants and trees in your neighborhood.
11. Be good and do good.
12. Have faith in almighty.
13. Avoid aping the west
14. Keep the order in all your doings.
15. Try till you succeed.
16. Be healthy.
17. Concentrate on your studies.
18. Obey traffic rules.
19. Respect the national flag and Anthem.
20. Respect all the religions equally.

TAKE TIME

Arif Ali
M.Sc I Year
(Physics Department)

Take time to work,
It is price of success.
Take time to think,
It is the source of power.
Take time to pray,
It is the key to revelation.
Take time to play,
It is the secret of youth.
Time taken to read,
It is the source of wisdom.
Time taken to do good,
It is road to happiness.
Time taken to dream,
It is the way to the moon.
Time taken to love,
It is the privileged of God.
Time taken to serve,
It is the purpose of life.
Time taken to laugh,
It is the music of the soul.

Note:- People have the following strength, force power or authority, right in the life,

(i) Money,
(ii) Mind,
(iii) Health
(iv) Time..... etc .....but time time is very precious because time is required to get or build all of these in the proper way.

That's all.,

THE TEACHER

Guarav Kumar
M.Sc I Year
(Physics Department)

The teacher is a lamp,
Who gives us light of knowledge.
The teacher is a flower,
Who gives us the scent of education.
The teacher is a captain,
Who gives us direction of our life ship.
The teacher is a sky,
Who has limitless love for scalers.
The teachers is a mother,
Who equally proves all her children.
The teacher is a doctor,
Who has great patience.
The teacher is like a God,
Who gives new life and new vision.
The teacher is a pillar,
Who supports the building of progress.
The teacher is a gardener
Who cultivates good qualities of students.
Oh! the teacher is a great,
teacher is noble and honourable that's all

MEANING OF LIFE

Mahir
M.Sc. I Year
Physics Department

Life is a challenge	:	Meet and face it
Life is a gift	:	Accept it
Life is a love	:	Enjoy it
Life is an adventure	:	Dare it
Life is a duty	:	Perform it
Life is a game	:	Play it
Life is a mystery	:	Unfold it
Life is a song	:	Sing it
Life is a journey	:	Complete it
Life is a promise	:	Fulfill it
Life is an opportunity	:	Take it and don't lose it
Life is a struggle	:	Fight it
Life is a puzzle	:	Salve it
Life is a goal	:	Achieve it
Life is a lesson	:	Understand it
Life is a story	:	Listen to it
Life is a felling	:	Feel it
Life is a spirt	:	Try to understand it
So life is full of variety	:	Remember and Memorise it.

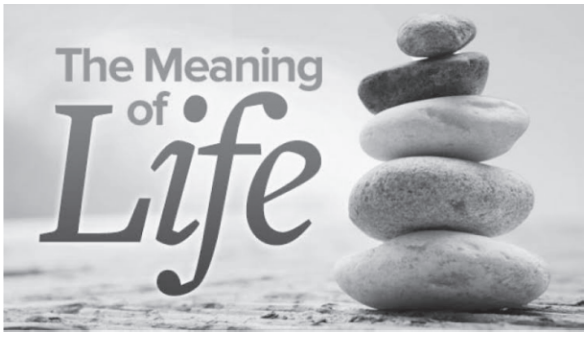

YOU CAN ACHIEVE YOUR GOAL

Aju Chaudhary
B.Sc I Year

No one in world is perfect.
No one in born with special mind,
Self Confidence is one of the facts.
To start like tree in the stramy winds.

If you will try in one time.
You can make it another time.
The spirit of "I can do it."

Should be on your tongue as a rhyme.
Don't worry about your failure in past.
Remember those achievements which come you way lost.
After any failure never feel shy.

Get up and try to get high and high.
there is a morning after every night.
With this thought, try to choose the path that is right.

You should never be Scared of difficult, never fright.
But have the power to fight opportunities are incredible in the world.

To get them just Put a Step Forward.
You should be like bird.
Goes high before reaching upward.

WHAT IS LIFE

Mayuri Bharadwaj
B.Com IInd Year

A flying bird freely in the sky,
said. "Freedom is life".
An animal eating the grass,
said, "Life is like a battle feild."
A lazy man dreaning in sleep.
said, "Life is a bed of Roses."
A youngester enjoying his time in full of measure,
said, "Life is pleasure."
A lover waiting anxiously for his beloved,
said, "Love is life"
A labourer doing his duty.
said, "Life is a duty."
A sadhu is his speech
said, "Life is only a way to reach God."
But I say, "Life is an unsolved mystery."

MY COLLEGE

Imroz
B.Ed I Year
(Physics Department)

My sweet sweet college, I love D.P.B.S. College. It is beautiful and it is fine. It is your and it is mine.

Six days are full of joys, All classes are full of girls saved boys.

Teachers are wise, able and sweet, Friends are jolly, good and neat.

Our principal is great and kind, he has care and love in mind.

My elders, my friends I give a call
My college is the best of all.

YESTERDAY, TODAY & TOMORROW

Manu Smrati
B.Com IInd Year

These are two days in every week about which we should not worry

Two days which should be kept free from fear and apprehension

One of these days is yesterday with its mistakes and cares. Its faults and blunders, its aches and pains yesterday has passed forever beyond our control. All the money in the world cannot bring back yesterday. We cannot undo a single act we performed. We cannot erase a single word we said Yesterday is gone.

The other day we should not worry about is tomorrow with its possible adversities. Its burdens. It large promise and poor performance. Tomorrow is also beyond our immediate control. Tomorrow's sun will rise either in splendor or behind a mask of clouds but it will rise. Until it does, we have no stake in tomorrow, for it is yet unborn.

This just leaves only one day ..... To day.

Any person can fight the battles of just one day. It is only when you and I add the burdens of those two awful eternity's yesterday and tomorrow that we break down.

It is not the experience of today that drives people mad. It is the remorse or bitterness for something which happened yesterday and the dread of what tomorrow may brig. Let us therefore live but one day at a time.

THE ELEPHANT ROPE (BELIEF)

Mansi Garg
B.Ed. II Year

A gentleman was walking through an elephant camp, and he spotted that the elephants were not being kept in eages or held by the use of chains.

All that was holding them back from escaping the camp, was a small piece of rope tied to one of their legs.

As the man gazed upon the elephants, he was completely confused as to why the elephants didnot just use their strength to break the rope and escape the camp. They could easily have done so, but instead, they did not try to at all. Curious and wanting to know the answer, he asked a trainer nearby why the elephants were just standing there and never tried to escape. The trainer replied:-

When they were very young and much smaller we use the same size rope to tie them. As they grew up, they are conditioned to believe they cannot break away. They believe the rope can still hold them, so they never try to break free."

The only reason that the elephants weren't breaking free and escaping from the camp was that over time they adopted the belief that it just wasn't possible.

Moral :- No matter how much the world tries to hold you back, always continue with the belief that what you want to achieve is possible. Believing, you can become successful, is the most important step in actually achieving it.

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति :-

1.	श्री अजय गर्ग	अध्यक्ष
2.	डॉ0 सुधीर कुमार	उपाध्यक्ष
3.	डॉ0 के0 पी0 सिंह	सचिव
4.	श्री गिरीश चन्द्रा	संयुक्त सचिव
5.	श्री के0 पी0 सिंह	कोषाध्यक्ष
6.	श्री सुनील गुप्ता	आन्तरिक लेखा परीक्षक
7.	श्री एस0पी0एस0 तौमर	सदस्य
8.	कमा0 एस0 जे0 सिंह	सदस्य
9.	कु0 मनिका गौड़	सदस्य
10.	डॉ0 यू0 के0 झा	प्राचार्य (पदेन सदस्य)
11.	डॉ0 आर0 के0 अग्रवाल	शिक्षक प्रतिनिधि
12.	श्री पंकज शर्मा	तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि

महाविद्यालय परिवार

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1.	डॉ. यू. के. झा	प्राचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
2.	डॉ. प्रदीप कुमार त्यागी	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
3.	डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
4.	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
5.	श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
6.	डॉ. सीमान्त कुमार दुबे	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
7.	श्री लक्ष्मण सिंह	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
8.	डॉ. विनोद कुमार गोयल	भौतिकी विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.सी.ए. विभाग
2.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
3.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
4.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
5.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
6.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
7.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
8.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
9.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

10.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
11.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
12.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
13.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
14.	श्री सत्य प्रकाश	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
15.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
16.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
17.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

प्राध्यापक (अंशकालिक)

1.	श्री गौरव जैन	अंशकालिक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
2.	श्री सत्यपाल सिंह	अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
3.	श्री चन्द्र प्रकाश	अंशकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
4.	कु. कुशमाण्डे आर्य	अंशकालिक प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग
5.	श्रीमती ममता शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग
6.	श्री ऋषभ वार्ष्णेय	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
7.	श्री ललित कुमार शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
8.	श्री योगेन्द्र कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, गणित विभाग
9.	डॉ. राधा उपाध्याय	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग

शिक्षेणत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री के. के. श्रीवास्तव	पुस्तकालय सहायक
4.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी
5.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
7.	श्री नारायण देव मिश्रा	कार्यालय दफ्तरी
8.	श्री डम्बर सिंह	अर्दली
9.	श्री गजेन्द्र सिंह	गैसमैन, रसायन विज्ञान विभाग
10.	श्री कपूर चन्द्र	चौकीदार

11.	श्रीमती पार्वती	पुस्तकालय परिचारिका
12.	श्री सुनील कुमार निर्मल	प्रयोगशाला परिचर, भौतिकी विभाग
13.	श्री महेश चन्द्र	सेवक, कार्यालय
14.	श्री अमरनाथ राय	प्रयोगशाला परिचर, रसायन विज्ञान विभाग
15.	श्री विजय पाल सिंह	माली
16.	श्री राम अवतार	प्रयोगशाला परिचर, सांख्यिकी विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
2.	श्री सुरेश रावत	सहायक पुस्तकालाध्यक्ष
3.	श्री आशीष कुमार	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री जितेन्द्र कुमार	कनिष्ठ सहायक
5.	श्री प्रमोद कुमार	प्रशासनिक सहायक
6.	श्री चन्द्रपाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
7.	श्री विजय कुमार	दैनिक भोगी सेवक
8.	श्री योगेश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
9.	श्री राम बाबू	दैनिक भोगी सेवक
10.	श्री त्रिलोक चन्द	दैनिक भोगी सेवक
11.	श्री विक्रम सिंह	दैनिक भोगी सेवक
12.	श्री नेत्रपाल सिंह	दैनिक भोगी सेवक
13.	श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक भोगी सेवक
14.	श्री सुबोध कुमार	दैनिक भोगी सेवक
15.	श्री नितिन कुमार	दैनिक भोगी सेवक
16.	श्री साहब सिंह	दैनिक भोगी सेवक
17.	श्री सुन्दर पाल	दैनिक भोगी सेवक
18.	श्री मान सिंह	दैनिक भोगी सेवक
19.	श्री जगदीश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
20.	श्री सोनू कुमार	दैनिक भोगी सेवक
21.	श्री राजीव	दैनिक भोगी सेवक
22.	श्री राजू	दैनिक भोगी सेवक

विभिन्न समितियाँ

प्राचार्य परिषद

1. डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य)
2. डॉ. वी. के. गोयल
3. डॉ. पी. के. त्यागी
4. डॉ. आर. के. अग्रवाल
5. डॉ. चन्द्रावती
6. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
7. श्री लक्ष्मण सिंह
8. श्री पंकज कुमार गुप्ता
9. डॉ. के. सी. गौड़
10. डॉ. भुवनेश कुमार

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सचिन अग्रवाल
3. श्री सुनील कुमार गर्ग
4. श्री दीपक कुमार शर्मा

क्रीड़ा समिति

1. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री मयंक शर्मा
5. श्री गुरूदत्त शर्मा
6. डॉ. विशाल शर्मा

अनुशासन समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (मुख्यानुशासक)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री यजवेन्द्र कुमार
5. डा. सीमान्त कुमार दुबे
6. डॉ. विशाल शर्मा
7. श्री मयंक शर्मा
8. श्री के. के. श्रीवास्तव

एंटी रैगिंग समिति

1. श्री यजवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
3. डॉ. वीरेन्द्र कुमार
4. डॉ. तरूण बाबू
5. डॉ. राजीव गोयल

आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (समन्वयक)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री पंकज कुमार गुप्ता
6. डॉ. भुवनेश कुमार
7. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
8. श्री श्याम बिहारी श्रीवास्तव (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
9. डॉ. आलोक गोविल (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
10. श्री सुनील कुमार गर्ग

छात्र कल्याण समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. डॉ. के. सी. गौड़
5. श्री सत्य प्रकाश

शिकायत-निवारण प्रकोष्ठ

1. श्री यजवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. श्री पंकज कुमार गुप्ता
3. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

भवन निर्माण समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
4. श्री सुनील कुमार गर्ग

महाविद्यालय प्रकाशन समिति

1. डॉ. वी. के. गोयल (प्रभारी)
2. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
3. श्री सचिन अग्रवाल
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह

चिकित्सा समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. घनेन्द्र बंसल
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
5. श्री देवस्वरूप गौतम

यू.जी.सी. अनुदान योजना समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री लक्ष्मण सिंह
6. श्री के. के. श्रीवास्तव

विकास कोष समिति

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

महिला संरक्षण समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

पुस्तकालय समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. श्री के. के. श्रीवास्तव

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. श्री सचिन अग्रवाल
5. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
6. श्री कुशमाण्डे आर्य
7. डॉ. राधा उपाध्याय

अन्य विभागीय प्रभारी

1.	वि. वि. परीक्षा, गृह परीक्षा, विद्युत व्यवस्था एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र	डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
2.	नोडल अधिकारी, दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3.	राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)	श्री यजवेन्द्र कुमार
4.	राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)	डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
5.	व्यवसाय परामर्श इकाई एवं जन-सूचना अधिकारी	श्री लक्ष्मण सिंह

++++++++++++++++

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

अवकाश तालिका वर्ष 2020

कार्यालय जिलाधिकारी, जनपद-मेरठ के द्वारा चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ कार्यालय द्वारा वर्ष 2020 में प्रत्येक रविवार एवं माह के द्वितीय शनिवार के अतिरिक्त अवकाश तालिका :–

क्र०सं०	त्यौहारों के नाम	अवधि	ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार तिथि	सप्ताह के दिन
01	गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती	01	02 जनवरी, 2020	गुरूवार
02	गणतन्त्र दिवस	01	26 जनवरी, 2020	रविवार
03	बसंत पंचमी	01	30 जनवरी, 2020	गुरूवार
04	महाशिवरात्रि	01	21 फरवरी, 2020	शुक्रवार
05	होलिका दहन/*मोहम्मद हजरत अली का जन्मदिवस	01	09 मार्च, 2020	सोमवार
06	होली	01	10 मार्च, 2020	मंगलवार
07	रामनवमी	01	02 अप्रैल, 2020	गुरूवार
08	महावीर जयन्ती	01	06 अप्रैल, 2020	सोमवार
09	गुड फ्राइडे	01	10 अप्रैल, 2020	शुक्रवार
10	डॉ० भीमराव अम्बेडकर जन्म दिवस	01	14 अप्रैल, 2020	मंगलवार
11	बुद्धपूर्णिमा	01	07 मई, 2020	गुरूवार
12	क्रान्ति दिवस	01	10 मई, 2020	रविवार
13	*ईद-उल-फितर	01	25 मई, 2020	सोमवार
14	विश्वविद्यालय स्थापना दिवस	01	01 जुलाई, 2020	बुधवार
15	श्रावण शिवरात्रि पर्व (मेला पूरा महादेव)	01	19 जुलाई, 2020	रविवार
16	*ईदुज्जुहा (बकरीद)	01	01 अगस्त, 2020	शनिवार
17	रक्षा बंधन	01	03 अगस्त, 2020	सोमवार
18	जन्माष्टमी	01	12 अगस्त, 2020	बुधवार
19	स्वतन्त्रता दिवस	01	15 अगस्त, 2020	शनिवार
20	*मोहर्रम	01	30 अगस्त, 2020	रविवार
21	महात्मा गाँधी जयन्ती	01	02 अक्टूबर, 2020	शुक्रवार
22	दशहरा (महानवमी)	01	24 अक्टूबर, 2020	शनिवार
23	दशहरा (विजय दशमी)	01	25 अक्टूबर, 2020	रविवार
24	*ईद-ए-मिलाद/बारायफात	01	30 अक्टूबर, 2020	शुक्रवार
25	दीपावली	01	14 नवम्बर, 2020	शनिवार
26	गोवर्द्धन पूजा	01	15 नवम्बर, 2020	रविवार
27	भैया दूज/चित्रगुप्त जयन्ती	01	16 नवम्बर, 2020	सोमवार
28	गुरू नानक जयन्ती/कार्तिक पूर्णिमा	01	30 नवम्बर, 2020	सोमवार
29	गुरू तेग बहादुर शहीद दिवस	01	19 दिसम्बर, 2020	शनिवार
30	चौधरी चरण सिंह जयन्ती	01	23 दिसम्बर, 2020	बुधवार
31	क्रिसमस डे	01	25 दिसम्बर, 2020	शुक्रवार

*यह त्यौहार स्थानीय चन्द्र दर्शन के आधार पर मनाये जायेंगे और जिला मजिस्ट्रेट इन अवकाशों की तारीख यदि आवश्यकता पडे तो पुनः निर्दिष्ट कर सकते हैं।

निर्बन्धित अवकाश

निम्नलिखित निर्बन्धित अवकाश में से कर्मचारी कोई भी दो अवकाश चुन सकता है। प्रत्येक कार्यालय अधीक्षक स्वयं अपने कार्यालय में रिकॉर्ड रखेंगे कि कर्मचारीगण इन अवकाशों में से कोई भी दो से अधिक अवकाश न ले सकें।

क्र०सं०	त्यौहारों के नाम	अवधि	ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार तिथि	सप्ताह के दिन
01	नव वर्ष दिवस	01	01 जनवरी, 2020	बुधवार
02	मकर संक्रान्ति	01	15 जनवरी, 2020	बुधवार
03	जननायक कपूरी ठाकुर जन्म दिवस	01	24 जनवरी, 2020	शुक्रवार
04	बसंत पंचमी	01	30 जनवरी, 2020	गुरूवार
05	संत रविदास जयन्ती	01	09 फरवरी, 2020	रविवार
06	*हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी गरीब नवाज रह० का उर्स	01	03 मार्च, 2020	मंगलवार
07	होली	01	11 मार्च, 2020	बुधवार
08	वेटी चन्द	01	25 मार्च, 2020	बुधवार
09	महर्षि कश्यप एवं महाराजा निषाद राज गुहा जयन्ती	01	05 अप्रैल, 2020	रविवार
10	*शब-ए-बारात	01	09 अप्रैल, 2020	गुरूवार
11	ईस्टर सैटर-डे	01	11 अप्रैल, 2020	शनिवार
12	ईस्टर मन्डे	01	13 अप्रैल, 2020	सोमवार
13	चन्द्रशेखर जयन्ती	01	17 अप्रैल, 2020	शुक्रवार
14	महर्षि परशुराम जयन्ती	01	25 अप्रैल, 2020	शनिवार
15	लोकनायक महाराणा प्रताप जयन्ती	01	09 मई, 2020	शनिवार
16	*जमात-उल-विदा (अलविदा) रमजान का अन्तिम शुक्रवार	01	22 मई, 2020	शुक्रवार
17	*ईद-उल-फितर	01	26 मई, 2020	मंगलवार
18	*ईदुज्जुहा (बकरीद)	01	02 अगस्त, 2020	रविवार
19	*मोहर्रम/अनन्त चतुर्दशी	01	31 अगस्त, 2020	सोमवार
20	विश्वकर्मा पूजा	01	17 सितम्बर, 2020	गुरूवार
21	* चेहल्लुम	01	08 अक्टूबर, 2020	गुरूवार
22	महाराजा अग्रसैन जयन्ती	01	17 अक्टूबर, 2020	शनिवार
23	दशहरा (महा अष्टमी)	01	24 अक्टूबर, 2020	शनिवार
24	महर्षि बाल्मीकि जयन्ती/सरदार बल्लभ भाई पटेल एवं आचार्य नरेन्द्र देव जयन्ती	01	31 अक्टूबर, 2020	शनिवार
25	नरक चतुर्दशी	01	13 नवम्बर, 2020	शुक्रवार
26	वीरांगना ऊदा देवी शहीद दिवस	01	16 नवम्बर, 2020	सोमवार
27	छठ पूजा पर्व	01	20 नवम्बर, 2020	शुक्रवार
28	क्रिसमस ईव	01	24 दिसम्बर, 2020	गुरूवार

* यह त्यौहार स्थानीय चन्द्र दर्शन के आधार पर मनाये जायेंगे और जिला मजिस्ट्रेट इन अवकाशों की तारीख यदि आवश्यकता पड़े तो पुनः निर्दिष्ट कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

पत्रांक : सामान्य-8/1281

दिनांक : 31/12/2019

कुलसचिव

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित :